यूनेस्को के

सांस्कृतिक उद्योगों तथा कॉपीराइट नीतियों एवं

भागीदारियों संबंधी कार्यक्रम

के अंतर्गत

भारत के सांस्कृतिक मानचित्रण

पर रिपोर्ट

अनुबंध सं. 3240067111 / एफसी00588

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र

जनपथ, नई दिल्ली - 110001

www.ignca.gov.in

विषय-सूची

		पृष्ठ सं.
	आभार	
1.	पृष्ठभूमि	
2.	कार्य निर्धारण	
3.	प्रयुक्त पद्धतियाँ	
4.	इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रयास और विश्लेषण	
5.	भारत का सांस्कृतिक मानचित्र	
6.	सिफ़ारिशें	
7.	आंकड़ा शीट	
	क. कला	
	ख. शिल्प	
	ग. नृत्य	
	घ. संगीत	
	ड. रीति-रिवाज	
	च. त्योहार	
	छ. अन्य	
8.	विशेषज्ञ	
9.	आंकड़ा एकत्रण प्रारूप	

आभार

इस परियोजना को सफलतापूर्वक पूरा करने का श्रेय जनपद संपदा प्रभाग के अधिकारियों नामत: प्रोफेसर बी. के. रॉयबर्मन, डॉ. मौली कौशल, डॉ. बी. एल. मल्ला, कैलाश कुमार मिश्रा और श्री राजीब दास से प्राप्त असाधारण सहयोग को जाता है।

यह परियोजना प्रोफेसर एस. सेत्तार, श्री वीरेन्द्र बांगरू, प्रोफेसर ए. के. दास, डॉ. असीस के. चक्रवर्ती, डॉ. गौतम चैटर्जी, सुश्री मेखलामणि, श्री राहस मोहंती और श्री तोशखानी के सहयोग तथा समर्थन के बिना पूरी नहीं की जा सकती थी।

इस पूरी परियोजना के दौरान डॉ. के. के. चक्रवर्ती, सदस्य-सचिव (इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र) और प्रोफेसर इन्द्र नाथ चौधरी, शैक्षणिक निदेशक (इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र) का मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त हुआ।

मैं इस परियोजना को सफलतापूर्वक पूरा करने में सांस्कृतिक सूचना प्रयोगशाला के प्रत्येक सदस्य से प्राप्त सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

1. पृष्ठभूमि

यूनेस्को दस्तावेज़ के अनुसार सांस्कृतिक उद्योग - किताबों, श्रव्य-दृश्य सामग्री तथा मल्टीमीडिया के माध्यम से रोजगार, आय तथा राजस्व सृजित करते हैं और साथ ही स्थानीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने के लिए एक केंद्रीय माध्यम हैं।

इन्हीं विचारों के साथ वर्ष 2001 में शुरू किए गए'ग्लोबल एलाएंस फॉर कल्चरल डायवर्सिटी' में अब हर क्षेत्र से कई हजार साथी तथा सैकड़ों भागीदार हैं तथा जो सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र तथा नागरिक समाज से संबद्ध हैं। विकासशील देशों तथा परिवर्तनकाल से गुजर रहे देशों में अन्य संगठन जैसे यूएनसीटीएडी, डब्ल्यूआईपीओ और आईएलओ व्यावहारिक लघु एवं मध्यम आकार के सांस्कृतिक उद्यमों के विकास को प्रोत्साहित करने के प्रयासों में प्रतिभागिता कर रहे हैं। साथ ही सांस्कृतिक वस्तुओं तथा सेवाओं में साहित्यिक एवं कलात्मक रचनाओं की उपलब्धता सुनिश्चित कराई जा रही है, जिनका संरक्षण कॉपीराइट द्वारा सुरक्षित करते हुए पूरे विश्व में पारंपरिक तथा इलेक्ट्रोनिक रूप में प्रचारित एवं प्रसारित की जाती है। वर्तमान में चोरी और ई चोरी के बढ़ने से लेखकों तथा कलाकारों के अधिकारों की पहचान भी खतरे में आ गयी है। साइबरस्पेस के क्षेत्र में यूनेस्को की सांविधिक बाध्यताओं को ध्यान में रखते हुए इसके साथ अनुकूलन के लिए जागरूकता-सृजन, प्रशिक्षण तथा राष्ट्रीय कॉपीराइट कानून को अद्यतन करने की तत्काल आवश्यकता है।

नई अर्थव्यवस्था सूचना पर आधारित है, जहाँ रचनात्मकता, नवाचार तथा ज्ञान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आर्थिक विकास की नीतियों में कला एवं संस्कृति को प्राय: कम महत्व दिया जाता है और इन्हें अर्थव्यवस्था में धन के अपव्यय के रूप में देखा जाता है। पूरे विश्व में सांस्कृतिक उद्योगों ने इस पुरानी सोच को गलत सिद्ध किया है। सांस्कृतिक उद्योगों के उत्पादों का उपभोत पूरे विश्व लाखों लोगों द्वारा किया जाता है। भारत में भी परिस्थिति बहुत अलग नहीं है जहाँ कुछ चयनित कलाकृतियाँ बहुत ऊंचे मूल्य पर उपलब्ध हैं।

वैश्विक मांग के बावजूद शिल्पकारों और समुदायों की बाजार पहुँच सीमित है। दूरस्थ स्थानों पर कुशल कारीगर (विशेषज्ञ) मुश्किल से निर्वाह करने की स्थिति में हैं और वे अपना पारंपरिक कार्य छोड़ने के लिए मजबूर हो रहे हैं। इसे के साथ जीवन शैली में तेजी से बदलाव होने, पुराना होने और उपेक्षा के कारण ज्ञान और बुद्धिमत्ता का वह विशाल भंडार, जिसने समुदाय का पालनपोषण किया एवं उसे विकसित किया वह तेजी से लुप्त हो रहा है। इन परंपराओं को संरक्षित करने तथा पुनर्जीवित करने और इन्हें हमारे आर्थिक विकास का अभिन्न हिस्सा बनाने की तत्काल आवश्यकता है। इस परियोजना का उद्देश्य भारत में सांस्कृतिक उद्योगों के संरक्षण तथा प्रोत्साहन हेतु कार्यनीतियों, नीतियों और कार्य योजनाके लिए एक संभावना रिपोर्ट उपलब्ध कराना है।

2. कार्य निर्धारण

यूनेस्को के प्रमुख कार्यक्रम IV और सांस्कृतिक उद्योगों तथा कॉपीराइट नीतियों एवं भागीदारियों संबंधी प्रमुख कार्य योजना IV.3.2.1 के अंतर्गत अनुबंधकर्ता के कार्य निम्न हैं:

1. भारत में ऐसे व्यवहार्य सांस्कृतिक उद्योगों के आंकड़े एकत्रित करेगा, उनका मानचित्रण करेगा और विश्लेषण उपलब्ध कराएगा जिन्हें संरक्षण तथा प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

मानचित्रित किए जाने वाले सांस्कृतिक उद्योगों में कला, नृत्य, शिल्प तथा संगीत की सभी व्यवहार्य विधाएँ सम्मिलित होनी चाहिए।

इस क्रियाकलाप में उन रीति-रिवाजों/त्योहारों, सांस्कृतिक स्थानों (जैसे हाट, शोभायात्राओं/सांस्कृतिक एवं धार्मिक रीतिरिवाजों//संस्कारों आदि के लिए स्थान) के मानचित्रण को भी सम्मिलित किया जाएगा जिन्हें सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रथाओं का उद्गम माना जाता है।

चयन के मानदंडों में अवसरों के समान वितरण और पूरे देश में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों और औपचारिक तथा अनौपचारिक - दोनों क्षेत्रों में न्यूनतम आय वाले समुदायों के लिए राजस्व को उचित महत्व दिया जाना चाहिए।

आंकड़ों में निम्नलिखित को सम्मिलित किया जाना चाहिए:

1. व्यवसायियों/कलाकारों/निर्माताओं/शिल्पकारों/नर्तकों/संगीतकारों के फोटो और चित्रों सहित उनकी उपाधि, नाम, पता, संपर्क नंबर।

2. उपर्युक्त उद्योग के संरक्षण तथा प्रोत्साहन हेतु कार्यनीतियों, नीतियों तथा कार्य योजनाओं के ज्ञान-आधारित विस्तार को सक्षम बनाने के लिए प्रत्येक मानचित्रित आंकड़े के अंतर्गत प्रत्यक्ष सामाजिक एवं आर्थिक लाभों का एक आकलन।

3. प्रयुक्त पद्धतियाँ

1. दृश्य कला, प्रदर्शन कला, पारंपरिक कला एवं शिल्प, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं रिवाजों संबंधी अभिव्यक्तियों, मानव एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में ज्ञान पद्धतियों के संबंध में आंकड़े एकत्रित किए गए। आंकड़ों के एकत्रण की पद्धति में *स्वस्थाने* और *दूरस्थ* दोनों प्रयासों को ध्यान में रखा गया।

2. आंकड़ों के एकत्रण के लिए प्रारूप विषय के विशेषज्ञों (मुख्यत: कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में कार्यरत सामाजिक मानव विज्ञानी और कला इतिहासकार) के साथ परामर्श से तैयार किया गया है। संदर्भ के लिए प्रारूप संलग्न है।

3. आंकड़े निम्नलिखित सहित विभिन्न स्रोतों से एकत्रित किए गए हैं,

(i) संस्थाओं और व्यक्तियों (अनुसंधान एवं सांस्कृतिक सूचना केंद्र, राष्ट्रीय एवं राज्य अकादमियाँ, भारत में स्थित विदेशी संस्थाएं, निजी व्यावसायिक उद्यम, ग्रामीण/शहरी मामलों तथा विकास के मुद्दों से संबंधित गैर-सरकारी संगठन, सरकारी विभाग, विश्वविद्यालय के विभाग और फील्ड में कार्यरत विशेषज्ञ) के साथ नेटवर्किंग के माध्यम से पहले से उपलब्ध सामग्री को सूचीबद्ध एवं संश्लेषित करके।

(ii) विषय विशेषज्ञों के फील्ड सर्वेक्षण से कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, पूर्वोत्तर राज्यों, जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल और ओडिशा आदि में आंकड़े एकत्रित किए गए।

(iii) संगत सूचना एकत्रित करने के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र बैंगलोर (8 अगस्त, 2005) और नई दिल्ली कार्यालय (2 सितंबर, 2005) में कार्यशालाएँ आयोजित की गई।

(iv) इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और अन्य संस्थाओं में पहले से उपलब्ध सामग्री का संश्लेषण प्रक्रियाधीन है।

(v) राष्ट्रीय निवासी वर्गीकरण (1968, 1991) और भाषाओं के संबंध में जनगणना के आंकड़े

4. एकत्रित किए गए आंकड़ों का विश्लेषण तैयार कर लिया गया है।

5. भारत में सांस्कृतिक उद्योगों के संरक्षण तथा प्रोत्साहन हेतु कार्यनीतियों, नीतियों तथा कार्य योजना के लिए सिफ़ारिशें प्रस्तुत कर दी गई हैं।

1. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा उठाए गए कदम और विश्लेषण

भारत कई मायनों में एक समृद्ध देश है। यह एक ओर अपने पारंपरिक ज्ञान को अक्षुष्ण बनाए रखे हुए है और दूसरी ओर नवाचार, अन्वेषण, खोज, तथा अनुसंधान एवं वैज्ञानिक परीक्षण के साथ आगे बढ़ रहा है। यह एक ऐसा देश है जहां आकाश में हमें ऊंचाई पर उड़ते हुए जहाज दिखते हैं, इस देश के अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में पहुँच रहे हैं और इसीके साथ यहाँ पर बैलगाड़ियों और पशु चालित गाड़ियों का भी उनके पारंपरिक रूप में प्रयोग किया जा रहा है। यह ऐसा देश है जहां विभिन्न प्रकार की उपयोगी तथा रचनात्मक कलाओं में लगभग 169,00000 शिल्पकार अपनी प्रतिभाओं के द्वारा जुड़े हुए हैं और अपनी रचनात्मकता तथा उत्पादन के आधार पर जीवनयापन कर रहे हैं। भारत एक ऐसा देश है जहाँ एक कलाकार का सम्मान साहित्य अथवा वेद अथवा तत्वमीमांसा अथवा दर्शन अथवा विज्ञान के क्षेत्र में सर्वाधिक ज्ञानी विद्वान के रूप में किया जाता है। उदाहरण के लिए पूर्वी भारत के कई हिस्सों में पारंपरिक कुम्हारों को पंडित कहा जाता है। वे अपनी उपाधि के रूप में पंडित का प्रयोग करते हैं और उनकी रचनात्मकता को रीति-रिवाजों तथा अन्य अवसरों पर ब्राहमणों के समान मान्यता दी जाती है जो विवाह, जनेऊधारण उत्सव, विवाह समारोह, मुंडन उत्सव, शिक्षा आरंभ संस्कार आदि से संबंधित अनुष्ठानों को पूरा करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। उनका सम्मान यही पर समाप्त नहीं होता बल्कि यह और भी आगे तक है। भारत के अधिकतर सांस्कृतिक तथा भौगोलिक क्षेत्रों/हिस्सों में कुम्हार, नाई और अन्य जैसे शिल्प समुदाय को जितना पारिश्रमिक एवं सम्मान प्राप्त हो रहा है वह ब्राहमणों के हिस्से का लगभग 40 प्रतिशत है। यह लोगों और उनकी रचनात्मकता के बीच सामंजस्य का एक अद्भुत उदाहरण है। मिथिला (बिहार) की महिलाएं, जो अब विश्व में अपनी असाधारण मैथिला अथवा मधुबनी चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध हैं, अपनी चित्रकारी अथवा ब्रश से डिजाइन बनाने की कला को लेखन की कला मानती हैं। जब भी किसी मिथिला चित्रकार से लोक चित्रकला के बारे में कुछ कहने के लिए कहा जाता है तो वह कहती है कि वह *कोहबर घर* (दुल्हन का कक्ष) लिख रही है। पुरातन संस्कृत परंपरा में लाक्षणिक रूप से एक शिल्पकार अथवा एक कलाकार की तुलना हमेशा भगवान से की गई है। हिन्दू धर्म में विष्णु के हजारों नाम हैं जिनमें से कई नाम कलाकृतियों से संबंधित हैं। इस्लाम में अल्लाह के सौ नामों में से एक नाम है कलाकार *मुसव्वर*। संस्कृत शब्द *कला* का अर्थ है दिव्य गुण, जो दैनिक जीवन का हिस्सा हैं, यह एक वैश्विक दृष्टिकोण प्रतिबिंबित करता है। ललित कला और सजावटी कला, मुक्त कला अथवा सेवा के अंतर्गत सृजित कला के बीच कोई अंतर नहीं किया गया है। अठारह अथवा अधिक पेशेवर कलाओं (*शिल्प*) और चौंसठ व्यावसायिक कलाओं (कला) में सभी प्रकार के कौशल संबंधी क्रियाकलापों को सम्मिलित किया गया है। एक चित्रकार और मूर्तिकार के बीच कोई अंतर नहीं है। दोनों को *शिल्पी* अथवा *कारीगर* के नाम से जाना जाता है। *शिल्प* शब्द *असवाल्याना स्रोतसूत्र* में उत्सव-संबंधी कार्य का वर्णन करता है, और इस अर्थ में यह *करू* के करीब है, जो वैदिक संदर्भ में निर्माण के देवता विश्वकर्मा के लिए प्रयुक्त होता है, जिन्हें *धातुकर्मरा* के रूप में उल्लिखित किया गया है, जहाँ केवल *कर्मरा* का अर्थ कारीगरों तथा शिल्पकारों से है (ऋग-वेद X.72.2;*अथर्व-वेद*III 5-6; मनु IV 215)। विश्वकर्मा द्वारा *धातु,* "कच्ची सामग्री" से चीजें बनाने का उल्लेख किया गया है, जिसे *संघमना* कहा जाता है (ऋग-वेद X 72.2)।

भारत के एक 13वीं सदी के सूफी दार्शनिक और कवि अमीर खुसरो एक बार ईरान गए। ईरान में उन्हें अपना परिचय देने के लिए कहा गया। और उनका जवाब अद्भुत था: **"आप मुझे अपना परिचय देने के लिए क्यों कह रहे हैं! मैं भारत की आवाज़ हूँ/भारत को दोहराता हूँ?"** उन्होंने उत्तर दिया।

एक बार मोहम्मद गौरी ने भारतीयों के बेहतरीन शिल्प कौशल की प्रशंसा में कहा था: मैंने सुना है कि लोगों का एक ऐसा देश है जहाँ पर्वत सोने के बने हैं, कृषि योग्य भूमि *मखमल* की बनी है और इस भूमि के बच्चे हीरे से बनी खिलौने वाली गेंद से खेलते हैं।"

इसी प्रकार काशी की बुनाई का उल्लेख भारत के पुराने तथा पवित्र ग्रन्थों में प्राप्त होता है। वेदों में काशी के वस्त्रों का उल्लेख है। यह कहा जाता है कि गौतम बुद्ध के *महापरिनिर्वाण* के बाद उनके शरीर को *काशी वस्त्र* (अथवा कपड़े) में लपेटा गया था।

एक प्रश्न अभी भी अनसुलझा है और अनुत्तरित है। भारत में शिल्पकारों की स्थिति कैसी है? इस प्रश्न के अंत में एक बड़ा और गंभीर प्रश्न चिह्न है। भारत निश्चित तौर पर एक विशाल देश है। यह अपनी विविधता तथा जातीय विशिष्टता के कारण भी बड़ा है। यहाँ 3000 से अधिक जातियाँ तथा 432 से अधिक जनजातीय समुदाय, हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, सिख, जैन, बुद्ध और पारसी धर्म को मानने वाले लोग सदियों से साथ रह रहे हैं। भारत के नागरिकों द्वारा 1650 से अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं। भारत के लोगों में समरसता उल्लेखनीय है।

भारत के आयोजनाकार और नीति निर्माता इस देश की विभिन्न समस्याओं तथा चिंताओं का समाधान कर रहे हैं। वे शिल्पकारों और शिल्पकारिता की आवश्यकताओं की ओर भी ध्यान दे रहे हैं परंतु संभवत: यह मुद्दा इतना बड़ा और जटिल है कि इस मुद्दे को छुआ ही नहीं गया है। भारत के अधिकतर राज्यों में शिल्पकारों और उनके शिल्प की समस्याओं के समाधान के लिए शिल्प बोर्ड हैं। ये बोर्ड बाजार संपर्क जोड़ कर, उद्यम कौशल,शिल्प *मेले* और हाट/*बाजार* का आयोजन करके, शिल्पकारों को उनके उत्पादों का निर्यात करने में सहायता करके, शिल्पकारों को राज्य के सर्वश्रेष्ठ शिल्पकार के रूप में सम्मानित करके, छात्रवृत्ति प्रदान करके, आदि प्रयासों से समाप्त हो रहे शिल्प कौशल को बढ़ावा देने के कार्य में भी लगे हैं। परंतु हमें एक बात नहीं भूलनी चाहिए कि सभी 169,00000शिल्पकारों और उनके शिल्प की आवश्यकता को पूरा करना एक सरल कार्य नहीं है। इसके लिए सभी वर्गों के लोगों की भागीदारी की आवश्यकता है; योजनाकार, नीति निर्माता, प्रशासक, तकनीशियन, राजनेता, तकनीकी विशेषज्ञ, कला प्रेमी, स्वयं शिल्पकार और अंतिम परंतु महत्वपूर्ण समुदाय का प्रत्येक सदस्य।

कला की एक प्रमुख संस्था के रूप में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र भारत में लोक, जनजातीय, मौखिक, श्रव्य कलाओं के विभिन्न आयामों पर एकीकृत रूप से कार्य कर रहा है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की एक पूर्णतया विकसित शाखा है - जनपद-संपदा प्रभाग - जो पूर्णतया भारत के सभी प्रकार के ग्रामीण तथा जनजातीय क्षेत्रों की रचनात्मकता का अध्ययन करने के लिए समर्पित है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र हिमाचल प्रदेश के *चंबा रूमल*; लखनऊ (उत्तर प्रदेश) के *चिकन* कार्य; मिथिला (बिहार) की *मिथिला चित्रकारी*; पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के *कांथा*;छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और झारखंड के मिट्टी के बर्तनों और लोहे के

काम; वाराणसी (उत्तर प्रदेश) की बुनाई;पंजाब की *फुलकारी*; नीलगिरि पहाड़ियों (तमिलनाडु) की टोडा शॉल, राजस्थान की *फड़* चित्रकारी; कच्छ, गुजरात के रेवाड़ी समुदाय के सुई-धागे के काम और हिमाचल प्रदेश के गड्डी जनजाति के लोगों के शिल्प पर काम कर चुका है। ऐसे कार्य इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को भारत में शिल्प तथा शिल्पकारों की पहचान के कार्य में सक्षम बनाते हैं।

आधुनिक विकास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के दबाव, वंचित समुदायों के लोगों को मुख्य धारा में लाने के लिए सरकार की नीतियाँ, भौतिक समृद्धि तथा संचार सुविधाएं बहुत ही तेजी से पारंपरिक क्षेत्रों में अतिक्रमण कर रही हैं और उन सभी सीमाओं को मिटा रही हैं जो कभी उनके संरक्षण में सहायक थीं। जनजातियाँ, अल्पसंख्यक समुदाय और पारंपरिक रूप से अलग-थलग समुदाय जीवन की मुख्य धारा में प्रवेश करने का प्रयास कर रहे हैं, तथापि तकनीक-केन्द्रित विकास को तेज करने की प्रक्रिया में कई कलाकार हमारी वर्षों पुरानी संस्थाओं के बुनियादी ढांचे - उनके देशी शिल्प तथा शिल्पकारिता के सार तथा सुंदरता को खो चुके हैं अथवा तेजी से खो रहे हैं। इस आक्रमण का सामना करना संभव होगा अथवा नहीं, ये समृद्ध सांस्कृतिक परंपराएँ तथा प्रथाएँ हमारी नजरों से ओझल हो जाएँ उससे पहले इनकी याद को संरक्षित करना निश्चित रूप से संभव होना चाहिए। इस संदर्भ में यूनेस्को के प्रयास प्रशंसनीय हैं।

तथापि हम यह भी समझते हैं कि भारत जैसे देश में जहाँ 169,00000शिल्पकार विभिन्न प्रचलित, जीवंत, उपयोगी, सजावटी, समाप्त हो रहे तथा लुप्त हो रहे शिल्प कौशल के माध्यम से अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं, वहाँ एक लघु अवधि में सभी स्वरूपों तथा शिल्पकारों को इंगित करना तथा चिह्नित करना एक अत्यंत कठिन कार्य है। इस प्रकार की परियोजना के लिए निश्चित तौर पर काफी लंबा समय, बड़ी मात्रा में वित्तीय सहायता, विशेषज्ञों के रूप में भारतीय शिल्प के समर्पित विद्वानों तथा विशेषज्ञों के एक समूह, युवा एवं समर्पित शोध सहायकों, फोटोग्राफरों और बहुत से तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्य बल की आवश्यकता है। उपलब्ध संसाधनों और विशेषज्ञों से भारत के असम, मणिपुर, बिहार, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और नागालैंड राज्यों को सम्मिलित करते हुए भारत की प्रमुख शिल्प कलाओं और शिल्पकारों को चिह्नित करने का एक प्रयास किया गया है।

सभी दुर्लभ, तेजी से समाप्त हो रही कला विधाओं के संरक्षण तथा प्रोत्साहन के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा उठाए गए सभी क़दमों के विषय में शैक्षणिक समुदाय, शिल्पकारों, कलाकारों, भारतीय कलाओं के स्वयंसेवकों, सामाजिक एनिमेटरों, आयोजकों, नीति निर्माताओं और सामान्य व्यक्तियों को भली-भांति जानकारी है। सबसे पहले केंद्र उन परंपराओं को चिह्नित करने में रुचि रखता है जो खतरे में हैं; उसके बाद यह उन समृद्ध प्रथाओं तथा परंपराओं पर ध्यान केन्द्रित करने में रुचि रखता है जिन पर अब तक बहुत कम ध्यान दिया गया है। ये धार्मिक अथवा सामाजिक, आर्थिक, पुरातात्विक, कला-ऐतिहासिक परंपराओं से संबंधित हो सकते हैं। ये प्रमुख अथवा गौण परंपराओं, सामाजिक समूहों, सामान्य अथवा महत्वपूर्ण परंपराओं, अल्पसंख्यकों अथवा बहुसंख्यकों की प्रथाओं तथा पद्धतियों से संबंधित हो सकते हैं। ये शिल्प अथवा खेल से संबंधित हो सकते हैं। ऐसे कई मुद्दों में से निम्नलिखित पर विशेष रूप से ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है:

1. प्रमुख परंपराएँ - वेदिक और शास्त्रीय (ललित कलाएं)।

2. गैर-प्रमुख परंपराएँ - लोक परंपराएँ, लोक नाटक, लुप्त हो रही कलाएं, सामाजिक-धार्मिक परंपराएँ (सूफी, वीरशैव आदि)

3. प्रकृति और पर्यावरण से संबंधित पवित्र स्थान और/अथवा रिवाज।

4. लुप्त हो रही पांडुलिपियाँ और भाषाएँ।

5. रीति-रिवाज संबंधी कलाएं।

6. मौखिक परंपराएँ - कथा कालक्षेप, लोक गीत/ और प्रस्तुतियाँ आदि।

7. लुप्त हो रहे खेल

8. लैंगिक मुद्दे (जोगती पंथ, बसावी पंथ, गरुड़ परंपरा, यौवन रिवाज, विवाह रीतियाँ, विधवापन संबंधी रीतियाँ आदि)

9. फसल-कटाई संबंधी रीतियाँ।

10. जनजातीय परंपराएँ।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के एक विशेषज्ञ दल ने सांस्कृतिक पद्धतियों के तीन से पाँच क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित किया जो खतरे में थे। परियोजना तैयार करते समय विशेषज्ञों से निम्नलिखित घटकों को ध्यान में रखने का अनुरोध किया गया था:

- वह परंपराएँ जो खतरे में हैं
- वह क्षेत्र जिन पर ध्यान दिया जाना है और प्रलेखन का प्रकार।
- इस क्षेत्र में अभी तक किया गया कार्य।
- प्रमुख क्षेत्र की पहचान जहाँ परंपरा को अपनाया जाता था (किसी समय में)।
- परियोजना को पूरा करने के लिए आवश्यक समय और प्रयोग की जाने वाली पद्धति।
- ग्रंथ सूची, यदि कोई हो।
- बजट

यह परियोजना, जैसा कि पहले ही ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, बहुत बड़ी प्रकृति की है। इसलिए उपलब्ध सभी आंकड़ों - प्राथमिक और सहायक - को रिपोर्ट में सम्मिलित करना संभव नहीं है; तथापि सीमित संसाधनों तथा समय-सीमा के साथ हमने यथासंभव सर्वाधिक सूचना देने का प्रयास किया है।

2. भारत का सांस्कृतिक मानचित्र

भारत के सभी भौगोलिक क्षेत्रों में विशिष्ट कलाओं/शिल्प के लिए सांस्कृतिक जोन का चित्रण करने हेतु इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र टीम ने भारत के विस्तृत मानचित्र में ज्ञात प्रमुख शब्दों के साथ कलाओं/शिल्प को चिह्नित किया है। पाठक बिना किसी समस्या के कंप्यूटर पर कर्सर का प्रयोग करके शिल्प के बारे में आसानी से जान सकता है। यह मानचित्र नीचे दिया गया है:

चित्र	ए- कलाएं सी- शिल्प डी- नृत्य एम- संगीत आर- रीति-रिवाज एफ- त्योहार

6. अनुशंसाएं

अंत में निम्नलिखित इंगित अनुशंसाओं का सर्वसम्मति से सुझाव दिया गया है और हमें लगता है कि यदि इन्हें गंभीरता से लिया जाता है तो यह भारत में बहुत सारे शिल्प और शिल्पकारों की विरासत के प्रोत्साहन, संरक्षण तथा संवर्द्धन में सकारात्मक योगदान दे सकती हैं।

1. प्रत्येक व्यवसाय के सांख्यिकीय विश्लेषण तथा प्रलेखन के लिए विस्तृत सर्वेक्षण की तत्काल आवश्यकता है;

2. कला/रचनात्मकता में गुणवत्तापरक कार्यों के लिए मानक/मानदंड तैयार करना, यदि संभव हो तो तुरंत प्रभाव से, ताकि अंतर्राष्ट्रीय मापदंडों/ स्वीकार्यता की तुलना की जा सके;

3. यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक व्यवस्था करना कि समूह/समुदाय के अधिकारों अथवा व्यक्तिगत अधिकारों के लिए दिशानिर्देश/नीति उपलब्ध कराई जाए;

4. यह सुनिश्चित करना कि क्रियाकलाप को जारी रखने के लिए सकारात्मक रूप से वित्तीय सहयोग दिया जाए;

5. अंतिम रूप से तैयार उत्पाद/प्रक्रिया का विपणन एक पैकेट के रूप में किया जाना चाहिए;

6. इस क्रियाकलाप को जारी रखने के लिए इसे नियमित विद्यालयी पाठ्यक्रम/शिक्षा का हिस्सा बनाया जा सकता है;

7. सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए पुरस्कार विभिन्न स्तरों अर्थात जिला, राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दिया जाना चाहिए। वर्तमान में यह केवल राष्ट्रीय स्तर पर दिया जा रहा है और कुछ ही लोगों को इसकी जानकारी है।

8. देशी शिल्पकारों और आधुनिक तकनीशियनों के साथ मिल कर काम करना, एक पद्धति विकसित करना जिसके अंतर्गत एक शिल्पकार बेहतर उत्पादन तथा बड़ी मात्रा में उत्पादन के लिए कला की मौलिकता को नुकसान पहुंचाए बिना आधुनिक उपकरणों का प्रयोग कर सके।

9. यूनेस्को को सभी संभव सांस्कृतिक तथा भौगोलिक क्षेत्रों में भारत के शिल्प और शिल्पकारों को चिह्नित करने और उनकी स्थिति जानने के लिए अविलंब एक मेगा परियोजना शुरू करनी चाहिए (यदि संभव हो तो अन्य एजेंसियों जैसे यूएनडीपी, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड, राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान आदि के साथ मिल कर और नेटवर्किंग करके)। यह डाटाबेस दुर्लभ तथा समाप्त हो रहे कला/शिल्प के स्वरूपों को चिह्नित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इससे एक शोधकर्ता को उन स्वरूपों पर विस्तार से काम करने में भी सहायता मिलेगी जिन पर पहले काम अथवा अध्ययन नहीं किया गया है।

10. शिल्प को पारिस्थितिक निर्वाह तथा संसाधन प्रबंधन कार्यनीतियों, उत्सवों तथा रीति-रिवाजों, विपणन एवं विनिमय केन्द्रों के साथ जोड़ते हुए एक एटलस बनाए जाने की आवश्यकता है। इससे संसाधनों की उपलब्धता, पहुँच, उपयोग, पारंपरिक ज्ञान आधार में और शिल्प के लिए सांस्कृतिक सुदृढ़ता में कमियों का पता लगाने में सहायता मिलेगी।

11. समुदाय आधारित डिजाइन, पैटर्न, अर्थ तथा आकारों के लिए बौद्धिक सम्पदा अधिकारों का संरक्षण आवश्यक है, ताकि मूल कृति के रूप तथा अनुभूति, रंग तथा बनावट के साथ स्वीकृति तथा क्षतिपूर्ति के बिना कोई छेड़-छाड़ न हो।

आंकड़ा शीट

कला

सामान्य स्वरूप:	**कला**/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	मिथिला चित्रकारी
	अंग्रेजी समतुल्य	Mithila Painting
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	बिहार
	जिला/तहसील	मधुबनी
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

मिथिला चित्रकारी इस क्षेत्र की महिलाओं के एक प्रचलित रचनात्मक क्रियाकलापों में से एक है। यह मुख्य रूप से मिथिला की ग्रामीण महिलाओं द्वारा कागज, वस्त्र, रेडीमेड कपड़ों, चलायमान वस्तुओं आदि पर की जाने वाली एक प्रसिद्ध लोक चित्रकारी है। मूल रूप से यह एक लोक कला है,जिसमें मुस्लिम सहित सभी जाति और समुदायों की महिलाओं द्वारा प्राकृतिक एवं सब्जी के रंगों का प्रयोग करके दीवारों और फर्श पर चित्रकारी की जाती है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सामान्यत: महिलाएं कोहबर की चित्रकारी करती हैं
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षण की स्थिति:

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

चित्र

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **कला**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	सौरा चित्रकारी
	अंग्रेजी समतुल्य	Mural Painting
उत्पत्ति	क्षेत्र	कोरापुट, कालाहांडी
	राज्य	ओडिशा
	जिला/तहसील	रायगढ़, कालाहांडी
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	सौरा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	व्यक्तिगत
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक/ जादुई लौकिक/ त्योहार	धार्मिक-जादुई

विवरण: लांजिया सौरा अपनी विशेष प्रकार की चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके भित्ति-चित्रों और भारत के महाराष्ट्र के वर्ली भित्ति-चित्रों में समानताएँ हैं। लांजिया सौरा भित्ति-चित्र न केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति से संबंधित हैं बल्कि इसका बड़ा जादुई-धार्मिक महत्व भी है। भिन्न-भिन्न प्रकार के भित्ति-चित्र हैं जिनमें उनके कार्यों के आधार पर भिन्नताएँ हैं। कार्य भी उस अवसर के अनुसार जिस अवसर पर इन्हें बनाया जाता है और उस उद्देश्य के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं जिसके लिए इसका आयोजन किया जा रहा है। इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए गृह स्वामी, जादुई-धार्मिक विशेषज्ञ और अन्य सहायक अपनी संबंधित भूमिका निभाते हैं। सामान्यत: परिवार और समुदाय के बेहतर स्वास्थ्य तथा खुशहाली के लिए देवताओं को शरण देने हेतु भित्ति-चित्र बनाने के लिए निवास घर की अंदर की दीवार को प्राथमिकता दी जाती है। यह व्यापक तौर पर ज्ञात है कि लांजिया सौरा समुदाय का धार्मिक मूल्यों की ओर बहुत अधिक झुकाव है। वे विभिन्न देवताओं,देवियों, परोपकारी और अपकारी शक्तियों को आर्थिक जीवन से अधिक महत्व देते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उनका आर्थिक जीवन, सामाजिक जीवन, राजनैतिक जीवन, जीवन चक्र, लोक परंपराएँ और अन्य जीवन शैलियाँ जन्म से मृत्यु तक जून की शुरुआत से दिसंबर के अंत तक धर्म से जुड़ी होती हैं। धर्म उनके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और उनके चित्रों में धर्म के प्रति यह लगाव अलग-अलग तरीके से दिखाई देता है।

इन भित्ति-चित्रों के विभिन्न रूप एवं आकार हैं। चित्रकार खजूर के पेड़ से बने पारंपरिक ब्रश का प्रयोग करते हैं। चित्रकारी की सामग्री में प्रमुख घटक धूप में सुखाए हुए चावल होते हैं और चित्र को स्थायी तथा टिकाऊ बनाने के लिए कभी-कभी वे किसी पेड़ के लेटेक्स को इसमें मिलाते हैं। इन सबके अतिरिक्त वे विभिन्न प्रकार के चित्र बनाते हुए विभिन्न पेड़ों, पक्षियों, पशुओं तथा छिपकलियों आदि जैसी विभिन्न विशेषताओं के साथ-साथ उनकी मान्यताओं का समुचित लाभ उठाते हैं। उपर्युक्त सभी आकृतियाँ उद्देश्यों को देखते हुए और प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए भिन्न-भिन्न मुद्राओं में चित्रित की जाती हैं। इन सबके अतिरिक्त इस विशिष्ट क्षेत्र में कलाकार के कौशल में विशेषज्ञता तथा उत्कृष्टता भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। कुछ ऐसे चित्रकार हैं जिन्हें समुदाय में विशेष दर्जा प्राप्त है जिसके कारण उन्हें बहुत सम्मान दिया जाता है। जब किसी जादुई-धार्मिक विशेषज्ञ को इस प्रयोजन से बुलाया जाता है तो सामान्यत: वह स्वयं कभी मना नहीं करता और सकारात्मक सहमति अथवा स्वीकार्यता देना उस व्यक्ति की सज्जनता मानी जाती है।

जब कभी जादुई-धार्मिक कार्यक्रम, विशेष रिवाज, भोज तथा त्योहार होते हैं तब बहुत सारे लोगों को आमंत्रित किया जाता है। जब चित्र बनाया जाता है तब बहुत आनंद और खुशियाँ मनाई जाती हैं।	
परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षण की स्थिति:	
संरक्षणात्मक उपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि): चित्र सौरा चित्र सौरा जनजाति के लोगों के जीवन के दैनिक क्रियाकलापों को दर्शाते हैं। ये चित्र टसर सिल्क पर बनाए जाते हैं और लोगों, पशुओं तथा पेड़ों के भावों को प्रदर्शित करते हैं। सामान्यत: इन चित्रों में दैनिक क्रियाकलाप और उत्सव दर्शाए जाते हैं। ये बहुत सरल परंतु भावात्मक चित्रण होते हैं जो आदिम सार्वभौमिक भाषा बोलते हुए प्रतीत होते हैं।	
सूचना का स्रोत:दीनानाथ पथ्य (1996) लांजिया सौराओं के चित्र	

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **कला**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	**पट्टचित्र**
	अंग्रेजी समतुल्य	Scroll Painting
उत्पत्ति	क्षेत्र	पुरी
	राज्य	ओडिशा
	जिला/तहसील	रघुराजपुर, पुरी
जातीय समूह	जाति	कलाकार
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक/ जादुई लौकिक/ त्योहार	**धर्मनिरपेक्ष**

विवरण: पट्ट बनाने की प्रक्रिया एक लंबी प्रक्रिया है, और इस प्रक्रिया को पूरा करने में कम से कम पाँच दिन लगते हैं। प्रारंभ में इमली के बीजों का एक पेस्ट बनाया जाता है और इसे इमली के बीजों को लगभग तीन दिन तक पानी में भीगो कर किया जाता है। जब बीज फूल जाते हैं और मुलायम हो जाते हैं तो उन्हें तब तक मूसल के पत्थर से कूटा जाता है जब तक जैली जैसा पेस्ट न बन जाए। उसके बाद इस पेस्ट को एक मिट्टी के बर्तन में पानी में मिलाया जाता है और इसे गरम करके एक पेस्ट बनाया जाता है जिसे पारंपरिक रूप से निर्यास कल्प कहा जाता है।

उसके बाद चित्रकार कपड़े के समान आकार के दो टुकड़े चुनता है और इस पेस्ट की सहायता से उन दोनों को चिपकाता है। उसके बाद नरम मिट्टी के पत्थर का पाउडर बनाया जाता है और इसे इमली के पेस्ट में मिलाया जाता है। तैयार किए गए कैनवास पर दोनों सतहों पर इस मिश्रण की तीन परतें चढ़ाई जाती हैं। कैनवास को पूरी तरह से सुखाने के बाद सतहों को पुन: एक खुरदरे पत्थर से पॉलिश किया जाता है और बाद में एक चिकने पत्थर अथवा लकड़ी से पॉलिश किया जाता है, जो पट्टी को चमड़े जैसा रूप देता है, और अब यह चित्रकारी के लिए तैयार है। पॉलिश करने के लिए सामान्यत: लंबे समय तक काम करना पड़ता है और यद्यपि सामान्य रूप से पुरुष पट्टचित्र को पेंट करते हैं, परंतु पट्टी महिलाएं तैयार करती हैं। चित्रकार मुख्य रूप से सफ़ेद, काले, लाल, पीले, हरे तथा नीले रंग वाले रंगों का प्रयोग करते हैं। वे रंगों के संयोजन में एक निर्धारित पद्धति का अनुसरण करते हैं और इसके स्वरूप बहुत सजावटी होते हैं। ये रंग एकल टोन में होते हैं और कलाकार इनमें शेडिंग करने को बढ़ावा नहीं देते। ये सामान्यत: देशी होते हैं और प्राकृतिक घटकों के बने होते हैं।

सफ़ेद रंग के लिए शंख के खोल का प्रयोग किया जाता है। इन खोलों का पाउडर बनाया जाता है और कैथा फल की गोंद के साथ उबाला जाता है, लगातार हिलाया जाता है, जब तक यह एक पेस्ट न बन जाए। इस पेस्ट के थोड़े से हिस्से को पानी के साथ मिलाया जाता है और आवश्यकता होने पर उपयोग किया जाता है। काले रंग को तैयार करने के लिए दीपक से काजल पोरा जाता है। पानी से भरी हुई कांसे की एक प्लेट दीपक की लौ पर तब तक रखी जाती है जब तक कि कांसे की प्लेट की निचली सतह पर पर्याप्त मात्रा में कालिख एकत्रित नहीं हो जाती। उसके बाद काला रंग बनाने के लिए इस कालिख को कैथा अथवा बेल के फल की गोंद के साथ मिलाया जाता है। लाल रंग के लिए एक लाल पत्थर हिंगुलाल का पाउडर बनाया जाता है और

आवश्यक पानी तथा गोंद के साथ मिलाया जाता है। इस प्रकार लाल टेबलेट बनती हैं और इनका प्रयोग चित्रकारी के लिए किया जाता है। जल में घुलनशील एक सामग्री ढेऊ का भी लाल रंग के लिए प्रयोग किया जाता है।

पीला रंग हरताल नामक एक पीले पत्थर से उसी तरह बनाया जाता है जैसे लाल पत्थर से लाल रंग बनाया जाता है। हरा रंग प्राप्त करने के लिए हरी पत्तियों को कैथा फल से निकाली गई गोंद के साथ उबाला जाता है। कुछ हरे पत्थर भी हैं जिन्हें अन्य रंगीन पत्थरों की तरह तैयार किया जाता है और प्रयोग किया जाता है। चित्रकारों द्वारा नीले रंग का भी बहुत प्रयोग किया जाता है और नील का भी। इसे एक मुलायम पत्थर राजबर्ता से तैयार किया जाता है। चित्रकार अपने रंगों को मिलाने के लिए सुखाए गए नारियल की खोल और केया की जड़ से बनाए गए ब्रश का प्रयोग करते हैं। लकड़ी के हैंडलों पर चूहों के बाल लगा कर बेहतरीन ब्रश बनाए जाते हैं।

ओडिशा के चित्रकारों ने अपनी तेजी से बढ़ती प्रतिभा को अभिव्यक्ति के आम माध्यमों तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने सिल्क पर पट्टचित्र, ताड़ की पत्तियों की पाण्डुलिपियों के लिए चित्रण, आदि के रूप में विविधता दर्शाई। सिल्क के पट्टे तसर सिल्क से बनाए जाते हैं और इन पर चित्रकारी की जाती है और आधुनिक लोक चित्रकारों ने दीवार पर टाँगे जाने वाले खूबसूरत चित्र और सजावटी सामान तैयार किए हैं। परंतु इन सभी परिवर्तनों के बीच यह नोट करना सबसे रुचिकर होगा कि इन चित्रकारों ने उन आकृतियों और रंगों के प्रयोग को बनाए रखा है जो उन्हें उनकी पूर्व पीढ़ियों से प्राप्त हुए हैं। पट्टचित्र लोकप्रिय हो गए हैं और इस लोक चित्रकला के लिए ओडिशा के विभिन्न हिस्सों जैसे सोनपुर, बाँकी, खंडपाड़ा, ढेंकानाल, जयपुर, खल्लिकोते और भुवनेश्वर में केंद्र स्थापित किए गए हैं। पुरी जिले में शिल्प गाँव रघुराजपुर उल्लेखनीय है। यहाँ लगभग बाईस परिवार रहते हैं जो इस कला तथा शिल्प में कार्यरत हैं। उनकी प्रत्येक रचना में इस कला के प्रति समर्पण तथा ईमानदारी दिखाई देती है।

डॉ. एम. प्रसा टिप्पणी करते हैं: "ओडिशा चित्रकारी की यह दुनिया अद्भुत है, जो अपने आप में एक दुनिया है, जहाँ प्रत्येक वस्तु तथा आभूषण अपने अपरिवर्तनीय आकार, अपने स्थान तथा महत्व को बनाए रखता है, जहाँ प्रत्येक पशु की अपनी शैलीगत विशिष्टताएँ हैं, प्रत्येक व्यक्तित्व के प्राचीन पुस्तकों, धार्मिक मान्यताओं तथा स्थानीय परंपराओं द्वारा परिभाषित अचूक पहचान चिह्न हैं....." केया की जड़ से बनाए गए रंग और ब्रश। चूहे के बालों को लकड़ी के हैंडलों पर लगा कर बेहतरीन ब्रश बनाए जाते हैं।

ओडिशा के चित्रकारों ने अपनी तेजी से बढ़ती प्रतिभा को अभिव्यक्ति के आम माध्यमों तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने सिल्क पर पट्टचित्र, ताड़ की पत्तियों की पाण्डुलिपियों के लिए चित्रण, आदि के रूप में विविधता दर्शाई। सिल्क के पट्टे टसर सिल्क से बनाए जाते हैं और इन पर चित्रकारी की जाती है और आधुनिक लोक चित्रकारों ने दीवार पर टाँगे जाने वाले खूबसूरत चित्र और सजावटी सामान तैयार किए हैं। परंतु इन सभी परिवर्तनों के बीच यह नोट करना सबसे रुचिकर होगा कि इन चित्रकारों ने उन आकृतियों और रंगों के प्रयोग को बनाए रखा है जो उन्हें उनकी पूर्व पीढ़ियों से प्राप्त हुए हैं। पट्टचित्र लोकप्रिय हो गए हैं और इस लोक चित्रकला के लिए ओडिशा के विभिन्न हिस्सों जैसे सोनपुर, बाँकी, खंडपाड़ा, ढेंकानाल, जयपुर, खल्लिकोते और भुवनेश्वर में केंद्र स्थापित किए गए हैं। पुरी जिले में शिल्प गाँव रघुराजपुर उल्लेखनीय है। यहाँ लगभग बाईस परिवार रहते हैं जो इस कला तथा शिल्प में कार्यरत हैं। उनकी प्रत्येक रचना में इस कला के प्रति समर्पण तथा ईमानदारी दिखाई देती है।

डॉ. एम. प्रसा टिप्पणी करते हैं: "ओडिशा चित्रकारी की यह दुनिया अद्भुत है, जो अपने आप में एक दुनिया है, जहाँ प्रत्येक वस्तु तथा आभूषण अपने अपरिवर्तनीय आकार, अपने स्थान तथा महत्व को बनाए रखता है, जहाँ प्रत्येक पशु की अपनी शैलीगत विशिष्टताएँ हैं, प्रत्येक व्यक्तित्व के प्राचीन पुस्तकों, धार्मिक मान्यताओं तथा स्थानीय परंपराओं द्वारा परिभाषित अचूक पहचान चिह्न हैं....." केया की जड़ से बनाए गए रंग और ब्रश। चूहे के बालों को लकड़ी के हैंडलों पर लगा कर बेहतरीन ब्रश बनाए जाते हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	समूह
संरक्षण की स्थिति: यह समुदाय तेजी से सिंथेटिक रंगों को अपना रहा है	
संरक्षणात्मक उपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि): चित्र	
सूचना का स्रोत:	

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **कला**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	ओसाकोठी
	अंग्रेजी समतुल्य	Mural Painting
उत्पत्ति	क्षेत्र	गंजम
	राज्य	ओडिशा
	जिला/तहसील	गंजम
जातीय समूह	जाति	अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और ब्राह्मण
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	ब्राह्मण, चित्रकारा और बौरी
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक/ जादुई लौकिक/ त्योहार	धार्मिक

विवरण:

राज्य के दक्षिणी भाग में महिलाएं अपने पतियों तथा परिवार के सदस्यों के कल्याण तथा खुशहाली हेतु देवताओं को खुश करने के लिए एक लोक धार्मिक संस्कार चित्रकारी उत्सव मनाती हैं। शाब्दिक रूप से ओसाकोठी दो शब्दों से बना है: ओसा और कोठी, जिनका अर्थ क्रमश: प्रायश्चित और पवित्र स्थान है।

इस प्रकार ओसाकोठी शब्द का अर्थ है ओसा संस्कारों का स्थल अथवा और अधिक सामान्य रूप में पूजा का स्थान। यह एक धार्मिक स्थल अथवा एक सामुदायिक भवन हो सकता है जहाँ सभी प्रकार के रीति-रिवाज किए जाते हैं। परंतु इसे ओसा संस्कार करने के लिए बनाए जाने वाले आयताकार अथवा वर्गाकार चित्रों के सीमित अर्थ में भी लिया जा सकता है। ओडिशा में ऐसे कई शब्द हैं जिन्हें ओसाकोठी के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता है।

यह संस्कार सामान्यत: अश्विन शुक्लाष्टमी (सितंबर/अक्तूबर) को शुरू होते हैं और दशहरा तक चलते हैं। ये अश्विन पूर्णिमा तक भी चल सकते हैं। इन्हें शक्त मास (अश्विन) में शक्ति (देवी माँ) को खुश करने के लिए किया जाता है। इसे चैत्र के माह में भी मनाया जाता है क्योंकि इस माह को शिव की पूजा के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। संस्कार तथा भोज कुछ दिन के अंदर किए जा सकते हैं अथवा महीनों तक जारी रह सकते हैं और ये आनंद उत्सव और नाट्य प्रदर्शन के साथ समाप्त होते हैं। आज-कल प्रमुख संस्कार दूर्गा पूजा के त्योहार के साथ होते हैं।

परंपरा

"एक समय की बात है, श्रिया नाम की महिला थी। उसके सात बेटे थे। वह राजा के महल में सफाई का कार्य करती थी। वह अपनी सुंदरता और भाग्य के लिए जानी जाती थी। रानी श्रिया के सात बेटों से जलती थी और उसने उन्हें मारने का आदेश दे दिया। श्रिया असहाय थी और अपने बच्चों को रानी के कहर से बचाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकी।" कई वर्ष गुजर गए। एक दिन नदी किनारे जाते समय श्रिया की मुलाक़ात एक महिला से हुई। वह महिला बदले हुए वेश में देवी मंगला थीं। श्रिया ने उनके साथ अपना दर्द साझा किया। उसके जवाब में उन्होंने श्रिया से सभी वांछित फल प्राप्त करने के लिए मंगलादेवी की पूजा करने के लिए कहा।

"आशा की किरण के साथ श्रिया अपने घर वापस आई और देवी माँ के निर्देशानुसार उसने एक पात्र लिया और इसकी पूजा की। इससे उसने अपने सभी सात बेटों को पुन: जीवित कर लिया। उसने बारह वर्ष तक

ओसा किया। जब रानी ने श्रिया के सात बेटों को देखा तो वह अचरज में पड़ गई और उसने पूछा कि ऐसा कैसे हुआ। जब उसे कहानी बताई गई तो उसने स्वयं देवी की पूजा शुरू कर दी और बाद में उसे सात बेटे हुए। वर्तमान युग में इस ओसा को मनुष्य के लिए कल्याणकारी संस्कार के रूप में प्रचारित किया जाता है।"

प्रथा

वास्तव में ओसाकोठी धार्मिक स्थल हमेशा एक अस्थायी संरचना होती है जहाँ देवी ठकुरानी पूरे वर्ष रहती है। इसे ग्रामदेवती भी कहा जाता है और इसे एक घट (पात्र) के रूप में दर्शाया जाता है और विभिन्न अन्य विवरण के साथ भित्ति-चित्रों के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।

ओसाकोठी संस्कार के लिए मूलभूत आवश्यकताएँ बहुत सरल हैं: एक वेदी प्लेटफॉर्म अथवा संस्कार का सामान रखने के लिए कम से कम दीवार के आगे निकले हुए भाग के साथ भित्ति-चित्रों के लिए एक सादी दीवार, एक मंडप और प्रदर्शकों तथा दर्शकों के लिए खुला स्थान।

किसी भी ओसाकोठी धार्मिक स्थल के लिए अनिवार्य ओसाकोठी दीवार चित्रों के साथ कांथा अथवा कांथी (दीवार) अथवा बाय होती है जिन्हें प्राय: रूप, स्वरूप कहा जाता है। जिन दीवारों पर भित्ति-चित्र बनाए जाने होते हैं उनके संबंध में भिन्नताएँ होती हैं: पूरे डंडा घारा (स्वागत कक्ष) और बरामदे के कुछ भागों पर चित्रकारी की जाती है और बरामदे की किनारे की दीवारों को खाली रखा जाता है।

पूरे पिंधा घारा (बरामदे) के साथ दो किनारों की दीवारों और पीछे की दीवार के स्थान को दो भागों में बांटने वाले दरवाजे को पूरी तरह से ओसाकोठी भित्ति-चित्रों से ढका जाता है। पिंधा की केवल आगे की दीवार और प्रवेश द्वार पर चित्र बनाए जाते हैं और किनारे की दीवारें चित्रित नहीं की जातीं। पिंधा बरामदे की किनारे की एक दीवार अथवा आगे की दीवार के दरवाजे के साथ के कुछ हिस्से पर चित्र बनाए जाते हैं। पिंधा के एक किनारे और किनारे की एक दीवार और पीछे की दीवार को चित्रित किया जाता है।

यह आवश्यक नहीं है कि भित्ति-चित्रों को सीधे दीवार पर चित्रित किया जाए, परंतु इन्हें कपड़े अथवा कागज पर भी बनाया जा सकता है और बाद में दीवार पर टांगा जा सकता है। ओसाकोठी धार्मिक स्थल के भित्ति-चित्रों में 33 करोड़ देवी-देवता होते हैं। कम से कम 10 से 20 चित्रों और अधिकतम 100 देवताओं, देवियों, महाकाव्यों के नायकों और महान व्यक्तियों को भी देवताओं के सेवकों तथा रिशतेदारों के रूप में दर्शाया जाता है।

प्रतीकों के रूप में मंगलादेवी, इस्परा (अथवा शिव), दुर्गा, काली, चिनमासता, पार्वती, सरस्वती, गंगा और यमुना, ठकुरानी देवी, उनकी बेटियों और बेटों, पाँच पांडवों, भीम, गजभीम, कामधेनु, हनुमान, मयारूज़ (छलिया स्वर्ण हिरण), धोबा-धोबनी, आदि और योद्धाओं, पक्षियों, पशुओं, फूलों और फूलों के अन्य डिज़ाइनों को भी चित्रित किया जाता है।

ओसाकोठी चित्रकार कौन हैं?

इन चित्रकारों में वे पेशेवर सम्मिलित हैं जो अपने शिल्प कौशल से अपना निर्वाह करते हैं जिनमें प्राय: दीवारों, कपड़े तथा कागज पर चित्रकारी के अतिरिक्त खिलौने तथा ताश के पत्ते बनाना, जगन्नाथ मंदिरों की नियमित सेवा, और शाही परिवारों से संपर्क सम्मिलित है; आलंकारिक चित्रकारी उनका पेशा है और वे बहुत कम उम्र से ही यह चित्रकारी करते हैं। पुजारी समूह के चित्रकार प्राय: गरीब ब्राह्मण तथा माली होते हैं -बाद की श्रेणी के अर्थात माली निम्न सामाजिक श्रेणी के पुजारी होते हैं जिनके पास अधिक भूमि-संपत्ति नहीं होती, जो धार्मिक तथा अनुष्ठानिक सेवाएँ दे कर आजीविका अर्जित करते हैं। इनमें से अधिकतर शैव पुजारी होते हैं।

तीसरा समूह अर्थात बौरी चित्रकार निरक्षर किसान अथवा अन्य निम्न आय समूह के सदस्य होते हैं और इनकी कोई धार्मिक अथवा कला पृष्ठभूमि नहीं होती। ये मूल रूप से स्थानीय लोग होते हैं।

चित्रकार शिल्पकारों के कई परिवार उस क्षेत्र में बसे हुए हैं जहाँ ओसाकोठी चित्रकारी की जाती है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति	समूह

(समूह/व्यक्ति)	
संरक्षण की स्थिति: यह समुदाय तेजी से सिंथेटिक रंगो को अपना रहा है।	
संरक्षणात्मक उपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि): चित्र (बिरांची नारायण मंदिर, बुगुडा, 18वीं सदी के अंत में, गंजम से)	

सामान्य स्वरूप:	**कला**/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	खेबा
	अंग्रेजी समतुल्य	Painting
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	सिक्किम
	जिला/तहसील	उत्तरी और पूर्वी जिले
जातीय समूह	जाति	-
	जनजाति	कगाले
	अन्य	-
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यहाँ धार्मिक चित्रकारी होती है। - - -
विवरण: खेबा चित्रों के लिए स्थानीय रंगों का प्रयोग किया जाता है। ये चित्र देवताओं और देवियों की छवियों को दर्शाते हैं।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	- यह एक अंशकालिक व्यवसाय है।	
संरक्षण की स्थिति: समाप्त होती परंपरा		
संरक्षणात्मक उपाय: कुछ खास नहीं		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचना का स्रोत:डॉ. ए. के. दास		

सामान्य स्वरूप:	**कला**/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	सांची पतर पुथी
	अंग्रेजी समतुल्य	Palm-leaf Manuscript (पाण्डुलिपि परंपरा)
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	ब्रह्मपुत्र नदी घाटी के सभी जिले
जातीय समूह	जाति	असमिया हिन्दू जाति
	जनजाति	-
	अन्य	-
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह धर्म से संबंधित एक पाठ्य परंपरा है। - - -

विवरण:

सांची पेड़ की पत्ती को धूप में सुखाया जाता है और आयताकार टुकड़ों में काटा जाता है। इन पत्तियों पर छोटे चित्र लिखे अथवा बनाए जाते हैं। बाद में इन्हें क्रमानुसार लकड़ी के दो आवरणों से सुरक्षित रखा जाता है। कभी-कभी इन लकड़ी के आवरणों को विशिष्ट आकृतियों में रंगा जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	कभी यह एक पूर्णकालिक व्यवसाय था।

संरक्षण की स्थिति: यह परंपरा लगभग समाप्त हो चुकी है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	**कला**/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Tattooing (व्यक्तिगत श्रृंगार)
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	निचला सुबनसिरी
जातीय समूह	जाति	-
	जनजाति	अपातानी
	अन्य	-
भागीदारी	व्यक्तिगत	दोनों
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए व्यक्तिगत श्रृंगार के लिए धर्मनिरपेक्ष रिवाज है।

विवरण:

महिलाओं के मामले में टैटू माथे से नाक की नोक तक सीधी रेखा में बनाया जाता है और ठोडी पर कई छोटी रेखाएँ बनाई जाती हैं। पुरुषों के मामले में केवल ठोडी के मध्य में एक रेखा में टैटू बनाया जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह विशेषज्ञ का एक अंशकालिक व्यवसाय है।

संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	**कला**/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	मोहन बंसी
	अंग्रेजी समतुल्य	Flute
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	जमातिया
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह पुरुषों द्वारा बाजाया जाने वाला एक धर्म से संबंध न रखने वाला संगीत वाद्ययंत्र है।

विवरण:

मोहन बंसी स्थानीय रूप से पाए जाने वाले एक विशिष्ट बाँस से बनाई जाती है। यह जमातिया लोगों की विशेष बांसुरी होती है। त्योहारों और आनंद एवं हर्षोल्लास के अन्य अवसरों पर युवाओं द्वारा मनमोहक लोक धुनें बजाई जाती हैं। ये व्यक्तियों द्वारा स्वयं बनाई जाती हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	यह बांसुरी यहाँ के लोगों द्वारा आम तौर पर बजाई जाती है।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	आर्थिक महत्व के साथ इसका कोई सीधा संबंध नहीं है।

संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है। लोक धुनें लगभग भुला दी गई हैं।

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	**कला**/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	खैसामाला/परबामाला
	अंग्रेजी समतुल्य	Bead Necklace
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	जमातिया
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	ये महिलाओं की व्यक्तिगत श्रृंगार की परंपरागत वस्तुएँ हैं।

विवरण:

जमातिया महिलाएं स्वयं अर्द्ध-कीमती पत्थरों, काँच के मनकों और पुराने सिक्कों का प्रयोग करके विभिन्न प्रकार के मनकों के हार बनाती हैं। कुछ हारों में रंगों का बेहतरीन संयोजन देखने को मिलता है,पारदर्शी अंगारा मनकों का उपयोग असामान्य नहीं है। ये मनके म्यानमार से आते हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	ये व्यक्तिगत श्रृंगार के आभूषण हैं।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	उनके आभूषण परिवार की समृद्धि को दर्शाते हैं।
संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।	
संरक्षणात्मक उपाय: कुछ खास नहीं	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचना का स्रोत: डॉ. ए. के. दास	समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	**कला**/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	रंबक
	अंग्रेजी समतुल्य	Coin-Necklace
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	रियांग
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	ये महिलाओं की व्यक्तिगत श्रृंगार की वस्तुएँ हैं।

विवरण:

विभिन्न मूल्य के पुराने सिक्कों का प्रयोग करके बनाए गए विभिन्न प्रकार के रंबक (हार) पाए जाते हैं। सबसे लोकप्रिय एक रुपये के चांदी के सिक्कों का रंबक है। चौथाई रुपये (पच्चीस पैसे) के सिक्कों के हार भी पाए जाते हैं। महिलाएं विभिन्न आकार के ऐसे विभिन्न हार पहनती हैं। ये बंद गले से शुरू होते हैं और छाती तक लटकते लंबे हार भी होते हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	ये व्यक्तिगत श्रृंगार के आभूषण हैं- कहीं-कहीं ये माता द्वारा पुत्रियों को विरासत में मिलते हैं।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	ये आभूषण व्यक्ति की आर्थिक स्थिति को दर्शाते हैं।

संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि): वीडियो

सूचना का स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	**कला**/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	किदारन चित्रकारी
	अंग्रेजी समतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	केरल
	जिला/तहसील	कासरगोड
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

कन्नूर और कासरगोड जिलों में रहने वाला किदारन समुदाय किदारन चित्रकारी करता है। इन चित्रों का धार्मिक महत्व है और ये चित्रकारी सामान्यत: पवित्र स्थलों के अंदर दीवारों पर और धर्मस्थलों में लकड़ी पर की गई नक्काशी में की जाती है। यह पुरानी परंपरा समाप्त होने के कगार पर है। पहले सत्तर परिवार यह चित्रकारी करते थे और अब कासरगोड में तथा इसके आस-पास यह कलाकारी करने वाले केवल पाँच व्यक्ति हैं। इस कला को 'वीरालीपट्टु' के नाम से जाना जाता है और इसका प्रयोग थेय्यम धर्मस्थलों में किया जाता है। 'वीरालीपट्टु' एक सामान्य शब्द है जो योद्धा पंथ से संबंधित है। किदारन शंकुधारी वृक्ष की लकड़ी का प्रयोग करके पारंपरिक बॉक्स बनाने वाले व्यक्ति हैं। महिलाएं अरारोट पाउडर बनाती हैं और लकड़ी के बॉक्स तैयार करती हैं जिन्हें पेंट किया जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षण की स्थिति:

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:प्रोफेसर सेत्तार

सामान्य स्वरूप:	**कला**/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	दावली चित्रकारी
	अंग्रेजी समतुल्य	Scroll Painting
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	केरल
	जिला/तहसील	एर्णाकुलम
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

यह केरल की एकमात्र पट्ट-चित्रकारी परंपरा है। इसे *म्लावेली वायना* भी कहा जाता है। कलाकार (म्लावेली पंडारम) एर्णाकुलम और कोट्टायम जिलों के घरों और गाँवों में जाने के बाद उनके द्वारा बनाए गए कैनवास पर शिव की लीलाओं का वर्णन करते हैं। कलाकार पारंपरिक कौशल का प्रयोग करके एक महाकाव्य के दो अथवा तीन अध्याय कैनवास पर चित्रित करते हैं और इसे गाँवों में ले जाते हैं। बंगाल के *पट्टचित्र* कलाकारों की तरह दावली चित्रकार भी पारंपरिक पट्टचित्र प्रदर्शित करते हुए महाकाव्य का वर्णन करते हैं जहाँ प्रदर्शक घटनाक्रम के वर्णन के साथ पट्टचित्र दर्शाता है। यह एक धार्मिक प्रदर्शन होता है और इसका प्रदर्शन करने वाले केवल एक अथवा दो कलाकार जीवित हैं जो इस परंपरा को जारी रखने में रुचि नहीं रखते हैं। यह परंपरा केवल केरल के एर्णाकुलम जिले के अलुवा क्षेत्र में प्रचलित थी।

इसके कोई चित्र उपलब्ध नहीं हैं। इस परियोजना में एक कार्यशाला के साथ प्रलेखन की आवश्यकता पर ज़ोर दिया जाता है। इस कला स्वरूप की जानकारी प्राप्त करने के लिए बहुत कम कलाकार जीवित हैं। यदि इसका प्रलेखन तथा संरक्षण नहीं किया जाता तो यह बहुमूल्य परंपरा और दो वर्षों में गायब हो जाएगी।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षण की स्थिति:	
संरक्षणात्मक उपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचना का स्रोत:प्रोफेसर सेत्तार	

सामान्य स्वरूप:	**कला**/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपरा का नाम	**स्थानीय**	
	अंग्रेजी समतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	चबरी समाज
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

यहाँ कलाकार जीवनशैलियों के बारे में और उन विभिन्न देवियों के बारे में बात करता है जिनकी वे पूजा करते हैं। वे चौधरी भाषा बोलते हैं और उनकी संस्कृति की रचनाएँ हाल ही में विकसित हुई हैं और आगे बढ़ने की प्रक्रिया में हैं। उनके गाँव में 12 झट्टियाँ होती हैं जिन्हें सजाया जाता है। उनकी कुल देवी कौसरी माता है जिनका कोई स्वरूप नहीं है। वह जंगल और संबंधित औषधीय पौधों की बात करता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षण की स्थिति: इसे मौखिक स्वरूप में बनाए रखा गया है

संरक्षणात्मक उपाय: इसे सहारा दिए जाने की आवश्यकता है

उदाहरण (फोटो आदि): वीडियो

सूचना का स्रोत:घुमंतू बंजारे और आदिवासी कार्यशाला

समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्य स्वरूप:	**कला**/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपरा का नाम	**स्थानीय**	
	अंग्रेजी समतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	किन्नौर
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	जिलाकिनोई
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

ये काश भाषा बोलते हैं और इनका गोत्र नेगी है। इस क्षेत्र में तीन प्रकार की जनजातियाँ हैं - काश, चंबेर और दोमांग। उनकी भाषा आस-पास की जनजातियों जैसे सोनी आदि से प्रभावित होती है। इनकी कोई लिखित पाण्डुलिपि नहीं है और पवित्र शिक्षा मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित की जाती है। उनका मानना है कि उन्हें लगभग 100 वर्ष पहले राजा परम सिंह हिमाचल लाए थे। उनके कुल देवता नारायण और विष्णु हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	हिमाचल प्रदेश, किनौर से जिलाकिनोर के राजेश।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षण की स्थिति: इसे मौखिक स्वरूप में बनाए रखा गया है

संरक्षणात्मक उपाय: इसे सहारा दिए जाने की आवश्यकता है

उदाहरण (फोटो आदि): वीडियो

सूचना का स्रोत:घुमंतू बंजारे और आदिवासी कार्यशाला

समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

शिल्प

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Basketing
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	हलम
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह घर की आवश्यकता के सामान के लिए एक धर्म से असंबंधित शिल्प है।

विवरण:

हलम लोग अपने खाली समय में विभिन्न प्रकार की बांस की टोकरियाँ बुनते हैं जैसे - सामान ले जाने की टोकरियाँ, मछली पकड़ने की टोकरियाँ, मेहमानों के सामने रखने के लिए ट्रे, रपटेड्स अनाज की टोकरी आदि। विभिन्न प्रकार के बांस और बेंत स्थानीय तौर पर उपलब्ध हैं - जिन्हें शिल्पकार पाईका में काटते हैं और विभिन्न आकार तथा लंबाई की लचीली पट्टियाँ तैयार करते हैं। इन पट्टियों को एकल अथवा दोहरे रूप में प्रयोग किया जाता है और इनसे विकर्णीय समानान्तर डिजाइन (twill) में और खुले षट्कोण की तकनीक से विभिन्न टोकरियाँ बुनी जाती हैं। कुछ टोकरियों में आकर्षक आकार तथा उत्तम बनावट नजर आती है और इन्हें कला वस्तुओं के रूप में ब्रांड किया जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	हलम जनजाति के सभी वंश समूह।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	वर्तमान में इस शिल्प -प्रथा का आर्थिक महत्व धीरे-धीरे अपना स्थान खो रहा है।

संरक्षण की स्थिति: चयनित शिल्प केन्द्रों में निर्माण के अपवादों को छोड़ कर कुछ खास नहीं, एक समाप्त हो रही परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ बहुत विशेष नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	सेले मंडारी, लाचुए, दोहदू
	अंग्रेजी समतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	उत्तरी भारत
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	कुल्लू, चंबा और शिमला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	लौकिक और त्योहार

विवरण:

ऐसे बहुत से शिल्प उत्पाद हैं जिनका आज-कल प्रयोग नहीं किया जाता। ये शिल्प ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत कम दिखाई देते हैं। जीवनशैली में बदलाव के साथ ये चीजें समाप्त हो रही हैं। इसलिए इन शिल्प कौशल का संरक्षण करने की बहुत आवश्यकता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	समूह
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	निम्न
संरक्षण की स्थिति:	
संरक्षणात्मक उपाय: वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी और टेपिंग	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचना का स्रोत:	समन्वयक: डॉ. सूरत ठकल

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	पथ की कला
	अंग्रेजी समतुल्य	Floor Decoration
उत्पत्ति	क्षेत्र	कुल्लू
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	कुल्लू
जातीय समूह	जाति	ब्राह्मण
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	धार्मिक

विवरण:

खनिजों से बनाए गए रंगीन पाउडर को लस्सी के साथ मिलाया जाता है और फर्श तथा दीवारों पर चित्रकारी की जाती है। केवल आकृतियों का प्रयोग करके चित्रकारी की जाती है। उच्च जाति (ठाकुरों) के लोगों द्वारा विवाह समारोह के दौरान फर्श और दीवारों की सजावट करने के लिए ब्राह्मण समुदाय की औरतों को आमंत्रित किया जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	बंजर घाटी, कुल्लू के पंडित (ब्राह्मण) परिवारों की बूढ़ी महिलाएं।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह परंपरा तेजी से समाप्त हो रही है और अब केवल कुछ बूढ़ी महिलाएं बची हैं जो इस कला की जानकारी रखती हैं।

संरक्षण की स्थिति: इस कला को व्यावसायिक बना कर पुनरुजीवित किया जा सकता है। जो बूढ़ी महिलाएं इस कला के स्वरूप से परिचित हैं उन्हें युवा महिलाओं को इसका प्रशिक्षण देना चाहिए। उन्हें माध्यम को बदलना चाहिए और कागज पर पीटीजीएस बनाना चाहिए और इस कला का व्यावसायीकरण करने के तरीके तथा माध्यम खोजे जाने चाहिए। (कैलेंडर, सजावटी सामान, शुभकामना कार्ड)

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:डॉ. विध्यस शर्मा समन्वयक: वीरेंद्र बाँगड़ू

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Jewellery making
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	मिज़ो लोगों में आभूषण बनाना एक धर्म से असंबंधित प्रथा है।

विवरण:

एंबर तथा मूंगे और अर्द्ध-कीमती पत्थरों जैसे आभूषण। गले के हार मिज़ो लोगों की बहुत महत्वपूर्ण आभूषण वस्तु हैं। एंबर के कानों के कुंडल मिज़ो आभूषणों की रुचिकर वस्तुएँ हैं। अर्द्ध-कीमती मनकों जैसे फिरोजी पत्थर, रूबी, मूंगे, सुलेमानी पत्थर और अपारदर्शी एंबर बॉल के हार मिज़ो महिलाओं के विशिष्ट आभूषण हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सभी मिज़ो वंश
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	इन्हें कभी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति का सूचक माना जाता था।

संरक्षण की स्थिति: अब इनका निर्माण नहीं किया जाता। यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ विशेष नहीं। कुछ व्यक्तियों द्वारा विरासत के तौर पर संरक्षित की जा रही है।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Bamboo Cap
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह मिज़ो लोगों में एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।

विवरण:

यह पुरुषों की एक विशिष्ट टोपी है। लगभग 2 मिमी चौड़ाई और 1 मिमी मोटाई वाली बांस की बारीक पट्टियों को चेकर कार्य तकनीक से बुना जाता है और इसे टोपी का आकार दिया जाता है। यह टोपी गोल होती है जो सिर पर पूरी आती है। इस टोपी के आगे की ओर अर्द्ध-वृत्ताकार हिस्सा निकला हुआ होता है। इसे वस्त्रों के कपड़े की तरह बारीकी से बुना जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	मिज़ो जनजातियाँ
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	शिल्प कार्य, विशेष रूप से टोकरी बनाने के कार्य, का अत्यधिक आर्थिक महत्व है। यह विशिष्ट टोपी एक पर्यटन वस्तु बन चुकी है।

संरक्षण की स्थिति:यह एक समाप्त होती परंपरा है। टोकरी बनाने का कार्य धीरे-धीरे मिजोरम में दिखाई देना बंद हो रहा है।

संरक्षणात्मक उपाय: शिल्प केन्द्रों द्वारा प्रायोजन को छोड़ कर कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	मकतबी
	अंग्रेजी समतुल्य	Bamboo smoker pipe
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	रियांग
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह व्यक्तियों के खाली समय का मनोरंजन है।

विवरण:

मकतबी बांस के एक हिस्से से बनाए जाने वाला एक सरल यंत्र है। बांस के हिस्से पर एक सिरे पर एक छोटे नोट के माध्यम से एक पात्र जोड़ा जाता है और दूसरा सिरा धूम्रपान के लिए खुला छोड़ा जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	यह पुरुषों के व्यक्तिगत मनोरंजन तथा उत्तेजना के लिए है।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस धूम्रपान यंत्र में कोई आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है, बहुत कम लोग अब मकतबी (धूम्रपान पाइप) का प्रयोग करते हैं।

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ विशेष नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	रिशा
	अंग्रेजी समतुल्य	Breast cloth
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	रियांग
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह महिलाओं द्वारा व्यक्तिगत जरूरत के लिए प्रयोग किए जाने वाला घरेलू शिल्प है।

विवरण:

रिशा कमर-करघे में बुना गया एक छोटा तथा तंग कमरबंद जैसा कपड़े का टुकड़ा होता है। यह रंगीन धागों में ज्यामितीय पैटर्न दर्शाता है। यह वास्तव में वस्त्र बनाने वाले कपड़े का सुंदर टुकड़ा है जिसे एक जनजातीय कला वस्तु माना जा सकता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	रिशा एक लड़की को पहनने के लिए तब दिया जाता है जब वह यौवन की अवस्था में आती है। इस अवसर पर एक संस्कार का आयोजन किया जाता है।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस वस्तु के किसी खास अवसर पर विपणन को छोड़ कर इसका कोई आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय: अब तक कोई उपाय रिपोर्ट नहीं किया गया है।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Bridal Palanquin
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	पश्चिम त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	त्रिपुरी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	त्रिपुरी पालकियाँ विशेष रूप से विवाह समारोह के दौरान दूल्हे को लाने के लिए बनाई जाती हैं।

विवरण:

यह लकड़ी की बनी एक विशिष्ट पालकी होती है। इसका प्रयोग विशेष रूप से विवाह समारोह के दौरान आइया, आइजुक और एक बेरबर के लिए किया जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	यह पालकी स्थानीय शिल्पकार द्वारा समुदाय की जरूरत के लिए बनाई जाती है।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	पालकी अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति को दर्शाती है...

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ विशेष नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Carrying Basket
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	नोएतिया
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह व्यक्तियों द्वारा दिन प्रति दिन के उपयोग के लिए एक घरेलू शिल्प प्रथा है।

विवरण:

सामान ले जाने वाली टोकरियाँ सामान्यत: शंकु आकार की होती हैं जिन्हें आम तौर पर खुले षट्कोणीय तकनीक में बुना जाता है। इसकी कारीगरी बारीक होती है और यह एक आकर्षक आकृति तथा बनावट दर्शाती है। चिकन कार्य तकनीक से बुनी गई सामान ले जाने की टोकरियाँ भी बनाई जाती हैं। ये टोकरियाँ अस्थायी प्रयोग के लिए होती हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	यह व्यक्तिगत आवश्यकता के लिए एक घरेलू शिल्प कला है।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	आज-कल कुछ शिल्पकार अपने उत्पादों का विपणन करते हैं और इसके साथ कुछ आर्थिक महत्व को जोड़ा जा सकता है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Textile weaving
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	हलम
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है। इसमें उनके कमर-करघे में पाच्छा,रिशा, स्कार्फ आदि बनाए जाते हैं।

विवरण:

हलम महिलाएं उनके खाली समय के दौरान छोटे चलायमान कमर-करघे में काम करती हैं। धागे स्थानीय बाजार में उपलब्ध होते हैं। रंगाई का काम पारंपरिक तरीके से किया जाता है। वस्त्र की वस्तुओं जैसे रिशा (छाती पर पहने जाने वाला वस्त्र) और पच्चरा में विभिन्न रंगों के मिश्रण के साथ हीरे, फूल, त्रिकोण आदि आकारों में ज्यामितीय रूपांकन दिखाई देता है। कुछ हलम वस्त्रों में कम प्रसिद्ध जनजाति की कलात्मक रचनात्मकता दिखाई देती है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	हलम जनजाति के सभी वंश समूह।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	वर्तमान में इस शिल्प का कोई आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	पुअनपुरी
	अंग्रेजी समतुल्य	Blanket
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह घरेलू उपयोग के लिए एक धर्म से असंबंधित शिल्प परंपरा है।

विवरण:

यह महिलाओं द्वारा उनके दाब करघे में बनाए जाने वाला एक वस्त्र में प्रयोग होने वाला कपड़ा है। इस कंबल के लिए प्रयोग किए जाने वाले धागे मोटे और मजबूत होते हैं। जिन्हें पारंपरिक तकले का प्रयोग करके हाथ से बुना जाता है। ये प्रलंबन करघे छोटे होते हैं और इन्हें कहीं भी ले जाया जा सकता है तथा प्रयोग किया जा सकता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सभी मिज़ो वंश समूह।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह महिलाओं द्वारा उनकी व्यक्तिगत जरूरतें पूरी करने के लिए किए जाने वाला पार्ट-टाइम कार्य है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	लुंगविन/लुखुम
	अंग्रेजी समतुल्य	Textile fabrics
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मणिपुर
	जिला/तहसील	मोइरांग
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	अनल
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह घरेलू उपयोग के लिए एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।

विवरण:

अनल विभिन्न वस्त्र वस्तुएँ बुनते हैं जिनका प्रयोग उनके कमर करघे (दाब करघे) में पारंपरिक ड्रम तथा परिधान के रूप में किया जाता है। धागे बनाने और चमकीले रंगों में इन्हें रंगने का कार्य स्थानीय रूप से किया जाता है। प्रत्येक महिला से बुनाई का कौशल सीखने की अपेक्षा की जाती है। इस शिल्प के कोई विशेषज्ञ नहीं हैं। यह खाली समय में किया जाने वाला कार्य है। जब महिलाओं के पास रोज़मर्रा के कृषि कार्य के बाद खाली समय होता है तब वे अपना चलायमान कमर करघा उठाती हैं और घर के सुविधाजनक स्थान पर बुनाई शुरू कर देती हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	अनल के सभी वंश समूह।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	व्यक्तिगत उपयोग के लिए कपड़ों के निर्माण का अप्रत्यक्ष आर्थिक महत्व था।

संरक्षण की स्थिति: मिल से बनने वाले कपड़े उपलब्ध होने के कारण युवा महिलाएं अब इस शिल्प को जारी रखने में रुचि नहीं रखतीं।

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Bark fabrics Apparel
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मेघालय
	जिला/तहसील	गारो हिल्स
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	गारो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह व्यक्तिगत उपयोग के लिए एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।

विवरण:

छाल से कपड़े बहुत मोटी छाल वाले एक स्थानीय जंगली पेड़ से बनाए जाते हैं। पेड़ के तने से छाल को पूरी तरह से हटा दिया जाता है और इसे अवांछित सामग्री को हटा कर तथा वानस्पतिक रेशे को एक मोटे कपड़े में रख कर एक लकड़ी के मुसल द्वारा सपाट बनाया जाता है। इस छाल से बने कपड़े को अलग-अलग आकार में काटा जाता है और इसका प्रयोग परिधान की तरह किया जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	मेघालय के गारो हिल्स जिले के गारो रेशे।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह घरेलू उपयोग के लिए एक अंश कालिक कार्य था।

संरक्षण की स्थिति: विलुप्त शिल्प

संरक्षणात्मक उपाय: अब तक कुछ नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Pottery
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मेघालय
	जिला/तहसील	ख़ासी और जयंतिया हिल्स
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	प्नोर ख़ासी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	महिला
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।

विवरण:

महिला कुम्हारों द्वारा चाक का प्रयोग किए बिना मिट्टी के विशिष्ट बर्तन बनाए जाते हैं। यह कुंडली तकनीक पर आधारित हाथ से बनाए गए मिट्टी के बर्तन होते हैं। इसकी सतह और अंदरूनी भाग को लकड़ी के मुसल का प्रयोग करके सपाट बनाया जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	ख़ासी जनजाति के तीन में से एक भाषाई समूह इससे संबंधित है।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस शिल्प का प्रयोग महिलाओं द्वारा किया जाता है। यह ख़ासी जनजाति के एक वर्ग के बीच एक प्रकार का व्यावसायिक राज है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती शिल्प परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	पुअनदम
	अंग्रेजी समतुल्य	Brides skirt
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह दुल्हन के लिए बुनी गई एक अत्यधिक सजीली स्कर्ट होती है।

विवरण:

यह कमर करघे पर बुनी गई लगभग 3 फुट चौड़ी और 4 फुट लंबी एकल स्कर्ट होती है। इसमें सफ़ेद बेस पर क्षैतिज रूप से और ऊर्ध्वाधर रूप से लाल तथा काली पट्टियाँ दर्शाई जाती हैं। पूरी स्कर्ट में नियमित अंतर पर लाल तथा काले धागे के कुछ ज्यामितीय रूपांकन देखे जा सकते हैं। ऐसी स्कर्ट बुनने में लगभग छः माह का समय लगता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सभी मिज़ो समूह।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक व्यवसाय है, और अब इसके स्थान पर अधिकतर मिल में बनाए जाने वाले कपड़ों का प्रयोग होने लगा है।

संरक्षण की स्थिति: अधिक समय लगने के कारण यह परंपरा धीरे-धीरे समाप्त हो रही है।

संरक्षणात्मक उपाय: शिल्प केंद्र पर्यटक बाजार के लिए इन वस्तुओं के उत्पादन का प्रयास कर रहे हैं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	लान/थुल
	अंग्रेजी समतुल्य	Basketry
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह दिन प्रति दिन की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।

विवरण:

मिज़ो के बांस की टोकरी के कार्य को इसके स्वरूप की सुंदरता तथा बनावट के लिए जाना जाता है। कपड़े और ख़रीदारी का सामान रखने के लिए टोकरियाँ, खाना तथा सुपारी देने के लिए टोकरियाँ, सामान ले जाने के लिए टोकरियाँ, मछली पकड़ने के लिए टोकरियाँ आदि कुशलतापूर्वक बनाई जाती थीं। प्रत्येक शिल्पकार टोकरी बनाने के कार्य में मग्न था। विभिन्न प्रकार के मैम्बो स्थानीय तौर पर उपलब्ध हैं। टोकरियाँ बनाने के लिए साधनों तथा उपकरणों का निर्माण स्थानीय रूप से किया जाता था। जहां तक उपर्युक्त पारंपरिक जानकारी, बांस, संसाधन तथा तैयार करने की तकनीक, बुनाई की विभिन्न शैलियों, रंगाई आदि का संबंध है लोग इस शिल्प में आत्मनिर्भर थे।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सभी मिज़ो वंश
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह शिल्प आम लोगों का एक अंश कालिक कार्य था।

संरक्षण की स्थिति: स्थानीय बाजार में सस्ते औद्योगिक ग्रेड की उपलब्धता के कारण यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय: कुछ खास नहीं। शिल्प केन्द्रों ने इस शिल्प को कुछ महत्व दिया है।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	भुटा आइकन की मूर्ति बनाना, नक्काशी तथा प्रतिकृति बनाना
	अंग्रेजी समतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	उडुपी
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

भुटा प्रदर्शनों तथा संस्कारों में प्रयुक्त विभिन्न कलाकृतियों के निर्माण में उच्च स्तर की शिल्पकारी तथा कलात्मकता दिखाई देती है। ग्रामीण कारीगरों द्वारा कुशलतापूर्वक पत्थर, लकड़ी तथा धातुओं में आकृतियाँ बनाई जाती हैं और विशेष संस्कारों के साथ उनकी प्रतिष्ठा की जाती है और विस्तृत समारोह तथा त्योहार मनाते हुए इनकी पूजा की जाती है। यह तकनीक, जिसे प्राचीन कहा जा सकता है, काफी प्रभावी तथा कलात्मक है। ऐसे कुछ विशिष्ट समुदाय हैं, जैसे मुचारी, बढ़ई तथा गुडीगारा, जो पारंपरिक रूप से इस कला का कार्य करते हैं। इन समुदायों का सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोणों से उपयोगी होगा। भुटा रिवाजों में प्रयुक्त वस्तुएँ बनाने वाले शिल्पकारों का जीवन तथा संस्कृति अभी तक छिपी हुई रही है। इस अध्ययन से इस खालीपन को भरने की आशा की जाती है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षण की स्थिति:	
संरक्षणात्मक उपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचना का स्रोत:प्रो. सेत्तार	

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	कुंबारिके परंपराएँ
	अंग्रेजी समतुल्य	Pottery
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	उडुपी जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

कुम्हारों, जो सर्वाधिक पुराने व्यवसायों में से एक व्यवसाय करते हैं, का अस्तित्व आधुनिक उद्योगों के कारण खतरे में है। मिट्टी के बर्तन बनाना एक कला है, जो कार्यात्मक और साथ-साथ कलात्मक भी है। कुंबारिके समुदाय की कुछ रुचिकर सांस्कृतिक प्रथाएँ हैं, जो एक प्रकार से मिट्टी के बर्तन बनाने की कला को जारी रखने के लिए जिम्मेदार हैं। इस कला रूप का काम करने वाले जातीय समूह कुलाला, हांडा, मूल्या और कुंबारा में पाए जाते हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षण की स्थिति:	
संरक्षणात्मक उपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचना का स्रोत: प्रो. सेत्तार	

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **धातु शिल्प**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	ढोकरा धातु कास्टिंग
	अंग्रेजी समतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	ओडिशा
	जिला/तहसील	
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

प्रसिद्ध **ढोकरा धातु कास्टिंग**, एक महत्वपूर्ण पारंपरिक जनजातीय शिल्प, पिघले हुए मोम की ढलाई की पद्धति से काँसे से बनाई जाती हैं। ढोकरा कारीगरी से बनाई गई वस्तुएँ कुलियाना (मयूरभंज), कैमती (क्योंझर), और सदेई बरेनी (ढेंकनाल) में भी पाई जा सकती हैं। ताँबे और काँसे की धातु की कृतियाँ कांतिलो (पुरी) और रेमुना (बालासोर) में पाई जा सकती हैं। प्रसिद्ध लचीली मछली गंजम जिले में बेल्लागुंठा में बनाई जाती है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षण की स्थिति:	
संरक्षणात्मक उपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचना का स्रोत:	

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **हथकरघा**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	विभिन्न वस्त्र
	अंग्रेजी समतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	लोअर सुबनसिरी
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	अपरतोनि
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए एक धर्म से असंबंधित शिल्प है।

विवरण:

छोटे सिक्का-करघे में स्थानीय रूप से बनाए गए मोटे धागे से विभिन्न वस्त्र परिधान जैसे जिकातरी (जैकेट), स्कर्ट, ब्लाउज, शॉल (पुजारी) आदि की बुनाई की जाती है और इन्हें काले, भूरे तथा पीले रंग में रंगा जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	यह महिलाओं का अंश कालिक कार्य है।
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षण की स्थिति: मिल के कपड़े की उपलब्धता के कारण यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **प्रदर्शन आभूषण**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Various items of ornaments
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	लोअर सुबनसिरी
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	अपातानी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	ये व्यक्तिगत सौंदर्यीकरण की धर्म से असंबंधित वस्तुएँ हैं।

विवरण:

विभिन्न आभूषण जैसे बड़े कार के छल्ले, मोतियों का हार, महिलाओं के वोज-प्लग, चूड़ियाँ आदि जैसे विशिष्ट अपातनी आभूषण स्थानीय स्तर पर बनाए जाते हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षण की स्थिति: आधुनिकीकरण के कारण ये शिल्प धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/**शिल्प**/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **प्रदर्शन** **टोकरी बनाना**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Cane blouse
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	लोअर सुबनसिरी
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	हिल - मिरी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह व्यक्तिगत जरूरत को पूरा करने के लिए एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।

विवरण:

यह टोकरी बनाने के शिल्प की एक दुर्लभ वस्तु है। इसमें महिलाओं के लिए एक प्रकार का ब्लाउज अथवा छाती ढकने का वस्त्र बनाया जाता है। इन लचीली बेंत की पट्टियों की बुनाई विकर्णीय समांतर (twill) तकनीक से की जाती है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह व्यक्तिगत जरूरत को पूरा करने के लिए एक अंश कालिक कार्य है।

संरक्षण की स्थिति: यह परंपरा अब लगभग विलुप्त हो चुकी है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **प्रदर्शन** **टोकरी बनाना**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	बोलुप
	अंग्रेजी समतुल्य	Cane Head-gear
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	लोअर सियांग
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	आदि
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह पुरुषों की व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने के लिए एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।

विवरण:

टाइम बेंत पट्टियों से बनी और कुंडली तकनीक से बुनी गई एक टोपी। इसमें किनारे पर बेंत का एक मोटा टुकड़ा लगा होता है। कभी-कभी इसे पक्षियों के पंखों तथा नाखूनों से सजाया जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह विशेषज्ञों का एक अंश कालिक व्यवसाय है।

संरक्षण की स्थिति: आधुनिकीकरण के कारण यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **प्रदर्शन परिधान**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	War coat
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	लोहित
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	ईदु मिशमी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह युद्ध में शरीर के कवच के रूप में प्रयोग की जाने वाली एक विशिष्ट जैकेट है।

विवरण:

यह जैकेट वानिस्पतिक रेशों और मनुष्य के बालों से बनाई जाती है। निचले हिस्से को मनुष्य के बालों से बुना जाता है। और इसमें ऊपरी हिस्से में काले तथा सफ़ेद रंग में ज्यामितीय रूपांकन होते हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह विशेषज्ञों का एक अंश कालिक व्यवसाय है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **प्रदर्शन शस्त्र**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Shield (Rhino Skin)
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	लोहित
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	खमती
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह युद्ध में प्रयोग किए जाने वाला एक रक्षात्मक शस्त्र है।

विवरण:

यह ढाल, जो गोल आकृति की होती है, गैंडे की त्वचा से बनी होती है और इसके अंदर बेंत की पकड़ बनाई जाती है। इसे सफ़ेद रंग में ज्यामितीय रूपांकन के साथ रंगा जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह विशेषज्ञों का एक अंश कालिक कार्य है।

संरक्षण की स्थिति: यह वस्तु अब लगभग विलुप्त हो चुकी है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **प्रदर्शन** **आभूषण परंपरा**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Women's ornaments
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	लोहित
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	दिगरु मिशमी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह केवल विशेषज्ञों द्वारा प्रयोग किए जाने वाला एक धर्म से असंबंधित शिल्प है।

विवरण:

असमी (लातु अथवा बिहारी) जौहरियों द्वारा विशेष रूप से जनजातीय लोगों के लिए चांदी के सिर पर बांधने वाले बैंड, चांदी के कर्ण-कुंडल, मल्टी-खारु (चौड़ी चुड़ियाँ), सिक्कों की लटकन के साथ चांदी की चेन आदि बनाई जाती थीं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	ये आभूषण असम के कुछ शिल्पकारों द्वारा बनाए जाते थे।

संरक्षण की स्थिति: यह लगभग समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **प्रदर्शन परिधान**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Woollen Jacket
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	लोहित
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	ईदु-मिशमी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।

विवरण:

यह काले, भूरे, पीले तथा सफ़ेद रंग में रंगी लकड़ी से बनाई जाने वाली एक सुंदर बिना बाजू की जैकेट है। इसमें भूरे तथा काले रंग में ज्यामितीय रूपांकनों की कतारें दर्शाई जाती हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक व्यवसाय है। ये ऊनी कपड़े तिब्बत और ऊपरी क्षेत्रों की जनजातियों से वस्तु-विनिमय में लिए जाते हैं।

संरक्षण की स्थिति: अब ये जैकेट नहीं बनाई जातीं।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **प्रदर्शन परिधान**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Priest's skirt
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	लोहित
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	लोहित
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	यह जादूगरों/पुजारियों द्वारा धार्मिक अनुष्ठान संबंधी नृत्य के दौरान पहना जाता है।

विवरण:

पुजारी/जादूगर का स्कर्ट काले, भूरे, सफ़ेद रंग में रंगे गए सूती धागे से बुना जाता है। यह स्कर्ट एक परिधान की तरह होता है और इसे अलग-अलग पट्टियों में ढीले वस्त्र की तरह पहना जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह महिलाओं का एक अंश कालिक कार्य है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन** **लकड़ी पर नक्काशी**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Wood-work
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	नागालैंड
	जिला/तहसील	तुएनसांग
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	कोनयक, फोम, चोंग, संगतम आदि (जनजातियों का नागा समूह)
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	लकड़ी पर नक्काशी करना एक धर्म से असंबंधित प्रथा है जो सिर काटने वालीजनजातियों तथा छात्रावास (मोरुंग) वाली संस्था से संबंधित है।

विवरण:

स्थानीय शिल्पकारों द्वारा लकड़ी के विभिन्न चित्र, नक्काशीदार पैनल तथा दरवाजे, घरों के नक्काशीदार स्तंभ बनाए जाते हैं। मनुष्य तथा जानवरों की मुक्त खड़ी प्रतिमाएँ, छिपकलियों, मिथकों, मानव आकृतियों, पक्षियों आदि को दर्शाने वाले थोड़ी-थोड़ी उभरी हुई नक्काशी के साथ मनुष्य तथा जानवरों के नक्काशीदार रूपांकन।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक कार्य है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **प्रदर्शन** **रंगाई और रंग भरना**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	बालों को रंगना
	अंग्रेजी समतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	नागालैंड
	जिला/तहसील	लगभग सभी जिले, विशेष रूप से तुएनसांग।
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	कोनयक, फोम, चांग, संगतम, रेंगमा, रोंगमुई आदि।
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह शस्त्रों, बेंत की टोपियों आदि की सजावट की एक धर्म से असंबंधित प्रथा है।

विवरण:

कुत्तों, घोड़ों और अन्य जानवरों के बाल पारंपरिक तरीके से लाल तथा काले रंग में रंगे जाते हैं। इन रंगे हुए बालों का प्रयोग भालों,दाओ, टोपियों, टोकरियों, बाजूबंदों, हैडबैंड, काफलेट आदि की सजावट के लिए किया जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक कार्य है।

संरक्षण की स्थिति: यह लगभग समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन** **पत्थर के पात्र**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Stone Urn
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	नागालैंड
	जिला/तहसील	तुएनसांग, कोहिमा, मोकोकचंग आदि
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	नागा (विभिन्न समूह)
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	पत्थर के कलश का प्रयोग मृत व्यक्ति का संस्कार करने के बाद उसकी अस्थियाँ दफनाने/बहाने के लिए किया जाता है।

विवरण:

पत्थर के कलश चट्टान के एक टुकड़े (विशेष रूप से चूना पत्थर) में से पत्थर खोद कर बाहर निकाल कर और इसे काट कर चिकना बना कर बनाए जाते हैं और इन्हें कलश का आकार दिया जाता है। इसमें कलश के मुख्य पात्र से अलग एक ढक्कन होता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक कार्य है।

संरक्षण की स्थिति: यह एक विलुप्त हो चुकी परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन गोदना**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Tattooing art
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	नागालैंड
	जिला/तहसील	तुएनसांग
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	कोनयक, फोम, चांग और संगतम
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक **जादुई** लौकिक त्योहार	यह एक जादुई और धर्म से असंबंधित परंपरा है।

विवरण:

काँटे अथवा बाँस की सुई द्वारा चेहरे, छाती, पिंडली की मांसपेशी पर सरल ज्यामितीय रूपांकन दर्शाते हुए गोदने बनाए जाते हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक कार्य है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन व्यक्तिगत श्रृंगार**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Bead work
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	नागालैंड
	जिला/तहसील	तुएनसांग
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	कोनयक नागा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित परंपरा है। इसका सिर काटने वाले और समुदाय के प्रमुख संबंधी संस्थाओं के संदर्भ में कुछ सामाजिक-राजनैतिक महत्व है।

विवरण:

छोटे आकार की तार तथा रंगीन मोतियों का प्रयोग करके गर्दन के बैंड, हैडबैंड, हाथों के बैंड, कानों के आभूषण और कमरबंद जैसे विभिन्न शरीर पर पहने जाने वाले आभूषण बनाए जाते हैं, रंगों के मिश्रण से ज्यामितीय रूपांकन बनाए जाते हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक कार्य है। मोतियों का काम केवल खाली समय में किया जाता है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन** **मिट्टी के बर्तन**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Clay pots
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	नागालैंड
	जिला/तहसील	तुएनसांग
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	कोनयक
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित शिल्प है।
विवरण: हाथ से छोटे पात्र बनाए जाते हैं। पात्र की सतह पर असमान सतह पर मुसल द्वारा बनाया गया उभरा हुआ पैटर्न दर्शाया जाता है।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक कार्य है।	
संरक्षण की स्थिति: यह विलुप्त हो चुकी परंपरा है।		
संरक्षणात्मक उपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचना का स्रोत:		

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन स्वैच्छिक संघ**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Morung Bachelors Dormitory
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	नागालैंड
	जिला/तहसील	नागालैंड के सभी जिले।
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	सभी नागा समूह
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित संस्था है और एक प्रकार का सामुदायिक केंद्र है।

विवरण:

इसका व्यवसाय से कोई संबंध नहीं है। मोरुंग एक आम झोंपड़ी होती है, जो प्रभावशाली तथा स्मारकीय महत्व की होती है। यह दरवाजों के पैनलों, स्तंभों, पत्तियों की सजावट और लकड़ी तथा बाँस की विभिन्न कलाकृतियों के लिए जानी जाती है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह अविवाहित युवकों का एक स्वैच्छिक संघ होता है।

संरक्षण की स्थिति: यह संस्था समाप्त होने के कगार पर है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन** **लकड़ी पर नक्काशी**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	सोनाकोंग (एओ)
	अंग्रेजी समतुल्य	Log-Drum
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	नागालैंड
	जिला/तहसील	नागालैंड के सभी जिले
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	सभी नागा समूह
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित परंपरा है।

विवरण:

एक लकड़ी का ड्रम विभिन्न आकृतियों, आकारों तथा रूपांकनों वाला होता है। यह आम तौर पर 15 से 20 मीटर की एक विशाल संरचना होती है जिसे विशेष रूप से मोरुंग अथवा गाँव के प्रवेश-द्वार के नजदीक छाया में रखा जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक कार्य है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **प्रदर्शन आभूषण**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Ornaments
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	नागालैंड
	जिला/तहसील	नागालैंड के सभी जिले
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	सभी नागा समूह
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित परंपरा है; आभूषण बनाना यहाँ की महिलाओं की कला है।

विवरण:

अर्द्ध कीमती पत्थरों, धातु की घंटियों, सूअर के दाँतों, हड्डियों के पेंडेंट सहित विविध डिजाइन वाले ये हार निश्चित रूप से आकर्षक कला-वस्तु होते हैं। इसके अतिरिक्त इनमें हाथीदांत के बाजूबंद और ऐसी अन्य चीजें होती हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह खाली समय में किए जाने वाला कार्य है।

संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन शिल्प (कृष्य उपकरण)**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	टक्कर
	अंग्रेजी समतुल्य	Choppa
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	रियांग
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	दोनों
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	इसका प्रयोग झूम कृषि (shifting cultivation) में किया जाता है।

विवरण:

यह झूम (shifting cultivation) की अधिकता वाले पेड़ों तथा इनकी छाल को काटने के लिए लोहे का एक चाकू होता है। टक्कर का प्रयोग करने वाले बहुत कम रह गए हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	झूम कृषि एक पूर्णकालिक व्यवसाय है। यह जनजातीय समूह की केवल निर्वाह अर्थव्यवस्था है।
संरक्षण की स्थिति: टक्कर का प्रयोग बहुत कम रह गया है।	
संरक्षणात्मक उपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचना का स्रोत:ए.के. दास	

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन शिल्प**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	काभि
	अंग्रेजी समतुल्य	White Shawl
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	सिक्किम
	जिला/तहसील	पूर्वी जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	द्रुकपा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह पुरुषों की पारंपरिक वेश भूषा का एक हिस्सा है।
विवरण: यह बिना सजावट वाली हाथ से बुनी गई एक सफ़ेद शॉल होती है।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	टिन फोइल बुनाई एक अंश कालिक कार्य है और इसलिए इसका कुछ आर्थिक महत्व है।	
संरक्षण की स्थिति: आधुनिकीकरण के कारण यह परंपरा धीरे-धीरे बदल रही है।		
संरक्षणात्मक उपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचना का स्रोत:ए. के. दास		

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **प्रदर्शन शिल्प**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Wood carving
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	सिक्किम
	जिला/तहसील	पूर्वी जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	द्रुकपा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	व्यक्तिगत
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	लकड़ी पर की जाने वाली कुछ नक्काशी धार्मिक होती है और बौद्ध कला से संबंधित होती है।

विवरण:

लकड़ी पर नक्काशी तथा उत्कीर्णन और मठवासी वास्तुकला के अंतर्गत की जाने वाले उभरी हुई नक्काशी के कार्य अथवा देवताओं की लकड़ी की प्रतिमाओं और घरेलू बर्तनों के रूप में इसके विभिन्न स्वरूप हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक कार्य है और इसलिए इसका कुछ आर्थिक महत्व है। इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

संरक्षण की स्थिति: यह परंपरा धीरे-धीरे समाप्त हो रही है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:ए. के. दास

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन शिल्प**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	होहो खो
	अंग्रेजी समतुल्य	Female Dress
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	सिक्किम
	जिला/तहसील	पूर्वी जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	द्रुकपा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	व्यक्तिगत
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह महिलाओं की एक पारंपरिक पोशाक है।

विवरण:

यह ऊपर से नीचे टखने तक पहनी जाती है और इसकी आस्तीन नहीं होती। यह एक शॉल के प्रकार की पोशाक होती है जिसे एक ब्रोच पिन और अंगोछे की सहायता से पहना जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	टिन फोइल बुनाई एक अंश कालिक कार्य है और इसलिए इसका निश्चित रूप से आर्थिक महत्व है।

संरक्षण की स्थिति: आधुनिकीकरण के कारण यह परंपरा धीरे-धीरे बदल रही है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:ए. के. दास

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन शिल्प**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	पोखो
	अंग्रेजी समतुल्य	Men's Dress
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	सिक्किम
	जिला/तहसील	पूर्वी जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	द्रुकपा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	दोनों
	समुदाय	व्यक्तिगत
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह पुरुषों की एक पारंपरिक पोशाक है।
विवरण: यह ढीली आस्तीनों वाला घुटनों तक की लंबाई वाला एक मोटे कपड़े का चोगा होता है। इसमें रंगीन पट्टियाँ होती हैं।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	बुनाई द्रुपका जनजाति का एक अंश कालिक कार्य है और यह निश्चित रूप से पर्याप्त आर्थिक महत्व वाला शिल्प है।	
संरक्षण की स्थिति: आधुनिकीकरण के कारण यह परंपरा धीरे-धीरे बदल रही है।		
संरक्षणात्मक उपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचना का स्रोत:ए. के. दास		

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन शिल्प**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Red Cane Tail
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	सुबनसिरी
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	अपतम
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित शिल्प वस्तु है।
विवरण:		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह शिल्प प्रथा एक अंश कालिक कार्य है।	
संरक्षण की स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।		
संरक्षणात्मक उपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचना का स्रोत:ए. के. दास		

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **गैर-प्रदर्शन शिल्प**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	जिन
	अंग्रेजी समतुल्य	Carpet
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	सिक्किम
	जिला/तहसील	उत्तरी और पूर्वी जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	कागते
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक शिल्प उत्पाद है।
विवरण:		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक व्यवसाय था और इसका आर्थिक महत्व था।	
संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है, लगभग विलुप्त हो चुकी है।		
संरक्षणात्मक उपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचना का स्रोत:ए. के. दास		

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **लकड़ी की कारीगरी**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	काठर काम
	अंग्रेजी समतुल्य	Wood Carving
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	जोरहाट और नौगांव
जातीय समूह	जाति	असमिया हिन्दू जाति
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	सत्र (मठ) में प्रयोग की जाने वाली धार्मिक सामग्री की वस्तुएँ।

विवरण:

लकड़ी की विभिन्न वस्तुएँ जैसे थोगा (धार्मिक पुस्तक के लिए स्टैंड), सिंघासन (धार्मिक वेदी), सत्र का लकड़ी का दरवाजा, गरुड़ की मूर्ति, मुख (मुखौटे), श्री कृष्ण की मूर्ति आदि लकड़ी से बनाई जाती हैं और विभिन्न रंगों में रंगी जाती हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक पूर्णकालिक कार्य है।
संरक्षण की स्थिति: आज यह एक समाप्त होती परंपरा है।	
संरक्षणात्मक उपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचना का स्रोत:	

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **सजावटी कला**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	सुनार काम
	अंग्रेजी समतुल्य	Jewellery
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	जोरहाट, गोलाघाट, बारपेटा
जातीय समूह	जाति	सुनारी (असमिया जाति)
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है। दैनिक उपयोग के लिए सोने तथा चांदी के आभूषण बनाए जाते हैं।

विवरण:

सोने के पारंपरिक आभूषण जैसे - थुरिया (कर्ण-कुंडल),ढोलगिरी (पेंडेंट), गलपट्टा (हार), जुंबिरी (पेंडेंट), चिति-पट्टी (हैड बैंड), गमखरू (चूड़ी) आदि पारंपरिक पद्धतियों से बनाए जाते हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक पूर्णकालिक व्यवसाय है।
संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।	
संरक्षणात्मक उपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचना का स्रोत:	

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **बर्तन बनाना**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Handmade Pottery
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	कामरूप (हाजो उप-मंडल)
जातीय समूह	जाति	हीरा (असमिया हिन्दू)
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।

विवरण:

खाना बनाने के और अन्य बर्तन कोयल (लच्छे) बनाने की पुरातन तकनीक से बनाए जाते हैं। सबसे पहले मिट्टी की एक लोई बनाई जाती है जिसे बर्तन का वांछित आकार देने के लिए कोयल किया जाता है। इसे पतला बनाने के लिए इसे लकड़ी के एक मुसल से पीटा जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक पूर्णकालिक व्यवसाय है।

संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **धातु शिल्प**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	कहोर बासन
	अंग्रेजी समतुल्य	Bell metal work
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	कामरूप (खर्थेबरी गाँव)
जातीय समूह	जाति	कोहर (असमिया हिन्दू जाति)
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह केवल एक गाँव में प्रचलित एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।

विवरण:

विभिन्न बर्तन जैसे काही (थाली), बाटी (कटोरा), सराई (मेहमानों को परोसने के लिए ट्रे), बान बाली (स्टैंड के साथ कटोरा), बान काही (स्टैंड के साथ थाली), सत बाटी (दिया रखने का पारंपरिक पात्र)आदि पुरानी तकनीक तथा डिजाइन से बनाए जाते हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक पूर्णकालिक व्यवसाय है और आय का प्रमुख स्रोत है।

संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती शिल्प परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **बुनाई**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Textile
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	तिरप
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	वांच और नोक्से
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	वस्त्रों की बुनाई अरुणाचल प्रदेश में एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।

विवरण:

विभिन्न वस्त्र जैसे लांघा (लंगोटी), टोकरी के लिए फीता, बैग, महिलाओं के लिए लंगोटी आदि छोटे कमर करघे में बुने जाते हैं। रुई स्थानीय स्तर पर प्राप्त की जाती है, इसकी कताई और रंगाई पुरातन तकनीकों से स्थानीय स्तर पर की जाती है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह महिलाओं का एक अंश कालिक व्यवसाय है।
संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।	
संरक्षणात्मक उपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचना का स्रोत:	

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **मिट्टी के बर्तन**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Pot Making
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	सियांग (तिरप)
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	नोकते और आदि
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह आदि और नोकते जनजातियों की एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।
विवरण: हाथों से छोटे लकड़ी के पात्र बनाए जाते हैं और एक नालीदार मुसल का प्रयोग करके इसे बिना चमक की बनावट दी जाती है।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक व्यवसाय है।	
संरक्षण की स्थिति: यह परंपरा लगभग विलुप्त हो चुकी है।		
संरक्षणात्मक उपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचना का स्रोत:		

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **चमड़े की कारीगरी**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Leather Bag
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	सुबनसिरी जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	निशि
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित शिल्प प्रथा है।

विवरण:

मिथुन की खाल से चमड़े के बैग बनाए जाते हैं। कारीगर की कला के अनुसार उभारदार नक्काशी से एक प्रकार का ज्यामितीय डिजाइन बनाया जाता था।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक अंश कालिक व्यवसाय है।

संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **आभूषण**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	तड़क
	अंग्रेजी समतुल्य	Neck Pendant
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	सियांग
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	आदि
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह समृद्ध पुरुष द्वारा पहने जाने वाले धर्म से असंबंधित आभूषण हैं। यह एक पैतृक संपत्ति भी होती है। तिब्बत से मिथुन (बॉस-फ्रोम तालिस) के बदले में अर्द्ध-कीमती पत्थर लाए जाते हैं।
विवरण: गले में पहने जाने वाला यह पेंडेंट अर्द्ध-कीमती पत्थरों से बनाया जाता है और अन्य मनके एक धातु के फ्रेम में लगाए जाते हैं। तड़क मणि (अर्द्ध-कीमती पत्थर) की संख्या से एक व्यक्ति की समृद्धि का आकलन किया जा सकता था।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक नियमित व्यवसाय नहीं है।	
संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।		
संरक्षणात्मक उपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचना का स्रोत:		

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	जिक-जीरो
	अंग्रेजी समतुल्य	Head-land (Weaving)
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	सुबनसिरी (निचली)
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	अपातानी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	ये हैडबैंड केवल संस्कार संबंधी प्रथाओं में जादू संबंधी कार्य का सूचक होते हैं।
विवरण: ये हैडबैंड हीरे के अंदर हीरे के विशिष्ट पैटर्न के साथ काले, पीले तथा भूरे रंग में कमर करघे में बुने जाते हैं।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिक स्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक नियमित व्यवसाय नहीं है।	
संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।		
संरक्षणात्मक उपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचना का स्रोत:		

नृत्य

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **संगीत-नृत्य**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	धुम्पा
	अंग्रेजी समतुल्य	A performing art with unique drum beat by a pot-bellied performer
उत्पत्ति	क्षेत्र	नयागढ़ जिले में खंडपाड़ा
	राज्य	ओडिशा
	जिला तहसील/	अविभाजित पुरी जिले में नयागढ़
जातीय समूह	जाति	मिश्रित जातियाँ
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों (दोनों)
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	त्योहार

विवरण:

धुम्पा, छः से सात फुट लंबा एक खाली सिलेंडर,भैंदियामर्दन अथवा मयी पेड़ की छाल होती है। इसे केवल वर्षा के मौसम में पेड़ के तने से निकाला जाता है। धुम्पा का प्रदर्शन करने वाले दल में एक प्रमुख गायक, चार अथवा पाँच कोरस गायक, छः अथवा आठ कठिया अथवा ढोलक बजाने वाले, एक मोटे पेट वाला आदमी और एक गोटिपूआ नृतक होता है।

एक सामान्य प्रदर्शन प्रमुख गायक द्वारा किसी सहायक वाद्य यंत्र जैसे हारमोनियम, तबला, बांसुरी, वीणा तथा मर्दल के साथ गाए जाने वाले एक गीत के साथ शुरू होता है। तने का एक हिस्सा, जो मोटे पेट वाले आदमी की ओर होता है, और जो ऊपर से लटका होता है, को नीचे लाया जाता है और ये उसके पेट से सही लय में टकराते हैं और इससे एक गहरी तथा मधुर ध्वनि उत्पन्न होती है और तने पर कठिया मारने से भी ध्वनि निकलती है। इस वाद्य यंत्र को धुम्पा कहा जाता है।

धुम्पा की उत्पत्ति गंजम जिले से हुई जहाँ कवि सूर्यबल देव रथ की कविताएं गाई जाती थीं। खंडपाड़ा के राजा ने इस गीत तथा वाद्य यंत्र को संरक्षण दिया। हरिहर सिंह मर्दराज हमेशा सैर-सपाटे के दौरान अपने साथ एक धुम्पा दल को ले जाते थे।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	खंडपाड़ा, नयागढ़ के भूतपूर्व राजा द्वारा संरक्षित
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	ज्ञात नहीं

संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय :इसे संरक्षण दिए जाने की आवश्यकता है; बीबीसी ने 1990 के दशक की शुरुआत में इस प्रदर्शन नृत्य कला पर एक वृत्तचित्र बनाया था।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत :खंडपाड़ा के वर्तमान राजाविभूति भूषण मर्दराज के साथ व्यक्तिगत चर्चा

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **संगीत-नृत्य**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	चैती घोड़ा नाच
	अंग्रेजी समतुल्य	Horse Dance in April
उत्पत्ति	क्षेत्र	तटीय ओडिशा
	राज्य	ओडिशा
	जिला तहसील/	बालासोर, पुरी, कटक जिले
जातीय समूह	जाति	मछुआरा
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	मछुआरा
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	धार्मिक

विवरण:

चैतीघोड़ा, जिसे अप्रैल माह में मनाया जाता है, का जातीय दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्व है। नागेंद्र नाथ महापात्रा द्वारा बालासोर जिले में चैतीघोड़ा उत्सव से एकत्रित कुछ लोक गीत ओडिशा की समुद्री परंपराओं के संबंध में शब्दचित्र उपलब्ध कराते हैं। चैत्र (अप्रैल) की पूर्णिमा को मनाए जाने वाले इस उत्सव में एक नकली घोड़ा और कुछ कलाकार होते हैं। वे 16वीं शताब्दी में संत अच्युतानन्द दास द्वारा लिखित एक ग्रंथ कैबर्ता गीता सुनाते हैं। बसेली के रूप में घोड़े की पूजा और इसके देवी लक्ष्मी के रूप में बदलने की प्रथा विभिन्न पहलुओं की गहन जानकारी दे सकती है। यहाँ यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि घोड़े के सिर वाले एक देवता हयाग्रीवा, जिनका मंदिर असम में हाजो में है, को भगवान विष्णु का एक अस्थायी रूप माना जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति विवरण समूह का/	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	

संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय :

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत :

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	लंकापोड़ी यात्रा
	अंग्रेजी समतुल्य	A performing art based on Ramayana theme
उत्पत्ति	क्षेत्र	दासपल्ला
	राज्य	ओडिशा
	जिला तहसील/	नयागढ़
जातीय समूह	जाति	मिश्रित जातियाँ
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	त्योहार

विवरण:

पिछले 200 वर्षों से मनाया जा रहा 15 दिन चलने वाला लंकापोड़ी उत्सव सामान्यत: प्रति वर्ष अप्रैल माह में मनाया जाता है। दासपल्ला के पीठासीन देवता भगवान महावीर को समर्पित यह त्योहार 19वीं शताब्दी के शुरुआत का है जब कृष्ण चंद्र देव भंजा दासपल्ला के राजा थे। 'रामायण' पर केन्द्रित यह उत्सव 'रामनवमी' के दिन शुरू होता है। उत्सव के दौरान महावीर के मंदिर के साथ लगभग 3,000 वर्ग फुट के क्षेत्र में एक हरी पत्तियों वाली छत के नीचे 'रामलीला' का मंचन किया जाता है। इस उत्सव का मुख्य आकर्षण रावण का 25-फुट ऊंचा पुतला होता है जिसे समापन के दिन दहन किया जाता है। यांत्रिक रूप से चालित भगवान राम के धनुष से 'ब्रह्मास्त्र' 100 मीटर की दूरी से चलाया जाता है और रावण की छाती पर जा कर लगता है। उसके बाद भगवान राम माता सीता के साथ 15-फुट ऊंचे और 31-फुट चौड़े और ओडिशा में सबसे अनूठा समझे जाने वाले 'पुष्पकविमान' में बैठ कर अयोध्या वापस लौटते हैं। महावीर मंदिर की सीमा पर अयोध्या में 'भगवान राम' के राज्याभिषेक के साथ इस उत्सव का समापन होता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	खराब

संरक्षण की स्थिति :विलुप्त होने की कगार पर

संरक्षणात्मक उपाय :

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचना का स्रोत :केशाब जेना, जिला संवाददाता, पायोनियर

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	दानदा नट
	अंग्रेजी समतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूरा ओडिशा
	राज्य	ओडिशा
	जिला तहसील/	
जातीय समूह	जाति	निम्न जातियाँ
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	धार्मिक-लौकिक (शिव-पार्वती)
विवरण: दानदा नट (अन्य रूप: मेघनाद (छत्तीसगढ़ के गोंड), मंडा उत्सव (बिहार), चरक पूजा (बंगाल और पूर्वोत्तर ओडिशा), झामु नाच, उड़ा पर्व, जहनी यात्रा, पटुआ यात्रा।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/		
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	खराब	
संरक्षण की स्थिति :		
संरक्षणात्मक उपाय :		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचना का स्रोत :केशाब जेना, जिला संवाददाता, पायोनियर		

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	रणपा नृत्य
	अंग्रेजी समतुल्य	Stilt Dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	गंजम
	राज्य	ओडिशा
	जिला तहसील/	
जातीय समूह	जाति	चरवाहा समुदाय
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

रणपा, जिसका शाब्दिक अर्थ है पाबांसा, दक्षिण ओडिशा के चरवाहा समुदाय के बीच प्रचलित है। इस समुदाय के युवक डोल यात्रा और गिरि गोवर्धन पूजा त्योहार के दौरान इस नृत्य का प्रदर्शन करते हैं। इसके साथ कोई सहायक वाद्य यंत्र नहीं होते, कलाकार केवल कृष्ण के बाल्यावस्था के गीत गाते हैं।

नृत्य, जिसे लगभग भुला दिया गया था, को नरेन्द्रपुर के पदमश्री भगवान साहू द्वारा पुनर्जीवित किया गया था।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	

संरक्षण की स्थिति :

संरक्षणात्मक उपाय :

उदाहरण (फोटो आदि):

चित्र

सूचना का स्रोत :

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	Puppet Dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	ओडिशा
	जिला तहसील/	
जातीय समूह	जाति	मिश्रित जातियाँ
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों (दोनों)
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

ओडिशा

ओडिशा राज्य में कठपुतली तमाशा के तीन स्वरूप प्रचलित हैं। ये हैं दस्ताने ***(कुंधेई-नाच)***, परछाई ***(रावणछाया)***, छड़ी ***(काठी कुंधेई)*** और तार ***(गोपलीला कुंधेई)*** स्वरूप।

कुंधेई नाच में दस्ताना कठपुतलियाँ लकड़ी के तीन टुकड़ों से बनाई जाती हैं जिनमें सिर और दो हाथ होते हैं और इनमें उँगलियाँ डालने के लिए छेद होते हैं। इन लकड़ी के टुकड़ों को एक लंबी पोशाक में जोड़ा जाता है। इस पोशाक अथवा परिधान में कठपुतली चलाने वाले के हाथ भी छिप जाते हैं। ओडिशा में दो प्रकार के दस्ताना कठपुतली चलाने वाले हैं - एक हाथ वाले और दो हाथ वाले। एक हाथ वाली कठपुतली के मामले में कठपुतली चलाने वाला अकेला होता है। वह एक हाथ से कठपुतली को चलाता है और दूसरे हाथ से ***ढोलक*** (एक संगीत वाद्य यंत्र) बजाता है। ये कठपुतली चलाने वाले ओडिशा के कटक जिले के *तारीकुंड* से आते हैं। दो हाथों वाली कठपुतलियों के मामले में दो कठपुतली चलाने वाले मिल कर प्रदर्शन करते हैं। यहाँ एक व्यक्ति दो कठपुतलियों को चलाता है और दूसरा व्यक्ति ढोलक बजाता है परंतु दोनों गाते हैं और संवाद बोलते हैं। कठपुतली चलाने वाले स्वयं को पर्दे के पीछे छुपाते नहीं हैं। ये ओडिशा के कटक जिले के *मंत्रीपाड़ा* से आते हैं।

रावनछाया: कठपुतली के इस स्वरूप में चमड़े की कट-आउट आकृतियाँ प्रयोग की जाती हैं। इसे सफ़ेद कपड़े की स्क्रीन के पास तेल के दिये के सामने रखा जाता है और दूसरी ओर बैठे दर्शकों को छाया स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। अंगों को हिलाया नहीं जाता है। कट-आउट आकृति को एक छड़ी के टुकड़े के साथ लगाया जाता है जिसे कठपुतली चलाने वाले द्वारा स्क्रीन के निचले किनारे के नीचे पकड़ा जाता है जिससे केवल कठपुतली की परछाई स्क्रीन पर गिरती है। जहाँ सुंदर सजावटी वस्तुओं को स्थिर रखा जाता है, चरित्रों के कट-आउट को दृश्यों की मांग तथा गति के अनुसार किनारे की ओर ले जाया जाता है। रामायण के अध्याय दर्शाए जाते हैं। छाया कठपुतली चलाने वाले ओडिशा के ढेंकनाल जिले के *ओडसा* से आते हैं।

काठी कुंधेई: कठपुतली के इस स्वरूप में कठपुतलियाँ छड़ियों से चिपकाई जाती हैं और इन्हें जमीन से ऊपर हवा में रखा जाता है और नीचे से तार द्वारा नियंत्रित किया जाता है। सिर के अतिरिक्त दोनों हाथों और कभी-कभी टाँगों को भी हिलाया जाता है। छड़ी कठपुतली नाटकों के लिए पुराणों, फंतासी और सामाजिक विषयों

पर कहानियाँ रूपांतरित की जाती हैं और संगीतकारों का एक समूह बीच-बीच में संगीत बजाता है। ओडिशा में छड़ी कठपुतली चलाने वाला केवल एक समूह है जो *क्योंझर* में स्थित है। ***काठी कुंधेई:*** कठपुतली के इस स्वरूप में कठपुतलियाँ छड़ियों से चिपकाई जाती हैं और इन्हें जमीन से ऊपर हवा में रखा जाता है और नीचे से तार द्वारा नियंत्रित किया जाता है। सिर के अतिरिक्त दोनों हाथों और कभी-कभी टाँगों को भी हिलाया जाता है। छड़ी कठपुतली नाटकों के लिए पुराणों, फंतासी और सामाजिक विषयों पर कहानियाँ रूपांतरित की जाती हैं और संगीतकारों का एक समूह बीच-बीच में संगीत बजाता है। ओडिशा में छड़ी कठपुतली चलाने वाला केवल एक समूह है जो *क्योंझर* में स्थित है। ***गोपलीला कुंधेई:*** तारों से बंधी कठपुतलियाँ सिर से कमर तक की लकड़ी की आधी-कठपुतलियाँ होती हैं जिनकी बाँहें अलग हो जाती हैं। कमर से नीचे केवल एक लंबी पोशाक होती है। पहले मोर पंखों से बनी एक चटाई का प्रयोग पृष्ठभूमि के लिए किया जाता था परंतु अब रंगे हुए पर्दे का प्रयोग किया जा रहा है। तारों से बंधी कठपुतलियों में पुराणों, फंतासी और सामाजिक विषयों पर आधारित काव्य नाटकों को आधार बनाया जाता है और इनमें नृत्य के बहुत सारे अंतराल और हास्य नाटिकाएँ भी होती हैं। कटक, पुरी, गंजम और ढेंकनाल जिलों में तार से बंधी कठपुतली चलाने वाले पाए जाते हैं।	
परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	
संरक्षण की स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।	
संरक्षणात्मक उपाय :	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचना का स्रोत :	

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	रावण छाया
	अंग्रेजी समतुल्य	*Puppet dance*
उत्पत्ति	क्षेत्र	पल्लहड़
	राज्य	ओडिशा
	जिला तहसील/	अंगुल/पल्लहड़
जातीय समूह	जाति	भाट
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला/दोनों (दोनों)
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	लौकिक/धर्म-निरपेक्ष

विवरण:रावण छाया

भारत में छाया कठपुतली थिएटर की परंपरा बहुत पुरानी है और यह केवल आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और ओडिशा जैसे राज्यों में फल-फूल रही है।

ओडिशा के छाया कठपुतली थिएटर को रावण छाया के नाम से जाना जाता है। इसका नाम यह इसलिए रखा गया है क्योंकि छाया अथवा शैडो को अशुभ माना जाता है और इसलिए इसे रावण के चरित्र से जोड़ा जाता है जिसे बुराई का प्रतीक माना जाता है। भारत की सभी शैलियों में से यह शैली सबसे सरल है और इसमें कोई रंग नहीं होता और नृत्य तथा युद्ध के दृश्य लगभग न के बराबर होते हैं। सरल भाव-भंगिमाओं के साथ पूर्ण रूप से अलग-अलग की गई आकृतियाँ विचित्र रामायण के विभिन्न पाठों का चित्रण करती हैं। इसके साथ खंजनी (एक डफ के प्रकार का वाद्य यंत्र) और झांझ बजाए जाते हैं। संगीतकार स्क्रीन के सामने खड़े हो कर गाना गाता है। यद्यपि अधिकतर कठपुतली आकृतियाँ हिरण की खाल से बनाई जाती हैं, परंतु आसुरी चरित्र वाली आकृतियाँ बारहसिंगा की खाल से बनाई जाती हैं। सफ़ेद पर्दे के पीछे से कठपुतली को चलाने के लिए प्रत्येक कठपुतली को बाँस की एक पतली छड़ी के साथ जोड़ा जाता है। अरंडी के तेल से जलाए जाने वाले एक बड़े मिट्टी के दिये से प्रकाश किया जाता है। रावण छाया का प्रदर्शन करने वाले कलाकार भाट समुदाय के लोग थे जिन्हें पल्लहड़ के स्थानीय राजा द्वारा भूमि अनुदान के रूप में संरक्षण दिया गया था। जहाँ सभी अन्य भाटों ने अपना पेशा छोड़ दिया था वहीं केवल एक गुरु जिन्होंने अत्यधिक गरीबी के बावजूद इस व्यवसाय को जारी रखा वे थे कठिनन्द दास। वर्ष 1980 में उन्हें प्रतिष्ठित संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया और वर्ष 1987 में उनका देहांत हुआ। इस कला की ओर इस समुदाय की उदासीनता को देखते हुए कठिनन्द ने अन्य समुदायों से शिष्यों को सम्मिलित किया। उनके सबसे वरिष्ठ शिष्य कोल्हा चरण साहू ने "रावण-छाया नाट्य संसद" संस्थान के माध्यम से इस परंपरा को जीवित रखा है।

इस संसद में कठपुतली बनाने, इसे चलाने, तकनीक तथा संगीत के विभिन्न प्रदर्शन करने वाला एक सम्पूर्ण समूह है और इसमें युवाओं को इससे संबंधित प्रशिक्षण दिया जाता है। यह प्रदर्शन समूह अब कठपुतलियों के दो सेट के साथ प्रदर्शन करता है, प्रथम जिन्हें पुरानी पारंपरिक शैली के अनुसार डिजाइन तथा कट किया जाता है और दूसरी पुरी की पारंपरिक *पट्टा चित्रकारी* के मॉडल पर डिजाइन तथा कट की जाती हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	रावण छाया नाट्य संसद, पल्लहड़
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	खराब
संरक्षण की स्थिति :संगीत नाटक द्वारा इसे बचाने के प्रयास किए गए हैं परंतु यह शिल्प राज्य के सांस्कृतिक परिदृश्य से तेजी से गायब हो रहा है।	
संरक्षणात्मक उपाय :	
उदाहरण :(आदि फोटो)	
सूचना का स्रोत :	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	राजा-रानी नृत्य (मानव मुखौटा), दैवीय मुखौटा, आसुरी मुखौटे, पशु मुखौटे
	अंग्रेजीसमतुल्य	Mask
उत्पत्ति	क्षेत्र	पुरी (मानव मुखौटे), पशु मुखौटा (गंजम जिला)
	राज्य	ओडिशा
	जिला/तहसील	पुरी, काबी सूर्यनगर (गंजम)
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों (दोनों)
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	अर्द्ध-धार्मिक

विवरण:

ओडिशा में तीन प्रकार के मुखौटा नृत्य किए जाते हैं, मानव मुखौटे, दैवीय मुखौटे और पशु मुखौटे। मुखौटे कुट्टी (साँचे में ढली हुई कागज की लुगदी) से बनाए जाते हैं और इन्हें चमकीले रंग में रंगा जाता है।

मानव मुखौटा:

सबसे प्रसिद्ध मानव-मुखौटे राजा-रानी के हैं। धड़, सिर और बाँहों वाले ये मुखौटे नृतकों को छुपा लेते हैं जो फ्रेम के अंदर चले जाते हैं। जहाँ मुखौटे शरीर के कमर से ऊपर के हिस्से को ढकते हैं, रंगीन कपड़े से बना एक बड़ा स्कर्ट नृतक के चारों ओर बांधा जाता है।

मुखौटा नृत्य की यह विधा ढोल यात्रा (मार्च में निकाली जाने वाली) से संबंधित है जब सजी हुई पालकियों में राधा-कृष्ण की प्रतिमाएँ यात्रा में ले जाई जाती हैं और मुखौटा नृतक आगे नृत्य करते हैं।

क्षेत्र: पुरी जिला

दैवीय मुखौटे:

दैवीय मुखौटा-नृत्य अप्रैल माह में आयोजित की जाने वाली पुरी की शाही यात्रा से संबधित है। यह त्योहार केवल इस मंदिरों के नगर में मनाया जाता है जिसमें विभिन्न शाही यात्राओं में अन्य पौराणिक चरित्रों के साथ इन दैवीय मुखौटों की शोभा यात्रा निकाली जाती है।

इन मुखौटों को बनाने वाले भी पुरी और इसके आस-पास के गाँवों में रहने वाले पारंपरिक चित्रकार होते हैं। मुखौटे संबंधित आखाडा घर में संरक्षित किए जाते हैं।

आसुरी मुखौटे:

क्षेत्र: पुरी नगर; रावण और कुंभकरण।

पशु मुखौटा नृत्य

पशु मुखौटा नृत्य गंजम जिले के गाँवों में प्रचलित हैं। विशेष रूप से ठकुरानी यात्रा के दौरान जब

मूर्तियों को सड़क पर लाया जाता है, पशु मुखौटा नृतक जुलूस के आगे नृत्य करते हैं। विवाह समारोह के दौरान भी वे दूल्हे की बारात के दुल्हन के घर की तरफ जाते समय आगे नृत्य करते हैं। इस क्षेत्र के तीन विशिष्ट पशु मुखौटा नृत्य हैं बाघ, बैल और घोड़ा। दो व्यक्ति केन के फ्रेम में जाते हैं और अपने आप को छुपा लेते हैं। उनके पैर पशुओं के पैर बन जाते हैं। गंजम को इस कला स्वरूप का जनक कहा जाता है।	
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	कवि सूर्य नगर समूह
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	खराब
संरक्षणकी स्थिति:समाप्त होती परंपरा है।	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि): चित्र गंजम का बाघ नृत्य	
सूचनाका स्रोत:डी. एन. पटनायक (2004), ओडिशा के लोक नृत्य, ओडिशा संगीत नाटक अकादमी, भुवनेश्वर।	

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य**प्रदर्शन** **लोक नृत्य**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजी समतुल्य	War Dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	नागालैंड
	जिला तहसील/	तुएनसांग
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	कोनयक
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह योद्धाओं द्वारा सिर का शिकार करने का अभियान सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद किए जाने वाला एक धर्म से असंबंधित नृत्य है।

विवरण:

युद्ध नृत्य पुरुष योद्धाओं द्वारा पूरे अस्त्र-शस्त्र जैसे ढाल, भालों, दाओस, टोप, बंदूकों और ढ़ोल के साथ किया जाता है। इसमें शरीर और पैरों का जोरदार संचालन और बीच-बीच में गूंज की और चिल्लाने की आवाजें निकाली जाती हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	यह प्रदर्शन कला का एक हिस्सा है और कोई पूर्णकालिक/अंश कालिक व्यवसाय नहीं है।

संरक्षण की स्थिति :यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय :

उदाहरण :(फोटो आदि)

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य **नृत्य**	
परंपरा का नाम	स्थानीय	सोरथी
	अंग्रेजी समतुल्य	Folk Dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	सिक्किम
	जिला तहसील/	दक्षिण और पश्चिम जिले
जातीय समूह	जाति	गुरुंग
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित लोक नृत्य है।
विवरण: यह ढ़ोल नगाड़े के साथ किए जाने वाला एक समूह नृत्य है।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/		
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	यह विशेष अवसरों पर किया जाता है।	
संरक्षण की स्थिति :यह एक समाप्त होती परंपरा है।		
संरक्षणात्मक उपाय :कुछ खास नहीं।		
उदाहरण (फोटो आदि) :		
सूचना का स्रोत:डॉ. ए. के. दास		

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	पुतला नाच
	अंग्रेजी समतुल्य	Puppet Dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	असम
	जिला तहसील/	निचला असम जिला
जातीय समूह	जाति	असमिया हिन्दू जाति
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह मनोरंजन के लिए किए जाने वाला एक धर्म से असंबंधित प्रदर्शन था।

विवरण:

ये कठपुतलियाँ राजस्थानी कठपुतलियों के समान होती हैं जो विभिन्न चरित्रों का वर्णन करती हैं। इन्हें तार का प्रयोग करके चलाया जाता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	यह सही मायनों में एक पूर्ण कालिक व्यवसाय नहीं था। फिर भी यह आय का एक स्रोत था।

संरक्षण की स्थिति :यह पूरी तरह से विलुप्त हो चुकी है। असम के राजकीय संग्रहालय में केवल 19वीं शताब्दी के पुतलों के कुछ उदाहरण संरक्षित रखे गए हैं।

संरक्षणात्मक उपाय :

उदाहरण (फोटो आदि) :

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	भावना (अंकिया नट)
	अंग्रेजी समतुल्य	One Act Play (Traditional Theatre)
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	असम
	जिला तहसील/	ब्रह्मपुत्र घाटी के सभी जिले
जातीय समूह	जाति	असमिया हिन्दू जाति
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह प्रदर्शन नामघर (प्रार्थना कक्ष) में प्रदर्शित की जाने वाली वैष्णव धर्म की परंपरा से संबंधित है।

विवरण:

"अंकिया नट"अथवा "भावना" संत कवि श्री शंकरदेव द्वारा प्रदर्शित किए जाने वाला 16वीं शताब्दी का एक नाटक है। यह रामायण अथवा महाभारत के अध्यायों पर आधारित एक प्रकार का नृत्य नाटक है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति वरणसमूह का वि/	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	यह कलाकारों का नियमित व्यवसाय नहीं है।

संरक्षण की स्थिति :यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय :

उदाहरण(फोटो आदि):

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	उजपली
	अंग्रेजी समतुल्य	Dance of Vaishnava Monastery (Semi-classical dance)
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	असम
	जिला तहसील/	ब्रह्मपुत्र घाटी के सभी जिले
जातीय समूह	जाति	असमिया हिन्दू जाति
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पारंपरिक रूप से पुरुष, अब महिलाएं भी यह प्रदर्शन करती हैं।
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह वैष्णव 'सत्र' (मठ) से संबंधित एक नृत्य कला है।

विवरण:

यह 'खुल' (आघात करने वाला अस्त्र) को बजा कर और शरीर को धीरे-धीरे हिला कर तथा धीमी गति के नृत्य के साथ किए जाने वाला नृत्य प्रदर्शन है। सामान्यत: इसके साथ 'अभिनय' (अभिव्यक्ति) किया जाता है, और इसमें नृतक 16वीं शताब्दी की पोशाकें पहनते हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	यह कलाकारों का नियमित व्यवसाय नहीं है।

संरक्षण की स्थिति :यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय :

उदाहरण (फोटो आदि) :

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	हाथी दातर काम
	अंग्रेजी समतुल्य	Ivory work (Decorative Art)
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	असम
	जिला तहसील/	कामरूप जिला
जातीय समूह	जाति	असमिया हिन्दू जाति
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	इसमें विशिष्ट समारोहों में प्रयोग के लिए धर्म से असंबंधित वस्तुएँ बनाई जाती हैं।
विवरण: हाथी दाँत से नक्काशी तथा उत्कीर्णन करके दैनिक उपयोग की विभिन्न वस्तुएँ बनाई जाती हैं।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/		
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	यह एक पूर्णकालिक व्यवसाय है।	
संरक्षण की स्थिति :यह एक समाप्त होती परंपरा है।		
संरक्षणात्मक उपाय :		
उदाहरण (फोटो आदि) :		
सूचना का स्रोत:		

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	देवधानी
	अंग्रेजी समतुल्य	Folk-dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	असम
	जिला तहसील/	ऊपरी असम जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	सोनोवाल काचरी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह एक जादूई नृत्य है जिसमें नृत्य अर्द्ध-चेतन में चला जाता है।

विवरण:

यह महिला नृतक द्वारा किए जाने वाला एकल नृत्य प्रदर्शन है। यह नृत्य की धीमी लय-ताल के साथ शुरू होता है और धीरे-धीरे सिर को जोरदार तरीके से हिलाया जाता है और नृतकी अपने लंबे बालों को दक्षिणावर्त तथा वामावृत दिशा में घुमाती है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	यह कलाकार का नियमित व्यवसाय नहीं है।
संरक्षण की स्थिति :यह परंपरा लगभग विलुप्त हो चुकी है।	
संरक्षणात्मक उपाय :	
उदाहरण (फोटो आदि) :	
सूचना का स्रोत:	

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	राधा प्रेम लीला
	अंग्रेजी समतुल्य	Folk theatre depicting the divine love of Radha-Krishna
उत्पत्ति	क्षेत्र	गंजम
	राज्य	ओडिशा
	जिला तहसील/	पूरा गंजम
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

राधा-कृष्ण लीला एक लोक नृत्य है जिसे पूरे गंजम में रंगों के साथ मनाया जाता है। इस नृत्य का विषय श्री कृष्ण की उनकी प्रेमिका श्री राधा और उनकी अन्य गोपिका सखियों के साथ प्रेम कहानी का वर्णन है। कृष्ण एक चूड़ी बेचने वाली महिला, फूल बेचने वाली महिला, गोदना बनाने वाली महिला के रूप में अपनी प्रेमिका की एक झलक देखने के लिए श्री राधा के भीतरी कक्ष में प्रवेश करते हैं।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	खराब

संरक्षण की स्थिति :

संरक्षणात्मक उपाय :

उदाहरण (फोटो आदि) :

चित्र

सूचना का स्रोत:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	फरकांति
	अंग्रेजी समतुल्य	War-dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	असम
	जिला तहसील/	सौइतपुर और कामरूप
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	राभा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह बुजुर्ग व्यक्तियों की मृत्यु की बरसी पर प्रदर्शित की जाने वाली प्रदर्शन कला है।

विवरण:

इस नृत्य में पुरुष तथा महिला दोनों भाग लेते हैं। पुरुष एक लंबी पोशाक पहनते हैं जिसके साथ एक कमरबंद और एक क्रॉस-बेल्ट पहनी जाती है। इस नृत्य के लिए पगड़ी अनिवार्य है। महिलाएं छाती तक मेखाला (एक प्रकार की स्कर्ट) पहनती हैं और इसके साथ एक कमरबंद (मेथोनी) पहनती हैं। नृतकों के हाथों में तलवार और एक ढाल होती है और वे शिंग (सींग), पीपा (बांसुरी) और ढ़ोल (वाद्य यंत्र) के साथ नृत्य करते हैं। इस नृत्य में सहायक गायकों द्वारा करुणाजनक गाने गाए जाते हैं। यह नृत्य थोड़ा फुर्तीला होता है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	राभा, असम के मैदानों की एक जनजाति
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	आज इस नृत्य का कोई आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षण की स्थिति :यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय :वर्तमान में कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि) :

सूचना का स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	फोइजिमा फोना
	अंग्रेजी समतुल्य	War-dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	असम
	जिला तहसील/	गोलपारा/कोकराझार
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	बोडो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह आंशिक रूप से धार्मिक नृत्य है।

विवरण:

नृतक इस नृत्य के लिए विशेष पोशाकें पहनते हैं। नृतक इस प्रदर्शन के दौरान हमेशा तलवार तथा ढाल अपने हाथों में रखते हैं। निम्नलिखित तरीके से योद्धा के तलवार चलाने के कौशल की जांच की जाती है। योद्धा से एक प्रकार के लाल कीड़ों के घोसले वाले एक पेड़ के नीचे खड़ा होने के लिए कहा जाता है। घोसले को एक छड़ी से तोड़ा जाता है ताकि कीड़े योद्धा के ऊपर गिरें। योद्धा अपने शरीर के चारों ओर तेजी से अपनी तलवार चलाता है ताकि कीड़ा उसके ऊपर न गिरे।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	बोडो, असम के मैदानों की एक जनजाति
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	आज इस नृत्य का कोई आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षण की स्थिति :यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय :कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि) :

सूचना का स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	खड सुकु मिन सियम
	अंग्रेजी समतुल्य	Dance of the happy soul
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मेघालय
	जिला तहसील/	शिलोंग
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	खासी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह गैर-ईसाई खासी लोगों का उत्सव नृत्य है।

विवरण:

यह नृत्य अविवाहित युवकों तथा युवतियों द्वारा किया जाता है। युवतियाँ अपनी सबसे अच्छी पोशाक और सोने के आभूषण पहनती हैं। युवक पगड़ी (हैड-बैंड) तथा धोती (कमर से नीचे पहने जाने वाला परिधान) और एक पारंपरिक जैकेट पहनते हैं। युवतियाँ पंखिलियत नामक एक विशेष हैड बैंड पहनती हैं। यह नृत्य धीमी गति से किया जाता है - विशेष रूप से युवतियों की गति। कभी-कभी युवक और युवतियाँ साथ-साथ नृत्य करते हैं और कभी-कभी अलग-अलग करते हैं। आम तौर पर युवक अपने हाथ में तलवार ले कर नृत्य करते हैं। नृत्य में निम्नलिखित संगीत वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है - बिशि (बांसुरी), कबंग (ड्रम) और तंगमूरी (एक प्रकार की लंबी बांसुरी)।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	शिलोंग (मौलाई) में गैर-ईसाई खासी इस नृत्य से संबंधित हैं।
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	इस नृत्य का कोई आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षण की स्थिति :यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय :सत्तर के दशक में इस नृत्य को पुनरुजीवित करने का प्रयास किया गया था।

उदाहरण (फोटो आदि) :

सूचना का स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	नोक्रेम
	अंग्रेजीसमतुल्य	Folk-dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	मेघालय
	जिला/तहसील	खासी जयंतिया हिल्स
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	खासी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह समुदाय के कल्याण के लिए प्रदर्शित की जाने वाली एक धर्म से असंबंधित प्रदर्शन कला है।

विवरण:

यह विशिष्ट पोशाकें तथा सोने के पारंपरिक आभूषण और अर्द्ध-कीमती पत्थर पहनने वाले अविवाहित युवकों तथा युवतियों द्वारा प्रदर्शित किए जाने वाला धीमी गति से किए जाने वाला नृत्य है। युवतियाँ चांदी की एक विशिष्ट सिर पर पहने जाने वाली पोशाक पहनती हैं और युवक एक प्रकार के पंख के साथ पगड़ी पहनते हैं। वे धोती (कमर के नीचे पहने जाने वाला एकल परिधान) और काले रंग की जैकेट पहनते हैं। यह शरीर की धीमी मुद्राओं और बिना किसी हाथों की मुद्रा तथा चेहरे की मुद्राओं (अभिनय) के किए जाने वाला नृत्य है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	गैर-ईसाई खासी
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस नृत्य का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है। यह वर्ष में एक बार प्रदर्शित की जाती है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	देवखरी नृत्य और ढीली नाती
	अंग्रेजीसमतुल्य	Gur Dances and Slow Nati
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	कुल्लू
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	अन्य, मेलों तथा त्योहारों में गुर तथा ग्रामीण
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	देवखरी धार्मिक समारोह में। ढीली नाती मेलों तथा उत्सवों में।

विवरण:

देवखरी कुल्लू जिले के देवताओं तथा देवियों का एक नृत्य है। देवता के विशेष आयोजन पर देवता का चेला देवता के शस्त्रों के साथ यह नृत्य करता है। परंतु समय के साथ-साथ यह उत्सव भी समाप्त होता जा रहा है।

कुल्लू की ढीली नाती में कम से कम बीस प्रकार की नृत्यकला होती है। अब इस प्रकार की नृत्यकला और इस नृत्य के साथ चयनित गाने अब प्रचलन में नहीं हैं। इसलिए इन नृत्यों का संरक्षण करना अनिवार्य है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	राजपूत और बाजगी (लुहार)
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	सामान्य और कम

संरक्षणकी स्थिति:समाज पर प्रतिकूल प्रभाव के कारण धीरे-धीरे यह परंपरा समाप्त हो रही है।

संरक्षणात्मकउपाय:वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी और रिकॉर्डिंग।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	मिसानु
	अंग्रेजीसमतुल्य	Folk dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	उत्तरी त्रिपुरा जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	नेहाई
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	महिला
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह महिलाओं द्वारा त्योहार पर किए जाने वाला लोक नृत्य है।

विवरण:

मिसानु एक लोक नृत्य कला है जिसमें महिलाओं का समूह भाग लेता है। पुरुष ड्रम तथा बांसुरी बजाते हैं। महिलाएं अपने सबसे अच्छे कपड़े और आभूषण पहन कर गानों तथा ड्रम की आवाज पर नृत्य करती हैं। इस नृत्य में सरल चरण होते हैं और हाथों तथा शरीर की मुद्राओं में अधिक बदलाव नहीं होता।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	यह त्योहार के समय महिलाओं द्वारा किए जाने वाला एक लोक नृत्य है।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस नृत्य का कोई आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:अब तक कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	लुडेम
	अंग्रेजीसमतुल्य	Hunting Dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	मणिपुर
	जिला/तहसील	मोइरंग
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	अनल
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह नृत्य सफल शिकार के बाद किया जाता है। इसका कोई धार्मिक महत्व नहीं है।

विवरण:

यह नृत्य पुरुषों तथा महिलाओं दोनों द्वारा ललखुव्ङ्ग (टोली) और खुव्ङ्ग (ड्रम) आदि के साथ किया जाता है। यह एक विजय नृत्य है और इसे तेज गति तथा लय-ताल के साथ किया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	अनल के सभी वंश समूह
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस नृत्य का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	चिरो
	अंग्रेजीसमतुल्य	Bamboo Dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह विशेष अवसरों पर किए जाने वाला एक धर्म से असंबंधित नृत्य है।

विवरण:

दो युवा पुरुष अपने दोनों हाथों से लगभग 8 फुट की लंबाई के 4-6 बांस को समांतर दूरी पर पकड़ते हैं। समांतर दूरी पर रखे गए बांस एक विशिष्ट ताल पर एक दूसरे के पास लाए जाते हैं और फिर पुन: दूर कर दिए जाते हैं और इनके बीच के खाली स्थान में अपने सबसे अच्छे कपड़े तथा आभूषण पहने युवतियाँ दो बाँसों के बीच अपने पैर इस प्रकार डालती हैं कि वे एक निर्धारित लय में बाँसों के बंद होने से पहले बाहर कूद जाती हैं। यह कई घंटों तक चलता है और लड़कियां अपने हाथों तथा शरीर की गति के साथ अपना कौशल प्रदर्शित करती हैं। और ये लड़कियां बाँसों के टकराने की आवाज के साथ लय बनाती हैं। इस नृत्य में दो स्टेप होते हैं। कंत लुयांग और खावती।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सभी मिज़ो समूह
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस नृत्य का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह परंपरा धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। केवल विशेष अवसर पर इसका प्रदर्शन किया जाता है।

संरक्षणात्मकउपाय:सरकार विशेष स्थानीय तथा राष्ट्रीय त्योहारों पर इसका प्रायोजन करती है। एक पर्यटन आकर्षण के रूप में भी इसका प्रदर्शन किया जाता है।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	खुयल्लम
	अंग्रेजीसमतुल्य	Stranger's Dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह समूहों का स्वागत करने के लिए किए जाने वाला एक धर्म से असंबंधित नृत्य है।

विवरण:

यह नृत्य लाल तथा हरी पट्टियों वाले पारंपरिक मिज़ो कपड़े (फंडूम) पहने पुरुष नृतकों के एक समूह द्वारा किया जाता है। नृत्य की ताल को बनाए रखने के लिए तीन समूहों के एक समूह दरबू, एक बड़े घंटे दर्खुयांग और एक ड्रम खुयांग्पुई का प्रयोग किया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	मिज़ो समूहों के सभी वंश
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	कुछ विशेष नहीं।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:किसी अवसर पर प्रदर्शन के अतिरिक्त इसके संरक्षण के लिए कोई विशेष उपाय नहीं किया गया है।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	लाहो नृत्य/चाड चिफियाह
	अंग्रेजीसमतुल्य	Dance of creation
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	मेघालय
	जिला/तहसील	जयंतिया हिल्स
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	खासी (पनार)
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह कुछ हद तक एक धार्मिक नृत्य है।

विवरण:

यह नृत्य खासी समुदाय की उत्पत्ति के मिथक से संबंधित नृत्य है। यह नृत्य जोवाई में निखला वंश द्वारा किया जाता था। यह वास्तव में भगवान - सृजक को धन्यवाद देने के लिए किया जाने वाला नृत्य है। आज-कल सभी वंश और व्यक्ति इस नृत्य में सम्मिलित हो सकते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	पनार खासी लोगों के सभी वंश।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस नृत्य का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	का फुर का सियांग
	अंग्रेजीसमतुल्य	Performance for the dead
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	मेघालय
	जिला/तहसील	खासी और जयंतिया हिल्स
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	खासी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह किसी व्यक्ति की मृत्यु पर किया जाने वाला एक धार्मिक नृत्य है।

विवरण:

यह नृत्य "थिप मावबाह" (अस्थियाँ एकत्रित करने के संस्कार) के दौरान बांसुरियों और ड्रमों के साथ किया जाता है। ऐसे विशेषज्ञ होते हैं जो "फावर" - दोहे (एक प्रकार की कविता) गाते हैं। यह प्रथा यू सिनरिंग के मिथक से जुड़ी है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	पनार खासी
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस नृत्य का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	वांगला
	अंग्रेजीसमतुल्य	Folk Dance, festival
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	मेघालय
	जिला/तहसील	गारो हिल्स
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गारो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह त्योहार पर किया जाने वाला नृत्य है।

विवरण:

इस नृत्य में पुरुष नृतक विशेष पोशाकें पहनते हैं - सिर पर एक पगड़ी, एक जैकेट और एक धोती (कमर के नीचे पहना जाने वाला एकल परिधान)। यह नृत्य एक लंबे ड्रम - डम के साथ किया जाता है और इस ड्रम को ड्रम बजाने वाला एक तार से बांध कर रखता है जिससे ड्रम उसके सामने लटकता है ताकि हाथों से ज़ोर लगा कर ड्रम बजाया जा सके। यह नृत्य शरीर की धीमी गति के साथ तुलनात्मक रूप से धीमा होता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	गारो हिल्स की गारो जनजाति।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस नृत्य का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा इसका विस्तृत प्रलेखन किया गया है।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	देल्दशी
	अंग्रेजीसमतुल्य	Temple Dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	कामरूप जिला
जातीयसमूह	जाति	असमिया हिन्दू जाति
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	महिला
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह मंदिर से संबंधित नृत्य कला है। नृतकी स्वयं को भगवान की सेवा में समर्पित करती है।
विवरण: यह एक अर्द्ध-शास्त्रीय नृत्य है और इसमें महिला कलाकारों द्वारा प्रदर्शित किए जाने वाले कुछ लोक-कला के तत्व होते हैं।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह कलाकार का नियमित व्यवसाय नहीं है।	
संरक्षणकी स्थिति:लगभग विलुप्त हो चुकी है।		
संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं।		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास	समन्वयक:	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	चाली नृत्य
	अंग्रेजीसमतुल्य	Traditional Dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	ब्रह्मपुत्र घाटी के कुछ जिले
जातीयसमूह	जाति	असमिया हिन्दू जाति
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	महिला
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह नृत्य सत्र (मठ) में किया जाता है।
विवरण: यह नृत्य खुल (तबला वाद्य) के साथ विशिष्ट स्टेप और शरीर की गति के साथ समूह में किया जाता है। हस्त मुद्रा (हाथों की मुद्रा) और अभिनय (अभिव्यक्ति) इस नृत्य का विशेष हिस्सा हैं।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह कलाकार का नियमित व्यवसाय नहीं है।	
संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।		
संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं।		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास	समन्वयक:	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	राठवा हिन्दू जाति, आदि जाति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला, दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

यहाँ उनके द्वारा गाने तथा नृत्य के दौरान प्रयुक्त वाद्य यंत्रों के इतिहास तथा इन्हें बनाने के संबंध में बात की जाती है। वे विवाह समारोह और होली के त्योहार पर गाते हैं और नृत्य करते हैं। वे होली के त्योहार के दौरान मेले भी आयोजित करते हैं। उनके कुल देवता बाबा पिथोरा हैं। वे उनकी जीवन शैली और दिनों की पहचान तथा वर्षा आने का पता लगाने की उनकी पद्धति के संबंध में बात करते हैं। वे खेती करते हैं और पशुओं की देखभाल करते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सतालीपुर के हरीराम, गुजरात, राठवा हिन्दू जट
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	खराब

संरक्षणकी स्थिति:मौखिक रूप में तथा लिखित रूप में रखा गया है।

संरक्षणात्मकउपाय:सहयोग दिए जाने की आवश्यकता है।

उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो

सूचनाका स्रोत:घुमंतू तथा आदिवासी कार्यशाला समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	सूरत
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला, दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: चिकि बाई सुखा बाई। विवाह के दौरान किए जाने वाले लोक नृत्य।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	सूरत
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	चौधरी समाज
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:देव नृत्य - हारकी		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	कलोल
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	गांधीनगर
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	हिन्दू नायक तराईवाला जाति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:लोक बवाई नृत्य - धार्मिक नृत्य।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	नवसारी - सदलर
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	तलाविया - हलपति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:गेरेया नृत्य -लोगों को युद्ध के लिए प्रेरित करने हेतु।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	सबरकट
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	डोगरी भील
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:रंगोली शॉट्स : महाभारत पट होली नृत्य		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	किनोरा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: खजंग - नृत्य शैली किन्नारी लोक नृत्य - त्योहार पर किए जाने वाले नृत्य		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	बनासकोट
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गरासिया
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:होली नृत्य		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	कुम्बि
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:पिरामिड नृत्य। वर्षा ऋतु से पहले एक पूजा की जाती है और वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद वर्षा के देवता को धन्यवाद देते हुए एक नृत्य किया जाता है।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	जगन भज प्रेम डांग, गुजरात	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	पंच महल
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	भील पटेलिया
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:डागुरी नृत्य अथवा गापुली नृत्य, विवाह नृत्य और अन्य खुशी के अवसर।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	गड़त
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	सूरत
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	कोटवालिया
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:लांगा नृत्य, डुबाला नृत्य।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	राजस्थान
	जिला/तहसील	सिरोही, पाली
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गरबा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:रण नृत्य - होली नृत्य।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	डोलाराम गरासिया	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	पुणे
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गोंडली समाज
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:रजनी पतसंगियल पार्टी।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	भावनगर
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	सिद्द
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:प्रार्थना और आनंद		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	रफीक वजूगड़ा	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	पुणे
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गोंडल बरुद
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:भवानी माता		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	शिवई बजीरा	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	सूरत अथवा भोजपुर
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	कोकनी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:लग्न प्रसंग - मादल नृत्य		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	छोटा उदयपुर
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	राठवा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:लग्न नृत्य। नराजन रतवा।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	चकरी
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	भील, कोकनी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:इसमेंमहाराष्ट्र की पक्षी जनजाति, भू-पर्यावरणीय स्थिति के बारे में उल्लेख किया जाता है। वे उनकी पुरानी परंपरा और उनकी पवित्र मान्यताओं के संबंध में सूचना और उनके आइकन के संबंध में सूचना भी साझा करते हैं। वे अपनी गायन की परंपरा भी प्रदर्शित करते हैं जो उनके विवाह समारोहों और डोगरा देव पवारी के दौरान गाया जाता है।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	भाकी गाँव के दुदुकी रुपचन्द डोगरा देव पवारी नृत्य करते थे।	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	खराब	
संरक्षणकी स्थिति:मौखिक रूप से संरक्षित की जा रही है।		
संरक्षणात्मकउपाय:इसे आर्थिक सहायता की आवश्यकता है।		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	चकरी
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	भील, कोकनी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:इसमेंमहाराष्ट्र की पक्षी जनजाति, भू-पर्यावरणीय स्थिति के बारे में उल्लेख किया जाता है। वे उनकी पुरानी परंपरा और उनकी पवित्र मान्यताओं के संबंध में सूचना और उनके आइकन के संबंध में सूचना भी साझा करते हैं। वे अपनी गायन की परंपरा भी प्रदर्शित करते हैं जो उनके विवाह समारोहों और डोगरा देव पवारी के दौरान गाया जाता है।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	भाकी गाँव के दुदुकी रुपचन्द डोगरा देव पवारी नृत्य करते थे।	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	खराब	
संरक्षणकी स्थिति:मौखिक रूप से संरक्षित की जा रही है।		
संरक्षणात्मकउपाय:इसे आर्थिक सहायता की आवश्यकता है।		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	गुजरात (दक्षिण)
	जिला/तहसील	डांग
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	कुनवी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:ये भूमि को जोतने के बाद शाम को विश्राम के लिए पवारी नृत्य करते हैं। ये मराठी और डांगी बोली बोलते हैं। इनके पास गुजराती में लिखित पांडुलिपियाँ भी हैं।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	दक्षिण गुजरात के डांग जिले की जगन बाई।	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	शोलापुर
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	बहुरूपी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:ये मूल रूप से क्यूमेंट होते हैं। ये कथा वाचन करने के लिए गाँव-गाँव घूमते हैं। इनकी कथाओं का विषय महाभारत तथा रामायण होता था। पुराने समय में इन्हें इन प्रदर्शनों के लिए बहुत पैसा तथा सम्मान मिलता था। आजकल आधुनिक प्रौद्योगिकी ने कुछ हद तक इनका स्थान ले लिया है। इनके द्वारा कथा वाचन में कन्नड़ भाषा का प्रयोग किया जाता है।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	शोलापुर, महाराष्ट्र की रमेश बाई	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	पोरबंदर
	राज्य	सौराष्ट्र, महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	मेहर जट्टी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:ये मनियारा रास नृत्य करते हैं जो मूल रूप से केवल मेहर जट्टी में पाया जा सकता है।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	पोरबंदर, सौराष्ट्र की केसु बाई	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	सिद्दी जनजाति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:इनका प्रमुख प्रदर्शन विश्राम के समय संगीत और नृत्य में होता है। ये हिन्दी और गुजराती बोलते हैं। इनके आध्यात्मिक गुरु बाबा गौड़ हैं और उनका मानना है कि एक मृत व्यक्ति उनके स्पर्श से ठीक हो सकता है।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	रफी बाई और इकबाल नसर	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचनाका स्रोत:	समन्वयक:	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	मारवारे झट्टी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:इनका मानना है कि इनका प्रदर्शन अस्तित्व को दर्शाता है। ये जगह-जगह जा कर माता की चौकी करते हैं और भिक्षा लेते हैं। इनके पास मौखिक ज्ञान होता है जिसके माध्यम से ये बता सकते हैं कि वर्षा कब आएगी और ये सप्ताह में प्रत्येक दिन के महत्व के बारे में बता सकते हैं। इनका स्वयं का पारंपरिक संगीत तथा नृत्य होता है।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	महाराष्ट्र के संगरुजी	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:मौखिक रूप से संरक्षण किया जा रहा है।		
संरक्षणात्मकउपाय:इसे सहायता की आवश्यकता है।		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	पंचमहल जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	भील झट्टी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:यह इनकी पवित्र परंपरा तथा संस्कारों के बारे में बताता है। ये सावन माता, पोडियाल माता, लक्ष्मी माता, अंबी माता और शीतला माता के उपदेश सुनाते हैं। उनके कुल देवता संक हैं। किसी के बीमार होने पर ये पड़ुवे भोपे को बुलाते हैं। वह रोगी को ठीक करने के लिए जड़ी बूटियों तथा विभिन्न औषधीय पौधों की पुरानी पद्धति का प्रयोग करता है। उसके बाद वह बताता है कि विवाह कैसे किए जाते हैं। मेले के दौरान वे निर्णय करते हैं कि किससे विवाह करना है और विवाह कर लेते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	पंचमहल जिले की विचा परसिंग बाई बापू
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:मौखिक रूप से संरक्षित किया जा रहा है।

संरक्षणात्मकउपाय:इसे सहायता की आवश्यकता है।

उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो

सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	नवसारी जिला
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	सादला विल
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	कलरिया जाति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला,दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:ये अपनी उत्पत्ति तथा नृत्य परंपरा के बारे में बताते हैं। ये मूल रूप से राजस्थान के हैं परंतु चूंकि वे योद्धा थे और एक मुस्लिम राजा ने उनका पीछा किया और उन्हें मारने का प्रयास किया। अपनी जान बचाने के लिए वे एक नदी के तट की ओर भागे। उन्होंने महिलाओं के कपड़े पहन कर अपना भेष बदला और गुजरात की ओर चले गए। उनका मानना है कि उनकी कुल माता तुलजा भवानी ने उन्हें बचाया। उनकी याद में ये नवरात्रा के दौरान गेरिया नृत्य करते हैं। इनकी भाषा में दो प्रभाव दिखाई देते हैं - राजस्थान और गुजरात का।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	गुजरात के नवसारी जिले के सादला गाँव की कलरिया अनुसूचित जनजाति के नारंग
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:मौखिक रूप से संरक्षण किया जा रहा है।

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो

सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	शोलापुर
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	बडुगा जंगम
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	मछुआरा
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: तांडव नृत्य। सीता स्वयंवर। ग्रामीण नाट्य मंच के विशेषज्ञ।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	बेल्लारी
	राज्य	
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	सिंढोला जनजाति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: देवी नृत्य		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	शोलापुर
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: कदक नृत्य - कदक लक्ष्मी बाई।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	बरोदा
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	राठवाल कावत
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: तिमली नृत्य		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	दाहोद
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	भील पटेलिया
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: पंचमहली बिल्ली नृत्य - दाहोद विवाह - अवसर वाद्य यंत्र - ढोलक, कुंडली, ताल		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	
	जिला/तहसील	पंचमहल अथवा दाहोद
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	भील जाति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक **त्योहार**	
विवरण: पटेपुर - भजेला गाँव। उत्सव नृत्य - त्योहार तवार नृत्य गांडिया। वाद्य यंत्र - ढ़ोल कुंडी शवई।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक **जादुई** लौकिक त्योहार	

विवरण:

मदारी घेर नृत्य - विवाह समारोहों के दौरान किया जाने वाला प्रदर्शन जिसके बाद जादू के खेल और साँपों के खेल दिखाए जाते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	बालुनाथ रुकुदनाथ मदारी
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो	
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	राजस्थान
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: गरासिया नृत्य जो अर्जुन सिंह शेखावत और दौलाराम दोरजी द्वारा किया जाता है।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	राजस्थान के अर्जुन सिंह शेखावत और दौलाराम दोरजी	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	भरतनाट्यम
	अंग्रेजीसमतुल्य	Classical Tradition – Mysore School of Bharatanatya
उत्पत्ति	क्षेत्र	मैसूर
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	मैसूर जिला, बैंगलोर शहरी और ग्रामीण, श्रिंगेरी, कोलार जिला और कर्नाटक में अन्य स्थान
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

इसके लिए सबसे पहले प्रयोग किए जाने वाले शब्द थे *'तापे'* अथवा *'मेला'*। विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद विजयनगर दरबार के कलाकार, नृतक, संगीतकार और उनके गुरु थंजोर और श्रीरंगपट्टनम के दरबारों में चले गए। थंजोर के नायकों और मैसूर के वडयारों ने इन कलाकारों को लगभग तीन शताब्दियों तक संरक्षण दिया। *मार्गी* परंपरा में दो धाराएँ आगे आईं जिन्होंने भारत की नाट्यशास्त्र परंपरा का अनुसरण किया। मैसूर साम्राज्य के मंदिरों और दरबार में प्रचलित परंपरा के ऐतिहासिक, सामाजिक तथा तकनीकी पहलुओं के संबंध में अभी तक कोई शोध नहीं किया गया है। देवदासी परंपरा के संबंध में भी कुछ भ्रांतियाँ हैं जिनके संबंध में शोध किए जाने की आवश्यकता है।

तीन दशक पहले तक देवदासी परंपरा में और दरबार शैली में भी प्रशिक्षित कलाकार थे। आज केवल एक कलाकार है जो देवदासी परंपरा से संबंधित है, जिसे मैसूर के दरबार का सम्मान प्राप्त है, जिसने दरबार के नृतकों को प्रशिक्षित किया। श्री कोलारा किट्टान्ना ने लिखा है कि वे 1880 के दशक में अपने शिष्यों को क्या सिखाते थे। श्रिंगेरी के शंकराचार्य स्वामीजी अपने शिष्य के रंगप्रवेश (सबसे पहले प्रदर्शन) के लिए *रायसा* और घंटियों के एक जोड़े के रूप में अपना आशीर्वाद भेजते थे। उनके द्वारा प्रशिक्षित देवदासियों ने नगरपेटे मंदिर और अलासूर सोमेश्वर मंदिर में प्रस्तुतियाँ दीं। वर्तमान कलाकार इस अद्भुत कला स्वरूप का एकमात्र जीवित ज्ञाता है और वे उम्र के 80 के दशक में हैं। उनके परिवार की पाण्डुलिपियों, श्रिंगेरी मठ, कोलार मंदिरों, मैसूर महल के पुरालेखों में उपलब्ध दस्तावेजों की पृष्ठभूमि में उनके अनुभवों का प्रलेखन इस परियोजना का उद्देश्य है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	

आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत: प्रो. सेत्तार	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	हगरना
	अंग्रेजीसमतुल्य	Folk Dance/ Theatre
उत्पत्ति	क्षेत्र	उत्तरी कर्नाटक
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	उत्तरी कन्नड़, दक्षिण कन्नड़, कूर्ग
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

हगरना (अथवा पुरानी कन्नड़ में पगरना) का कर्नाटक में ऐतिहासिक महत्व है। विद्वानों के अनुसार यह एक पुरातन लोक कला है। हलक्की हगरना तटीय कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले में पाई जाती है। इस जनजाति की जनसंख्या लगभग दो लाख है। राष्ट्रीय राजमार्ग तथा समुद्री मार्ग पर बड़े पैमाने पर व्यापार तथा वाणिज्यिक क्रियाकलापों के बावजूद यह जनजाति अपनी अद्वितीयता बनाए रखने में सफल रही है। इस जनजाति द्वारा किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण संस्कार है हगरना, जिसका अर्थ है सभी प्रकार की अनोखी पोशाकों को एकत्रित करना जो रचनात्मक चरित्रों को प्रदर्शित करती हैं। यहाँ पदानुक्रमिक सामाजिक विभेद का एक व्यंग्यात्मक प्रस्तुतीकरण देखा जा सकता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: प्रो. सेत्तार

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	थुलिया
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	संगदिया
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

संगदिया नृत्य। आदिवासी तमाशा मंडली। ये जागृति लाने के लिए इस माध्यम का प्रयोग करते हैं जो कि नृत्य तथा संगीत का मिश्रण है।

स्थानीय बोली - देहवाली

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो

सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला

समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	लोक नृत्य
	अंग्रेजीसमतुल्य	Folk Dances
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	दक्षिण कन्नड़
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

लोक नृत्य तुलु लोक-साहित्य अध्ययन का एक प्रमुख हिस्सा हैं। वर्तमान शोध परियोजना का उद्देश्य महत्वपूर्ण नृत्यों जैसे *दुदी कुनिता* (ड्रम नृत्य),*आति कलेंजा, करंगोलु, सोनादा जोगी, सिद्दवेश, कंगिलु* (जादुई नायक लोक नृत्य),*पिली-पणजी कुनिता* (बाघ-सूअर नृत्य),*मादिरा* (महिलाओं का लोक नृत्य),*गोण्डोलु* (संस्कार के अंतर्गत किया जाने वाला नृत्य) का एक व्यापक अध्ययन करना है। ये लोक नृत्य मियादी होते हैं और जातीय समूहों जैसे *नलिके, मुगेरा, गौड़ा, नाइका* और *मंसा* की सांस्कृतिक पहचान का कार्य करते हैं। इनमें से अधिकतर लोक नृत्य शहरीकरण के कारण खतरे में हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम पारंपरिक कलाकारों और प्रशिक्षित छात्रों को इस परंपरा की जानकारी आगे पहुंचाने और इस परंपरा को जारी रखने का अवसर देंगे।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत: प्रो. सेत्तार	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	उरुमुला नृत्यम
	अंग्रेजीसमतुल्य	Folk Dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	आंध्र प्रदेश
	जिला/तहसील	तटीय क्षेत्र, पूर्वी और पश्चिमी गोदावरी जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

उरुमुला नृत्यम एक लोक नृत्य है जो आंध्र प्रदेश के रायलसीमा क्षेत्र, विशेष रूप से अनंतपुर जिले के कटमय्या कोंडा, गूगुडु, अटमकुर, सुब्बाराओपेट और धर्मावरम गाँव में प्रसिद्ध है। उरुमु एक स्थानीय ड्रम होता है और इस वाद्य यंत्र को बजाने वाले 'उरुमुल्लु' के नाम से जाने जाते हैं। लगभग दस सदस्यों का एक दल गाँव की देवी के मंदिर में प्रत्येक मंगलवार को यह नृत्य करता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत: प्रो. सेत्तार	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	गरगुलू
	अंग्रेजीसमतुल्य	Folk Dance
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	आंध्र प्रदेश
	जिला/तहसील	तटीय क्षेत्र, पूर्वी और पश्चिमी गोदावरी जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

'गरगुलू' एक लोक नृत्य है जो आंध्र प्रदेश के गोदावरी जिले में प्रसिद्ध है और यह इसके अनेक गुणों को दर्शाता है। इस लोक नृत्य के कलाकारों का मानना है कि इन कलाकारों को इनके आश्चर्यजनक कलाबाजों जैसे अंग संचालन के दौरान प्रोत्साहन दिए जाने से वे इस कला को भविष्य की पीढ़ी के सुरक्षित हाथों में पहुंचाने में सक्षम होंगे।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत: प्रो. सेत्तार	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	नाती
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	सकरी
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	स्नो : कोकनी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: डोंगरा देव नृत्य। उत्सवों के दौरान पूजा नृत्य।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	बनासकांठा
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	डूंगरी भील
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: होली नृत्य। देवी पुजा। वे अपनी देवी माँ के लिए नृत्य करते हैं।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	लाहौल एवं स्पीति
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	सोवोंग्ला
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: विवाह नृत्य - सागा		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सुख दास मूलिंग्पा - प्रमुख	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	तुलियापुर
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गोंडली
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: देवी पूजा		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	बांसवाड़ा
	राज्य	राजस्थान
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	भील
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: हल्लासा नृत्य। विवाह नृत्य, गीत		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	कुसुम डामोर - अगुआ	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	
	जिला/तहसील	अकोला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	म्यराला
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: राष्ट्रीय गीत, पवड़ा, लोक गीत		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	शबीर विजय पांडे - अगुआ	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	कलोल
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	गांधीनगर
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	हिन्दू नाइसाक तराईवाला जट्टी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

कलोल के उत्तरी गुजरात के बलदेव इस नृत्य परंपरा के बारे में बात करते हैं। वे पवित्र धार्मिक नृत्य भवई के बारे में बात करते हैं। वे बताते हैं कि लिखित पांडुलिपियाँ 100-200 वर्ष पहले पाई गई थीं। उन्हें 10-12 पीढ़ियाँ याद हैं और वे उनके बारे में बात करते हैं। जब कोई लड़का पैदा होता है और विवाह के दौरान वे गाना गाते हैं। भवई प्रत्येक त्योहार में पुरुषों द्वारा गाई जाती है। प्रमुख गायकों के अनुसार पहले महिलाएं भी गाती थीं परंतु आजकल केवल पुरुष इसे गाते हैं। विचारणी माता उनकी कुल माता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	उत्तरी गुजरात के बलदेव
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:लिखित और मौखिक रूप में संरक्षण किया जा रहा है।

संरक्षणात्मकउपाय:इसे सहायता की आवश्यकता है।

उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो

सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला

समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	विद्याघर
	राज्य	राजस्थान
	जिला/तहसील	सिरोही
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	राजपूत,करासिया जाति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

इनका मुख्य नृत्य गरासिया नृत्य है। इनकी कुल देवी समोला है। इनके यहाँ बेकार वासी नामक एक मेला होता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	राजस्थान के सिरोही जिले के शंकर लाल
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो	
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	शोलापुर
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	कैकड़ी जनजाति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: सुंदरीवादन - अमल, बलभेन जादव - विमुखता भक्ति समाज। (नाट्यगीत, तुमरी, भजन)।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/**नृत्य**/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	नर्मदा
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	वासवा जाति, हुंजा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: आदिवासी हग्न नृत्य - विवाह नृत्य।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला		
समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य रंगमंच विधाएँ हैं जैसे प्रहलाद नाटक, दाधी नाटक, भरत लीला, राम लीला, छद्य नट, देसिया नट।

तथापि, ये नाटक स्थानीय प्रकृति के हैं। दूसरी ओर बारगढ़ की धनु यात्रा विशाल पैमाने पर होती है और इसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं।

बारगढ़ की धनु यात्रा

बारगढ़ जिले में एक प्रकार की रंगमंच प्रस्तुती प्रचलित है जो लोगों को बहुत पसंद आती है। इस प्रदर्शन में विषय-वस्तु कृष्णलीला का हिस्सा होती है और जीरा नदी को पवित्र यमुना नदी, आमापली को गोपपुर और बारगढ़ को मथुरा माना जाता है। अन्य आकर्षणों के अतिरिक्त इस यात्रा की मुख्य विशिष्टताएँ हैं राज्य की सड़कों पर कंस के हाथी की सवारी, उसका ऊंचा मंच जहां से वह गिरता है और उसकी मृत्यु होती है और उसका दरबार। प्रत्येक पहलू इतने बेहतर ढंग से नियोजित होता है और इसे इतने बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया जाता है कि शायद पूरे विश्व में कहीं भी किसी नाटक का नाट्यशास्त्र के केंद्रीय लक्ष्य अर्थात एकता, दल भावना तथा सार्वभौमिक भाईचारे को सामने लाते हुए इतने बड़े पैमाने पर प्रस्तुतीकरण नहीं किया गया है। सभी गाँव, नगर और नदी अभिनय क्षेत्र बन जाते हैं, और इसी प्रकार सभी निवासी तथा आगंतुक इसके पात्र बन जाते हैं!

अन्य नृत्य स्वरूप

कोठीशाला नाच

कोठीशाला ओडिशा के गंजम जिले में विद्यमान लोक नृत्य का सर्वाधिक ग्रामीण स्वरूप है। यह महाकाव्यों के विभिन्न अध्यायों का चित्रण करने वाला एक पौराणिक नृत्य है। इसमें प्रमुख रूप से कुला और हांडी (मिट्टी का बर्तन) का संगीत वाद्य यंत्रों के रूप में प्रयोग किया जाता है। मृदंग और हारमोनियम अन्य वाद्य यंत्र हैं जिनका इस नृत्य कला में प्रयोग किया जाता है।

घंटा पटुआ

ओडिशा का घंटा पटुआ समुदाय हिन्दू चैत्र माह (मार्च-अप्रैल) के दौरान एक कलाबाजी नृत्य प्रदर्शित करता है। यह नृत्य देवी माँ को समर्पित होता है जिसे विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे सरला, हिंगुला, चर्चिका, भगवती और चंडी। घंटा पटुआ एक गैर-ब्राह्मण समुदाय है जिसके सदस्य देवताओं की सेवा करते हैं। चैत्र के मंगलमय माह के दौरान घंटा पटुआ समुदाय के पुरुष सदस्य 2 अथवा 4 के समूह में गांवों में घूमते हैं। ये 'घंटे' (पीतल के घंटे) और 'ढ़ोल' (ड्रम) से निकलने वाले संगीत के साथ 2 खंभों के बीच बांधी गई एक रस्सी पर संतुलन बनाते हुए अपना विशिष्ट नृत्य करते हैं।

प्रमुख नृतक महिला के वस्त्र पहनता है, और अपने सिर पर एक काला कपड़ा पहनता है और इसके लटकते हुए सिरे अपने हाथों से पकड़ता है। वह अपने सिर पर एक 'घट' (पवित्र घड़ा) रखता है जिसे फूलों, सिंदूर, चन्दन के लेप तथा रंगीन धागे से सजाया जाता है। घड़े को अपने सिर पर संतुलित करते हुए वह विभिन्न योग मुद्राएँ प्रदर्शित करता है। वह बिना किसी सहारे के रस्सी पर नाचता है और एक अद्भुत संतुलन प्रदर्शित करता है। नृत्य पूरा होने पर वह सिंदूर का लेप वितरित करता है जो मंदिर की ओर से लोगों के लिए एक प्रसाद होता है।

दंड नृत्य

दंड नृत्य ओडिशा के गंजम जिले में एक लोकप्रिय प्रदर्शन कला है। यह नाटक की पीठासीन देवी कुलादा की व्याघ्र देवी को समर्पित है। दंड नृत्य महाविसुबा संक्रांति के 13 दिन पहले शुरू होता है और मेष संक्रांति को समाप्त होता है। जो लोग इस कला में भाग लेते हैं उन्हें दंडुआ, भोगाता अथवा पटुआ के नाम से जाना जाता है। संगीत वाद्य यंत्रों में ढ़ोल (दो-तरफा ड्रम) और महुरी (शहनाई जैसा वाद्य यंत्र जिसमें कलाकारों द्वारा एक झंडी तथा शिखंडी लगाई जाती हैं) सम्मिलित हैं।

बहका नृत्य के नाम से प्रचलित **संप्रदा नृत्य**, पश्चिमी ओडिशा में लोकप्रिय है। यह एक मानकीकृत प्रदर्शन है जिसमें गायन, करथल वादन तथा नृत्य सम्मिलित होता है। इस नृत्य की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता है कि कलाकार गायन, वादन तथा नृतन में अपनी क्षमता प्रदर्शित करता है। संगीत वाद्य यंत्रों के लयात्मक वादन के

साथ पैरों की लयबद्ध चाल से लोग इस कार्यक्रम से आँखें नहीं हटा पाते, यह देखने में बहुत ही आकर्षक नृत्य है।

इस प्रदर्शन के दौरान विभिन्न भजन, जनन, चंद, चौपड़ी और श्लोक गाए जाते हैं। प्रमुख नृतक के साथ एक सहायक होता है जिसे 'पालिया बहका' के नाम से जाना जाता है। संप्रदा नृत्य आम तौर पर सामाजिक तथा त्योहार के अवसरों पर किया जाता है।

केडु

केडु ओडिशा में मेरियाह त्योहार को जारी रखते हुए मनाए जाने वाले केडु त्योहार के अवसर पर कोंधा लोगों द्वारा रिवाज के अंतर्गत किया जाने वाला नृत्य है। यह नृत्य दहरानी पेनु, जिसे सौभाग्य, अच्छी फसल की देवी, लोगों तथा उनके पशुधन का संरक्षक माना जाता है, के सम्मान में मनाए जाने वाले उत्सव से संबंधित है। यह प्रमुख रूप से महिलाओं द्वारा एक अर्द्ध-वृत्त में एक दूसरे का हाथ पकड़ते हुए खड़े हो कर किया जाता है। पुरुष गाने गाते हैं और ड्रम तथा बांसुरी बजाते हैं। इसमें प्रयोग किए जाने वाले वाद्य यंत्रों में ढ़ोल (दो-तरफा ड्रम), चांगु (एक प्रकार का ड्रम), निशान और महुरी (शहनाई जैसा वायु उपकरण) सम्मिलित हैं। केडु नृत्य के साथ कुई भाषा में भक्ति गीत गाए जाते हैं।

रुक मार नाच

रुक मार नाच ओडिशा के मयूरभंज जिले का एक लोकप्रिय लोक नृत्य है। यह पश्चिम बंगाल के अत्यंत विकसित छौ नृत्य का एक प्रारंभिक स्वरूप है। यह युद्ध कला तलवारों तथा ढालों से सुसज्जित नृतकों के दो समूहों के बीच एक विशेष शैली का मूक युद्ध होता है। ये फुर्तीले वारों और सुंदर मुद्राओं के साथ बारी-बारी से आक्रमण तथा स्वयं का बचाव करते हैं। इस नृत्य के साथ संगीत वादन होता है जिसमें ख़ास जटिल लय और तेजी से आघात से बजाया जाता है। महुरी (दो बेंतों वाला वाद्य यंत्र), ढोला (एक बैरल के आकार का दो-तरफा ड्रम), धुमसा (एक अर्द्धगोलाकार ड्रम) और चड़चड़ी (एक छोटा बेलनाकार ड्रम) इस नृत्य में प्रयोग किए जाने वाले मुख्य वाद्य यंत्र होते हैं।

पाइका नृत्य

ओडिशा का एक नृत्य पाइका नृत्य एक युद्ध का अभिनय रूपान्तरण होता है। 'पाइका' शब्द का अर्थ है युद्ध और 'नृत्य' शब्द का अर्थ है नाच। यह नृत्य दशहरा के त्योहार के दौरान अधिकतर भारतीय गांवों में पाए जाने वाले एक पारंपरिक जिम 'अखाड़े' के लड़कों द्वारा किया जाता है। ये लड़के तलवारों तथा ढालों के साथ ड्रम की ताल पर नाचते हैं। सामान्यत: यह नृत्य गाँव के मैदान में विभिन्न समूहों द्वारा एक प्रतिस्पर्धी तरीके से किया जाता है। पुराने समय में गांवों के अंशकालिक सैनिक स्वयं के अंदर युद्ध के लिए आवश्यक उत्तेजना तथा साहस पैदा करने के लिए यह नृत्य करते थे।

कोंध नृत्य ओडिशा की एक प्रसिद्ध जनजातीय नृत्य कला है। कोंध जनजाति के अविवाहित लड़के और लड़कियां यह नृत्य करती हैं। लड़कियां अपने चारों ओर नाचने वाले लड़कों की पंक्ति के सामने पंक्ति में नाचती हैं। यह नृत्य विशेष रूप से तब किया जाता है जब एक गाँव के लड़के और लड़कियां दूसरे गाँव जाते हैं। भैंस की बलि के दौरान भी विशेष नृत्य किए जाते हैं, जिसे केडु त्योहार के रूप में मनाया जाता है। इस नृत्य में गाना गाना बहुत महत्वपूर्ण होता है। कोरापुट के कोंध लोगों के नृत्य में किसी संगीत वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता। परंतु फूलबनी कोंध लोगों के लिए यह नृत्य अधिक रंगीन होता है। इस समुदाय की लड़कियां दो टुकड़ों में साड़ी पहनती हैं और अपने टखनों में कंगन पहनती हैं। लड़के भी गाना गाने के साथ हाथ ड्रम बजाते हैं।

साओरा नृत्य

ओडिशा की साओरा जनजाति की अपनी विशिष्ट नृत्य कला है, जो समारोहों और त्योहार के अवसरों पर किए जाते हैं। यह नृत्य अधिक सरल होता है, जिसके लिए किसी विशेष कलात्मक कौशल की आवश्यकता नहीं होती। साओरा नृत्य पुरुषों तथा महिलाओं के समूह द्वारा किया जाता है। इसकी मुद्राएँ सरल होती हैं, इसमें प्रत्येक समूह बारी-बारी एक लयात्मक रूप से दूसरे समूह की ओर जाता है। इस नृत्य के साथ ड्रम, पीतल के झांझों, पीतल के घंटों और हाइड-गोंग से संगीत उत्पन्न किया जाता है। नृतक रंगीन पोशाकों से स्वयं का श्रृंगार करते हैं। वे अपने सिर पर सफ़ेद पक्षी तथा मोर के पंख पहनते हैं। पुरुषों द्वारा पगड़ी के रूप में रंगीन सूती तथा सिल्क के कपड़े पहने जाते हैं। महिलाएं अपने शरीर के ऊपरी हिस्से को ढकने के लिए ये कपड़े पहनती हैं। नृतक नृत्य करते समय तलवार, छड़ियाँ, छाते तथा ऐसे अन्य अस्त्र अपने हाथों में रखते हैं। इस नृत्य के दौरान ये सीटियाँ बजाते हैं और अलग-अलग तरह की आवाजें निकालते हैं।

घुडिकी नट

घुडिकी नबरंग नट ओडिशा का एक लोक नाटक है। इसे 'ढुकुकी नबरंग नट' के नाम से भी जाना जाता है। 'घुडिकी' शब्द का अर्थ प्रदर्शन के दौरान प्रयुक्त स्थानीय ड्रम से है।

इस प्रदर्शन में 8 से 10 अभिनेता होते हैं, जो 3 से 4 घंटे की विभिन्न नाटिकाएँ करते हैं। इस प्रदर्शन के दौरान 'घुडिकी' की ताल पर संगीत दिया जाता है। इस कला के लिए किसी मंच की आवश्यकता नहीं होती।

कोइसबाड़ी नृत्य

कोइसबाड़ी नृत्य ओडिशा की गोंड तथा भूयन जनजातियों के बीच प्रचलित एक रंगीन लोक नृत्य है। इसमें पुरुष कलाकार एक दो फुट लंबी छड़ी हाथ में ले कर नृत्य में भाग लेते हैं। गाने मुख्य रूप से राधा और कृष्ण के बीच अमर प्रेम पर आधारित होते हैं।

ओराओन नृत्य

सुंदरगढ़ और बोलंगीर जिलों में बसी ओराओन जनजाति का अपना विशिष्ट प्रकार का नृत्य है। यह नृत्य ग्रामीण छात्रावासों के सामने किया जाता है। केवल युवक तथा युवतियाँ यह नृत्य करती हैं। इस नृत्य की मुद्राएँ सरल होती हैं जिनके लिए किसी विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं होती। नृतक पंक्तिबद्ध होते हैं और गोल-गोल घूमते हैं, जिनकी अगुआई प्रमुख नृतक करते हैं।

परोजा नृत्य

आंध्र तथा ओडिशा के कुछ हिस्सों में रहने वाली परोजा जनजाति का अपना विशिष्ट लोक नृत्य होता है। यह नृत्य महिलाओं द्वारा फसल कटाई के मौसम में किया जाता है। नृतकियाँ घुटने तक लंबी सफ़ेद साड़ियाँ पहनती हैं। ये अंगूठियों, भारी पीतल पायलों और अपने पैरों तथा हाथों पर टैटू से स्वयं का श्रृंगार करती है। यह नृत्य एक पारंपरिक ड्रम की ताल पर किया जाता है। पैरों की विभिन्न मुद्राओं के साथ अपने शरीर को मोड़ कर विभिन्न रुचिकर मुद्राएँ प्रस्तुत की जाती हैं। महिलाएं परोजा नृत्य करते हुए गोल-गोल घूमती हैं।

कोठीशाला नाच

कोठीशाला ओडिशा के गंजम जिले में विद्यमान लोक नृत्य का सर्वाधिक ग्रामीण स्वरूप है। यह महाकाव्यों के विभिन्न अध्यायों का चित्रण करने वाला एक पौराणिक नृत्य है। इसमें प्रमुख रूप से कुला और हांडी (मिट्टी का बर्तन) का संगीत वाद्य यंत्रों के रूप में प्रयोग किया जाता है। मृदंग और हारमोनियम अन्य वाद्य यंत्र हैं जिनका इस नृत्य कला में प्रयोग किया जाता है।

घंटा पटुआ

ओडिशा का घंटा पटुआ समुदाय हिन्दू चैत्र माह (मार्च-अप्रैल) के दौरान एक कलाबाजी नृत्य प्रदर्शित करता है। यह नृत्य देवी माँ को समर्पित होता है जिसे विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे सरला, हिंगुला, चर्चिका, भगवती और चंडी। घंटा पटुआ एक गैर-ब्राह्मण समुदाय है जिसके सदस्य देवताओं की सेवा करते हैं। चैत्र के मंगलमय माह के दौरान घंटा पटुआ समुदाय के पुरुष सदस्य 2 अथवा 4 के समूह में गांवों में घूमते हैं। ये 'घंटे' (पीतल के घंटे) और 'ढ़ोल' (ड्रम) से निकलने वाले संगीत के साथ 2 खंभों के बीच बांधी गई एक रस्सी पर संतुलन बनाते हुए अपना विशिष्ट नृत्य करते हैं।

प्रमुख नृतक महिला के वस्त्र पहनता है, और अपने सिर पर एक काला कपड़ा पहनता है और इसके लटकते हुए सिरे अपने हाथों से पकड़ता है। वह अपने सिर पर एक 'घट' (पवित्र घड़ा) रखता है जिसे फूलों, सिंदूर, चन्दन के लेप तथा रंगीन धागे से सजाया जाता है। घड़े को अपने सिर पर संतुलित करते हुए वह विभिन्न योग मुद्राएँ प्रदर्शित करता है। वह बिना किसी सहारे के रस्सी पर नाचता है और एक अद्भुत संतुलन

प्रदर्शित करता है। नृत्य पूरा होने पर वह सिंदूर का लेप वितरित करता है जो मंदिर की ओर से लोगों के लिए एक प्रसाद होता है।

दंड नृत्य

दंड नृत्य ओडिशा के गंजम जिले में एक लोकप्रिय प्रदर्शन कला है। यह नाटक की पीठासीन देवी कुलादा की व्याघ्र देवी को समर्पित है। दंड नृत्य महाविसुबा संक्रांति के 13 दिन पहले शुरू होता है और मेस संक्रांति को समाप्त होता है। जो लोग इस कला में भाग लेते हैं उन्हें दंडुआ, भोगाता अथवा पटुआ के नाम से जाना जाता है। संगीत वाद्य यंत्रों में ढ़ोल (दो-तरफा ड्रम) और महुरी (शहनाई जैसा वाद्य यंत्र जिसमें कलाकारों द्वारा एक झंडी तथा शिखंडी लगाई जाती हैं) सम्मिलित हैं।

नृत्य

संप्रदा नृत्य, जिसे बहका नृत्य के नाम से भी जाना जाता है, ओडिशा के पश्चिमी क्षेत्र में लोकप्रिय है। यह एक मानकीकृत प्रदर्शन है जिसमें गायन, करथल वादन तथा नृत्य सम्मिलित होता है। इस नृत्य की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता है कि कलाकार गायन, वादन तथा नृतन में अपनी क्षमता प्रदर्शित करता है। संगीत वाद्य यंत्रों के लयात्मक वादन के साथ पैरों की लयबद्ध चाल इसे एक रुचिकर कार्यक्रम बनाती है।

इस प्रदर्शन के दौरान विभिन्न भजन, जनन, चंद, चौपड़ी और श्लोक गाए जाते हैं। प्रमुख नृतक के साथ एक सहायक होता है जिसे 'पालिया बहका' के नाम से जाना जाता है। संप्रदा नृत्य आम तौर पर सामाजिक तथा त्योहार के अवसरों पर किया जाता है।

भरत लीला

भरत लीला ओडिशा के गंजम जिले का एक रंगीन लोक नृत्य है। यह सुभद्रा परिणय (सुभद्रा का विवाह) नामक एक अध्याय, जो महाकाव्य महाभारत से लिया गया है, पर आधारित है। इस नृत्य में भगवान कृष्ण को सुभद्रा और उनके प्रेमी अर्जुन के बीच एक मध्यस्थ के रूप में चित्रित किया गया है। यह कहानी धीरे-धीरे सुभद्रा और अर्जुन के विवाह के साथ एक सकारात्मक अंत की ओर बढ़ती है।

केडु

केडु ओडिशा में मेरियाह त्योहार को जारी रखते हुए मनाए जाने वाले केडु त्योहार के अवसर पर कोंधा लोगों द्वारा रिवाज के अंतर्गत किया जाने वाला नृत्य है। यह नृत्य दहरानी पेनु, जिसे सौभाग्य, अच्छी फसल

की देवी, लोगों तथा उनके पशुधन का संरक्षक माना जाता है, के सम्मान में मनाए जाने वाले उत्सव से संबंधित है। यह प्रमुख रूप से महिलाओं द्वारा एक अर्द्ध-वृत्त में एक दूसरे का हाथ पकड़ते हुए खड़े हो कर किया जाता है। पुरुष गाने गाते हैं और ड्रम तथा बांसुरी बजाते हैं। इसमें प्रयोग किए जाने वाले वाद्य यंत्रों में ढ़ोल (दो-तरफा ड्रम), चांगु (एक प्रकार का ड्रम), निशान और महुरी (शहनाई जैसा वायु उपकरण) सम्मिलित हैं। केडु नृत्य के साथ कुई भाषा में भक्ति गीत गाए जाते हैं।

रुक मार नाच

रुक मार नाच ओडिशा के मयूरभंज जिले का एक लोकप्रिय लोक नृत्य है। यह पश्चिम बंगाल के अधिक विकसित छौ नृत्य का एक प्रारंभिक स्वरूप है। यह युद्ध कला तलवारों तथा ढालों से सुसज्जित नृतकों के दो समूहों के बीच एक विशेष शैली का मूक युद्ध होता है। ये फुर्तीले वारों और सुंदर मुद्राओं के साथ बारी-बारी से आक्रमण तथा स्वयं का बचाव करते हैं।

इस नृत्य के साथ संगीत बजाया जाता है जो अपनी लयात्मक जटिलताओं तथा उत्तेजक आघात के लिए उल्लेखनीय होता है। महुरी (दो बेंतों वाला वाद्य यंत्र), ढोला (एक बैरल के आकार का दो-तरफा ड्रम), धुमसा (एक अर्द्धगोलाकार ड्रम) और चड़चड़ी (एक छोटा बेलनाकार ड्रम) इस नृत्य में प्रयोग किए जाने वाले मुख्य वाद्य यंत्र होते हैं।

पाइका नृत्य

ओडिशा का एक नृत्य पाइका नृत्य एक युद्ध का अभिनय रूपान्तरण होता है। 'पाइका' शब्द का अर्थ है युद्ध और 'नृत्य' शब्द का अर्थ है नाच।

यह नृत्य दशहरा के त्योहार के दौरान अधिकतर भारतीय गांवों में पाए जाने वाले एक पारंपरिक जिम 'अखाड़े' के लड़कों द्वारा किया जाता है। ये लड़के तलवारों तथा ढालों के साथ ड्रम की ताल पर नाचते हैं। सामान्यत: यह नृत्य गाँव के मैदान में विभिन्न समूहों द्वारा एक प्रतिस्पर्धी तरीके से किया जाता है।

पुराने समय में गांवों के अंशकालिक सैनिक स्वयं के अंदर युद्ध के लिए आवश्यक उत्तेजना तथा साहस पैदा करने के लिए यह नृत्य करते थे।

कोंध नृत्य

कोंध नृत्य ओडिशा की एक प्रसिद्ध जनजातीय नृत्य कला है। कोंध जनजाति के अविवाहित लड़के और लड़कियां यह नृत्य करती हैं। लड़कियां अपने चारों ओर नाचने वाले लड़कों की पंक्ति के सामने पंक्ति में नाचती हैं।

यह नृत्य विशेष रूप से तब किया जाता है जब एक गाँव के लड़के और लड़कियां दूसरे गाँव जाते हैं। भैंस की बलि के दौरान भी विशेष नृत्य किए जाते हैं, जिसे केडु त्योहार के रूप में मनाया जाता है। इस नृत्य में गाना गाना बहुत महत्वपूर्ण होता है।

कोरापुट के कोंध लोगों के नृत्य में किसी संगीत वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता। परंतु फूलबनी कोंध लोगों के लिए यह नृत्य अधिक रंगीन होता है। इस समुदाय की लड़कियां दो टुकड़ों में साड़ी पहनती हैं और अपने टखनों में कंगन पहनती हैं। लड़के भी गाना गाने के साथ हाथ ड्रम बजाते हैं।

साओरा नृत्य

ओडिशा की साओरा जनजाति की अपनी विशिष्ट नृत्य कला है, जो समारोहों और त्योहार के अवसरों पर किए जाते हैं। यह नृत्य अधिक सरल होता है, जिसके लिए किसी विशेष कलात्मक कौशल की आवश्यकता नहीं होती।

साओरा नृत्य पुरुषों तथा महिलाओं के समूह द्वारा किया जाता है। इसकी मुद्राएँ सरल होती हैं, इसमें प्रत्येक समूह बारी-बारी एक लयात्मक रूप से दूसरे समूह की ओर जाता है। इस नृत्य के साथ ड्रम, पीतल के झांझों, पीतल के घंटों और हाइड-गोंग से संगीत उत्पन्न किया जाता है।

नृतक रंगीन पोशाकों से स्वयं का श्रृंगार करते हैं। वे अपने सिर पर सफ़ेद पक्षी तथा मोर के पंख पहनते हैं। पुरुषों द्वारा पगड़ी के रूप में रंगीन सूती तथा सिल्क के कपड़े पहने जाते हैं। महिलाएं अपने शरीर के ऊपरी हिस्से को ढकने के लिए ये कपड़े पहनती हैं। नृतक नृत्य करते समय तलवार, छड़ियाँ, छाते तथा ऐसे अन्य अस्त्र अपने हाथों में रखते हैं। इस नृत्य के दौरान ये सीटियाँ बजाते हैं और अलग-अलग तरह की आवाजें निकालते हैं।

घुडिकी नट

घुडिकी नबरंग नट ओडिशा का एक लोक नाटक है। इसे 'ढुकुकी नबरंग नट' के नाम से भी जाना जाता है। 'घुडिकी' शब्द का अर्थ प्रदर्शन के दौरान प्रयुक्त स्थानीय ड्रम से है।

इस प्रदर्शन में 8 से 10 अभिनेता होते हैं, जो 3 से 4 घंटे की विभिन्न नाटिकाएँ करते हैं। इस प्रदर्शन के दौरान 'घुडिकी' की ताल पर संगीत दिया जाता है। इस कला के लिए किसी मंच की आवश्यकता नहीं होती।

कोइसबाड़ी नृत्य

कोइसबाड़ी नृत्य ओडिशा की गोंड तथा भूयन जनजातियों के बीच प्रचलित एक रंगीन लोक नृत्य है। इसमें पुरुष कलाकार एक दो फुट लंबी छड़ी हाथ में ले कर नृत्य में भाग लेते हैं। गाने मुख्य रूप से राधा और कृष्ण के बीच अमर प्रेम पर आधारित होते हैं।

ओराओन नृत्य

सुंदरगढ़ और बोलंगीर जिलों में बसी ओराओन जनजाति का अपना विशिष्ट प्रकार का नृत्य है। यह नृत्य ग्रामीण छात्रावासों के सामने किया जाता है। केवल युवक तथा युवतियाँ यह नृत्य करती हैं। इस नृत्य की मुद्राएँ सरल होती हैं जिनके लिए किसी विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं होती। नृतक पंक्तिबद्ध होते हैं और गोल-गोल घूमते हैं, जिनकी अगुआई प्रमुख नृतक करते हैं।

परोजा नृत्य

आंध्र तथा ओडिशा के कुछ हिस्सों में रहने वाली परोजा जनजाति का अपना विशिष्ट लोक नृत्य होता है। यह नृत्य महिलाओं द्वारा फसल कटाई के मौसम में किया जाता है। नृतकियाँ घुटने तक लंबी सफ़ेद साड़ियाँ पहनती हैं। ये अंगूठियों, भारी पीतल पायलों और अपने पैरों तथा हाथों पर टैटू से स्वयं का श्रृंगार करती है। यह नृत्य एक पारंपरिक ड्रम की ताल पर किया जाता है। पैरों की विभिन्न मुद्राओं के साथ अपने शरीर को मोड़ कर विभिन्न रुचिकर मुद्राएँ प्रस्तुत की जाती हैं। महिलाएं परोजा नृत्य करते हुए गोल-गोल घूमती हैं।

संगीत

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	पगतिवेशालू
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	आंध्र प्रदेश
	जिला/तहसील	गोदावरी, कृष्णा, कडप्पा, महबूबनगर, वारंगल और नलगोंडा जिले।
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

बुडिगे जंगम घूम-घूम कर प्रदर्शन करने वाले समुदाय हैं जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हुए महाकाव्यों, मिथकों, किवंदतियों के लोक संस्करण सुनाते हैं। उनका नाम उनके संगीत वाद्य यंत्र बुडिगे के नाम पर रखा गया है। ये सभी शैव धर्म के अनुनायी होते हैं जिनका मानना है कि उनके भगवान शिव भी एक घुमंतू थे। ये समूह खराब आर्थिक स्थिति के कारण अपना अस्तित्व खो रहे हैं। इस परियोजना का उद्देश्य कथावाचक परंपरा को लिखित दस्तावेज़ में परिवर्तित करने की प्रक्रिया के लिए समग्र रूप से प्रदर्शकों के इस समुदाय का अध्ययन करना है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: प्रो. सेत्तार

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	सामवेद का जप
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	केरल
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

सामवेद का जप बहुत कम व्यक्तियों तक सीमित है। एस. एस. विश्वविद्यालय, कलड़ी ने इस पूरे संस्कार का प्रलेखन किया है। सामवेद परंपरा केरल में लगभग विलुप्त हो चुकी है। वर्तमान में, पाँच परिवार हैं, जो पारंपरिक रूप से वेद का जप करते हैं। इस परंपरा के पूरी तरह से समाप्त होने से पहले इसे भविष्य की पीढ़ी के लिए संरक्षित किए जाने की आवश्यकता है। इस परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

1. केरल की सामवेदिक परंपरा की अद्वितीय विशेषताओं को चिह्नित करने के लिए केरल की परंपरा के अनुसार अन्य वेदों के संगत जप के साथ *समन* जप की रिकॉर्डिंग। इसे तुलना पर ज़ोर देते हुए चयनित/प्रबंधनीय हिस्सों तक सीमित रखा जा सकता है।
2. संगोष्ठियों/कार्यशालाओं की एक श्रृंखला के माध्यम से सामान्य रूप से केरल की वेदिक परंपरा और विशेष रूप से सामवेद से संबंधित अनुसंधान से जुड़े वैश्विक शैक्षणिक समुदाय को साथ लाना।
3. इस कार्यवाही को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करना।

वर्तमान परियोजना में अध्ययन के लिए निम्नलिखित मुद्दे सम्मिलित किए जा रहे हैं:

1. केरल में सामवेद परंपरा का इतिहास।
2. सामवेद की संगीतीय विशिष्टताएँ
3. केरल जप - अद्वितीय विशेषताएँ
4. केरल की प्रदर्शन परंपराओं में सामवेद और और इसकी तुलना में अन्य वेद।

इससे संगीतज्ञों और छात्रों को केरल में प्रयोग की जाने वाली शैली के अर्थ को समझने में सहायता मिलेगी।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति	यह विशेषज्ञों का एक अंश कालिक कार्य है।

(समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:यह एक समाप्त होती परंपरा है।	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत:	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	साम जप
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	गोकर्णा और आस-पास के स्थान। होन्नावर मैसूर बैंगलोर **शिमोगा जिला।**
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

सामवेद भारतीय शास्त्रीय संगीत का मूल स्रोत है। यद्यपि सामवेदिक जप की हजार से भी अधिक अलग-अलग धाराएँ थीं, परंतु वर्तमान में देश में केवल तीन शैलियाँ विद्यमान हैं। इस गंभीर स्थिति में सामवेद को संरक्षित करना, परिरक्षित करना और बढ़ावा देना अनिवार्य है। कर्नाटक में सामवेद को दो भिन्न-भिन्न परंपराओं में संरक्षित किया जाता है -*कौथुमा* और *रानयनिया*।

अब बहुत कम *ऋत्विक* अथवा इसका अनुसरण करने वाले विद्वान हैं और यदि इस शैली का प्रलेखन नहीं किया जाता है तो हम शास्त्रीय परंपरा के इस समृद्ध स्रोत को हमेशा के लिए खो सकते हैं। साम परंपरा को यूनेस्को द्वारा अमूर्त विरासत के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में मान्यता दे दी गई है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह विशेषज्ञों का एक अंश कालिक कार्य है।
संरक्षणकी स्थिति:यह एक समाप्त होती परंपरा है।	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत:	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य**प्रदर्शन** **संगीत वाद्य यंत्र**	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	लोहित
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	मिशमी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	इन वाद्य यंत्रों का प्रयोग शमन के अनुष्ठान नृत्य में किया जाता है।

विवरण:

वाद्य यंत्र जैसे (1) छोटा ड्रम (2) तार से बंधे वाद्य यंत्र (3) मैलेट ड्रम आदि विशेषज्ञों द्वारा स्थानीय स्तर पर बनाए जाते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह विशेषज्ञों का एक अंश कालिक कार्य है।

संरक्षणकी स्थिति:यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	नौमती बाजा
	अंग्रेजीसमतुल्य	Musical Instrument (drum)
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	सिक्किम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीयसमूह	जाति	दमई (अनुसूचित जाति)
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	- - - इसे त्योहार पर बजाया जाता है।
विवरण: यह एक प्रकार का ड्रम है।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इसका कुछ आर्थिक महत्व है। यह उनका पारंपरिक व्यवसाय था।	
संरक्षणकी स्थिति:यह एक समाप्त होती परंपरा है: आजकल दमई लोगों द्वारा इसका प्रयोग बहुत कम किया जाता है।		
संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	जलसा
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गौडाली
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: भक्ति गीत। माँ तालुजा भवानी की आरती।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	सूरत
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	वग्नेसा
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	चौधरी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: विवाह और होली वाद्य यंत्र - पौरी, तरपा		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सुरेश चौधरी - अगुआ	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	बिलासपुर
	राज्य	छत्तीसगढ़
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	सतनामी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: विवाह और होली वाद्य यंत्र - पौरी, तरपा		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	बिलासपुर
	राज्य	छत्तीसगढ़
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	सतनामी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: मीना रात्रे - बार्तृहरि गाथा		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	सूरत
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गमित
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: गमित आदिवासी नचानू (विवाह गीत)		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	धन सुख बाई छगन भाई	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	स्वांग जाति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

ये कुल देवताओं और संबंधित कहानियों के बारे में बताते हैं। इनका प्रमुख व्यवसाय कृषि है। इनका संगीत औषधीय पौधों से संबंधित होता है। ये इस आधुनिक दुनिया की तुलना में बहुत जल्दी महिलाओं और उनके विकास के बारे में बात करते हैं। ये मूल्यों की बात करते हैं जिन्हें वे वर्तमान स्वरूप में ही पीढ़ी दर पीढ़ी अंतरित करने का प्रयास कर रहे हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:मौखिक रूप से संरक्षण किया जा रहा है।

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो

सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	दंडर समाज
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

ये मूल रूप से घुमंतू होते हैं। ये प्रत्येक 6 माह में एक गाँव से दूसरे गाँव में जाते रहते हैं। ये गीत बकरियों, गायों आदि को बाहर ले जाने के दौरान गाए जाते हैं। ये गुरुदेव और कंडोवा की पूजा करते हैं जो उनके मुख्य देव हैं। ये पारंपरिक गीत और धार्मिक गीत गाते हैं। यह बताता है कि कैसे यहाँ के लोगों ने ब्रिटिश सरकार को महाराष्ट्र में रेलवे ट्रैक बनाने का रास्ता दिखाया। इन लोगों ने खंडाला घाट तक जाने के लिए मार्ग बनाने में सहायता की। इनकी एक मंडली है 'पारंपरिक लोक कला संवर्धन केंद्र'। इनका मुख्य व्यवसाय पशुपालन है (चरवाहे जो बकरियों की देखभाल करते हैं)।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	शिवानंद
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:मौखिक रूप से संरक्षण किया जा रहा है।	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो	
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	धारवाड़ जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

शिवराम बताते हैं कि गोंडली समाज के 1000 वर्ष पहले के रिकॉर्ड उपलब्ध हैं। वे गोंडली समाज और शिवाजी महाराज से जुड़ी ऐतिहासिक कहानी के बारे में बताते हैं। इस समाज की परंपरा माँ रेणुका येल्लम्मा से संबंधित है। वे अन्य देवियों के बारे में बताते हैं जिनके उपदेश वे सुनाते हैं। ऐतिहासिक कहानियों के गीत साधु, संत, कविताओं में छुपे तत्व से संबंधित होते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	नरलोग, कर्नाटक के धारवाड़ जिले के शिवराम
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:लिखित और मौखिक रूप से संरक्षण किया जा रहा है।

संरक्षणात्मकउपाय:आर्थिक उत्थान की आवश्यकता है।

उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो

सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गोंडवी जनजाति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

वे महिसासुरमर्दिनी के नृत्य और इसकी प्रासंगिकता की बात करते हैं। वे उन पर्यावरणीय स्थितियों के बारे में तथा औषधीय पौधों के बारे में भी बात करते हैं जिन्हें कविताएं गा कर मौखिक माध्यम से बनाए रखा गया है। उसके बाद वे समाज में अपनी स्थिति के बारे में बात करते हैं जहाँ उन्हें अछूत माना जाता है और उन्हें पूजा स्थल में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाती। वे शिक्षा के महत्व पर ज़ोर देते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	लातूर जिले, शिवराज चौक, महाराष्ट्र के राजेन्द्र वनारसे
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	खराब

संरक्षणकी स्थिति:मौखिक रूप से संरक्षण किया जा रहा है।

संरक्षणात्मकउपाय:सहायता की आवश्यकता है।

उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो

सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गोंडली समाज
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

यहाँ वे अपनी विवाह परंपराओं तथा संबंधित गीतों के बारे में बात करते हैं। उनकी कुल देवी रेणुका माता और कुलजा भवंत है। अपने दिमाग को केन्द्रित रखते हुए वे आज की सांसारिक आवश्यकताओं के बारे में सोचते हैं और इसके लिए काम करते हैं। अपनी परंपरा का संरक्षण करना उनका मुख्य उद्देश्य है परंतु इसके साथ-साथ वे उन महिलाओं की सहायता करते हैं जो अशिक्षित हैं और अपनी आजीविका का अर्जन नहीं कर पा रही हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो

सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	बीड जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	पारदियादी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

ये जंगल में रहते हैं। इनके पास प्रकृति की अत्यधिक जानकारी होती है। वे पक्षी की आवाज की नकल कर सकते हैं और प्रकृति के अनुसार अपने आप को ढाल सकते हैं। ये लगभग 25 परिवार हैं जो एक साथ रहते हैं। उनकी आदि भाषा पड़ी भाषा है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	महाराष्ट्र के विभेषण
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:मौखिक रूप से संरक्षण किया जा रहा है।

संरक्षणात्मकउपाय:सहायता की आवश्यकता है।

उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो

सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	पंचमहल
	राज्य	गुजरात
	जिला/तहसील	लुनावाला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

ये मूल रूप से मदारी हैं। ये जहरीले साँपों, बिच्छुओं आदि के साथ खेलते हैं और लोगों को ये खेल दिखाते हैं। इनके पास जड़ी-बूटियों की भी जानकारी होती है और वे इसकी सहायता से रोगियों का उपचार करते हैं। यह उनका पैतृक व्यवसाय है। ये शीतला माता की पूजा करते हैं। ये होली माता को मानते हैं और ये होली के माह के दौरान नृत्य करते हैं। ये मूल रूप से दुल्हन और दूल्हे को खुश करने के लिए नृत्य करते हैं। ये गुजराती बोलते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	पंचमहल, लुनावाला जिला के बाबूलाल (मदरी)
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो	
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	भील जाति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

वे अपने कुल देवता याहामोगी के बारे में बात करते हैं और बताते हैं कि कैसे याहामोगी माता उनके जीवन से जुड़ीं। वे इस नाम से याहामोगी नामक एक मेला आयोजित करते हैं। वे विवाह परंपरा के बारे में भी बात करते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	महाराष्ट्र के बस्तीराम नायक
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:मौखिक रूप से संरक्षण किया जा रहा है।

संरक्षणात्मकउपाय:सहायता की आवश्यकता है।

उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो

सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	श्रानी गीता, बसोआ गीता
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	उत्तर भारत
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	कुल्लू और चंबा
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	अन्य और सभी जातियों द्वारा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	त्योहार, मार्च और अप्रैल के माह में।

विवरण:

1. श्रानी गीत 7 वर्ष से 20 वर्ष की आयु की अविवाहित युवतियों द्वारा गाए जाते हैं। ये मार्च के माह में, विशेष रूप से 14 मार्च से 14 अप्रैल के बीच देव-देवता के मंदिर में शाम के समय गाए जाते हैं। 2. बसोआ गीत कुल्लू जिले में विवाहित महिलाओं द्वारा मार्च और अप्रैल माह में 14 मार्च से 15 मई के बीच देव मंदिर के सामने गाए जाते हैं। चंबा में एक ओर प्रकार से चंबा शहर और भरमौर के जनजातीय क्षेत्र में बसोआ गीत केवल 1 अप्रैल से 20 अप्रैल के बीच गाए जाते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	समूह
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	सामान्य
संरक्षणकी स्थिति:लोक गीत।	
संरक्षणात्मकउपाय:वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी और रिकॉर्डिंग।	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत:	समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	एकतारा रुबाना, धनोदु, सारंदा
	अंग्रेजीसमतुल्य	तार वाले वाद्य यंत्र
उत्पत्ति	क्षेत्र	उत्तर भारत
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	कांगड़ा, कुल्लू, चंबा, बिलासपुर
जातीयसमूह	जाति	अनुसूचित जाति और राजपूत
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	त्योहार
विवरण:ये वाद्य यंत्र इन जिलों के विशेष मेलों में बजाए जाते हैं। कभी-कभी ये वाद्य यंत्र धार्मिक गीतों और लोक गीतों के साथ बजाए जाते हैं।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	व्यक्ति, गड्डी और ढोलारू गायक।	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	सामान्य	
संरक्षणकी स्थिति:लोक परंपराओं के साथ।		
संरक्षणात्मकउपाय:वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी और रिकॉर्डिंग।		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचनाका स्रोत:	समन्वयक:	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	पंचमुखी कहल, नागफनी, मोतु कहल, शिंग
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	उत्तर भारत
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	कुल्लू
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	अन्य
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	धार्मिक
विवरण:ये वाद्य यंत्र बैसाखी उत्सव पर विशेष देव उत्सव में बजाए जाते हैं।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	देवता द्वारा विशेष रूप से नियुक्त व्यक्ति।	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	सामान्य	
संरक्षणकी स्थिति:परंपरा के साथ।		
संरक्षणात्मकउपाय:वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी और रिकॉर्डिंग।		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचनाका स्रोत:	समन्वयक:	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	फरी, लोकवाद्य
	अंग्रेजीसमतुल्य	Non-percussion instrument
उत्पत्ति	क्षेत्र	उत्तर भारत
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	मंडी (करसोग)
जातीयसमूह	जाति	अनुसूचित जाति
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	देव संस्कृति। देव संस्कृति के साथ त्योहार।

विवरण:

फरी एक पारंपरिक वाद्य यंत्र है जिसे मंडी जिले में देवता के विशेष उत्सव में बजाया जाता है। इसे अन्य वाद्य यंत्रों के बीच एक जेठ वाद्य (बड़ा वाद्य) कहा जाता है। आजकल इसकी परंपरा दिन-प्रति-दिन समाप्त होती जा रही है। इसका प्रलेखन किए जाने की आवश्यकता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	फरी वादक (बजाने वाला) एक वंशगत पारंपरिक प्रथा है।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	खराब
संरक्षणकी स्थिति:देव संस्कृति के साथ।	
संरक्षणात्मकउपाय:वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी और रिकॉर्डिंग।	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत:	समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	बाड़ी गाना
	अंग्रेजीसमतुल्य	Songs of Baadi
उत्पत्ति	क्षेत्र	घनस्याली नगर
	राज्य	उत्तरांचल
	जिला/तहसील	टिहरी गढ़वाल
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	बाड़
	अन्य	अन्य
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	धार्मिक त्योहार
विवरण: टिहरी के राजा के पूर्व संगीत वंशावलीकार। इस समुदाय ने देश की आजादी के बाद से संरक्षण का स्रोत खो दिया है। अब इन्हें विवाह समारोहों और रामलीलाओं में गीत गाने के लिए बहुत कम बुलाया जाता है।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	शिव चरण - जिला पंचायत प्रमुख नहीं, बल्कि बाड़ी समुदाय।	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	बहुत खराब - ये अधिकतर मैदानी इलाकों में रहने वाले परिवार के सदस्यों पर निर्भर हैं।	
संरक्षणकी स्थिति:इनमें से अधिकतर गीत, जो उत्तरांचल के लोक संगीत के मूल हैं, कहीं भी रिकॉर्ड नहीं किए गए हैं और ये खो दिए जाने की प्रक्रिया में हैं।		
संरक्षणात्मकउपाय:घनस्याल में एक लोक संगीत तथा नृत्य विद्यालय शुरू करने के उनके प्रयासों में सहयोग।		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचनाका स्रोत: स्टेनफन फिओल	समन्वयक:	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	लमन बाजूबंद
	अंग्रेजीसमतुल्य	Shepherd songs, Love songs.
उत्पत्ति	क्षेत्र	हरीपुर (लुवानु गाँव)
	राज्य	उत्तरांचल
	जिला/तहसील	देहरादून जिला
जातीयसमूह	जाति	दक्की
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	लौकिक त्योहार

विवरण:

ये गीत जीवन जीने के उस तरीके को दर्शाते हैं जो तेजी से समाप्त हो रहा है, जब ऊंचे चारागाह में पशुओं को चराना इस क्षेत्र के लोगों का प्रमुख आय स्रोत था। वनों और बगवाल को समाप्त किए जाने के साथ इन रूमानी गीतों का भी समापन हो गया है जो इन पर्वत घाटियों में गाए जाते थे।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	दीवान सिंह इस परिवार के समूह मुखिया हैं, जिनका घर हरीपुर के क्वानु गाँव में है। दक्की (बाजगी) समुदाय, 25 लोगों का परिवार।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	खराब, ये संगीत कार्यक्रमों के माध्यम से जीविकोपार्जन करने का प्रयास कर रहे हैं।

संरक्षणकी स्थिति:ये गीत उनके प्रदर्शनों का एक हिस्सा हैं।

संरक्षणात्मकउपाय:घनस्याल में एक लोक संगीत तथा नृत्य विद्यालय शुरू करने के उनके प्रयासों में सहयोग।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:स्टेनफन फिओल समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	सारदी
	अंग्रेजीसमतुल्य	Sarangi (Local version)
उत्पत्ति	क्षेत्र	बावर - दकना के ऊपर
	राज्य	उत्तरांचल
	जिला/तहसील	उत्तरकाशी
जातीयसमूह	जाति	दक्की (बोज़गी)
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

पूरे बावर क्षेत्र में सारदी (स्थानीय सारंगी) की इस स्थानीय वाद्य यंत्र परंपरा के केवल दो जीवित कलाकार हैं। यह गायकों के लिए और अलग से भी मंदिर में होने वाले सभी आयोजनों में ढ़ोल/दमौन के साथ बजाया जाता था।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	इनके नामों की जांच करनी पड़ेगी - दोनों व्यक्ति आयु के 70 के दशक में हैं, घनानंद
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	बहुत खराब

संरक्षणकी स्थिति:ये परंपरा लगभग विलुप्त हो चुकी है, जो वाद्य यंत्र बचे हैं वे इन दो कलाकारों के हाथों में हैं।

संरक्षणात्मकउपाय:इनमें से एक अथवा दोनों को पहाड़ों में इस कला को सिखाने का कार्य दिया जाए ताकि वे इस संगीत परंपरा को आगे अंतरित कर सकें।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:स्टेनफन फिओल - देहरादून समन्वयक: वीरेंद्र बांगरू
09412998070

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	बिया नाम/जोरा नाम
	अंग्रेजीसमतुल्य	Marriage songs
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	ऊपरी और मध्य असम के सभी जिले
जातीयसमूह	जाति	असमिया हिन्दू जाति
	जनजाति	कुछ मैदानी जनजातियाँ
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	महिला
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई **लौकिक** त्योहार	यह कुछ गानों की एक धर्म से असंबंधित परंपरा है।

विवरण:

दो प्रकार के "बिया नाम" हैं 1) पूरी तरह से कर्मकांडी जिनमें राम, सीता, शिव और पार्वती के नाम प्रयोग किए जाते हैं अथवा रामायण अथवा पुराणों के कुछ अध्यायों का वर्णन किया जाता है; 2) 'जोरा नाम' ऐसे गाने होते हैं जिन्हें केवल मनोरंजन तथा हास्य के लिए गाया जाता है। 'जोरा नाम' में दुल्हन की ओर की लड़कियों और दूल्हे की ओर की लड़कियों के बीच उचित 'जोरा नाम' के माध्यम से एक प्रकार की प्रतिस्पर्धा की जाती है। इनमें से अधिकतर गाने व्यक्तियों, दुल्हन अथवा दूल्हे अथवा आयोजन में उपस्थित उनके रिशतेदारों की आलोचना होते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	हिन्दू असमिया जाति समूह, विशेष रूप से महिलाएं।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इनका कोई आर्थिक महत्व नहीं है

संरक्षणकी स्थिति:ये कुछ हद तक गांवों में प्रचालन में है।

संरक्षणात्मकउपाय:व्यक्तिगत विद्यार्थियों द्वारा प्रलेखन के अतिरिक्त कोई पुख्ता प्रयास नहीं किए जा रहे हैं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	धायनाम/निसोकनी गीत
	अंग्रेजीसमतुल्य	Folk lullaby
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीयसमूह	जाति	असमिया हिन्दू जातियाँ
	जनजाति	कुछ मैदानी जनजातियाँ
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित लोक गीत परंपरा है।

विवरण:

'धायनाम' (पालने वाली माता का गीत) अथवा 'निसुकानी' गीत की यह लोक गीत परंपरा असमिया सामाजिक जीवन और इसके दर्शन के एक रुचिकर पहलू को दर्शाती है - इन गानों के माध्यम से सरल भाषा में व्यक्त करके। कई मामलों में गाना शुरू करने के लिए बार-बार राम का नाम लिया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	असमिया हिन्दू जातियाँ और कुछ मैदानी जनजातियाँ।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस परंपरा का कोई आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:असम के कुछ आधुनिक गायकों ने पूर्व में इन गानों को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया था।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	वैरागी गीत
	अंग्रेजीसमतुल्य	Folk song of Aseeties
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	असम के सभी जिले
जातीयसमूह	जाति	असमिया हिन्दू जातियाँ
	जनजाति	कुछ मैदानी जनजातियाँ
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	ये दार्शनिक गीत होते हैं और कुछ-कुछ धार्मिक होते हैं।

विवरण:

वैरागी गीत एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमने वाले संन्यासियों द्वारा गाए जाते हैं जिन्हें 'वैरागी' कहा जाता है। इन लोक गीतों का केंद्रीय विषय सांसारिक जीवन, जिसे 'असार' (जिसका कोई लक्ष्य/अर्थ नहीं है) माना जाता है, से अलग होने के बारे में होता है - दुनिया में सब कुछ भ्रम है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	असमिया हिन्दू जातियाँ
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस परंपरा का कोई विशेष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:असम के कुछ आधुनिक गायकों ने पूर्व में इस परंपरा को पुनरुजीवित करने का प्रयास किया था।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	वनगीत
	अंग्रेजीसमतुल्य	Folk songs of nature
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	ऊपरी असम के जिले
जातीयसमूह	जाति	असमिया हिन्दू जातियाँ
	जनजाति	कुछ मैदानी जनजातियाँ
	अन्य	असमिया मुस्लिम
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	ये धर्म से असंबंधित लोक गीत हैं।

विवरण:

'वन गीत' असम के बिहू गीत से अलग हैं। 'बिहू गीत' प्रकृति का लोक वर्णनात्मक विवरण होता है। कभी-कभी वन गीत की धुनें बिहू गीत के समान होती हैं जिनकी लय तेज होती है। वन गीत के साथ गायक द्वारा "टुकरी" (एक तार वाला संगीत वाद्य यंत्र) का प्रयोग किया जाता है। यह बिहू के विपरीत एक एकल गीत होता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	असमिया हिन्दू जातियाँ, मुस्लिम और कुछ मैदानी जनजातियाँ।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस परंपरा का कोई आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:असम के कुछ आधुनिक गायकों ने पूर्व में इन लोक गानों को पुनरुजीवित करने का प्रयास किया था।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	पुमा जाई/लांगलम जाई
	अंग्रेजीसमतुल्य	Folk songs
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	ये धर्म से असंबंधित लोक गीत हैं।

विवरण:

ये लोक-गीत सामुदायिक भोज के दौरान लोक नृतकों द्वारा किए जाने वाले नृत्य के साथ गाए जाते थे। इनमें से अधिकतर लोक गीत मिजोरम में ईसाई धर्म में धर्मांतरण के शुरुआती चरण के दौरान ईसाई धर्म गीतों को बाहर करने के लिए लोकप्रिय बनाए गए थे।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सभी मिज़ो वंश समूह।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस परंपरा का कोई विशेष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	थंगतुंग ताम्रिक्क
	अंग्रेजीसमतुल्य	Jew's hisp
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह एक धर्म से असंबंधित संगीत वाद्य यंत्र है।

विवरण:

यह संगीत वाद्य यंत्र लगभग 4 इंच लंबे बांस के टुकड़े से बनाया जाता है, जिसे बीच में एक जीभ जैसा अनुबंध छोड़ते हुए कुशलतापूर्वक काटा जाता है। यह वाद्य यंत्र उंगली का प्रयोग करके और इसे बजाने वाले के मुंह में पकड़ कर बजाया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	मिज़ो वंश।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस परंपरा का कोई आर्थिक महत्व नहीं है।
संरक्षणकी स्थिति:यह एक समाप्त होती परंपरा है।	
संरक्षणात्मकउपाय:अभी तक कुछ खास नहीं।	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास	समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	कोल्हापुर
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	शाहिर गोंडली
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: राष्ट्रीय पवड़ा अथवा सामाजिक गीत		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि): वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	लातूर, उजिनी
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	डंगर जनजाति
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	पुरुष/महिला/दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: डंगर गीत। गुरुदेव की स्तुति में।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि): वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/**संगीत**/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	कुरुमकूझल
	अंग्रेजीसमतुल्य	A musical instrument in Sopana practice
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	केरल
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

कुरुमकुझल केरल का एकमात्र उपलब्ध राग वाद्य है। इस प्रकार यह केरल के सोपानम संगीत की पूर्ण परंपरा का एकमात्र साक्ष्य है। शहनाई के आकार के समान यह वास्तव में एक छोटा पाइप होता है। दुर्भाग्य से इस वाद्य यंत्र की संभावनाओं को पर्याप्त रूप से तलाशा नहीं गया है, और न ही इसके उपयोग का प्रलेखन किया गया है। इस परियोजना का उद्देश्य इन पहलुओं पर ज़ोर देना और एक एकल वाद्य यंत्र के रूप में इसके कद का पता लगाने की संभावनाएँ तलाश करना है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: प्रो. सेत्तार

रिवाज

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य**प्रदर्शन रिवाज**	
परंपराका नाम	स्थानीय	संगदान
	अंग्रेजीसमतुल्य	Life cycle ritual
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	उत्तरी त्रिपुरा जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	चकमा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	दोनों
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	यह जीवन-चक्र से संबंधित एक धार्मिक कार्यक्रम है। चकमा लोग बुद्ध धर्म के होते हैं।

विवरण:

यह जीवन के एक निश्चित चरण में पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा किया जाने वाला एक जीवन-चक्र संस्कार है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह एक संस्कार है। इसका कोई आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:चकमा लोग अब इस संस्कार को नहीं करते।

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:ए. के. दास

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	देव बर्थ
	अंग्रेजीसमतुल्य	The story of gods
उत्पत्ति	क्षेत्र	पार्वती घाटी
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	कुल्लू
जातीयसमूह	जाति	ठाकुर
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

देव बर्थ, भगवान की कहानी, गाँव में धार्मिक अवसरों और त्योहारों पर गाई जाती है। इन गानों में गाँव के देवता की उत्पत्ति और मंदिरों से संबंधित संस्कारों का उल्लेख किया जाता है। हिमाचल में यह एक समाप्त होती परंपरा है और अब इसे मनाने वाले बहुत कम लोग हैं। इन गानों को संकलित करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया है। श्री अमरनाथ ठाकुर को पूरी देव बर्थ याद होने के साथ-साथ पुरानी बोलियों की भी जानकारी है जो अब लुप्त हो चुकी हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	श्री अमरनाथ ठाकुर निवासी तोश गाँव, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	श्री अमरनाथ ठाकुर एक किसान हैं।

संरक्षणकी स्थिति:यह परंपरा समाप्त होती जा रही है क्योंकि अब इसे मानने वाले बहुत कम हैं। इसके अतिरिक्त यह पुरानी बोली में है और कई जगहों पर गायक इन पंक्तियों का अर्थ भी नहीं जानते हैं।

संरक्षणात्मकउपाय:देव बर्थ को रिकॉर्ड किए जाने और मुद्रित रूप में उपलब्ध कराए जाने की आवश्यकता है।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: वीरेंद्र बाँगड़ू

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	हॉर्न लोक नाट्य
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	उत्तर भारत
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	कुल्लू और चंबा
जातीयसमूह	जाति	स्वाँगी
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	धार्मिक और लौकिक

विवरण:

हॉर्न लोक नाटक हिमाचल प्रदेश के कुल्लू और चंबा जिलों में स्वांगियों द्वारा किया जाता है। नाटक का यह लोक स्वरूप कुल्लू और चंबा के दूरस्थ गांवों में अक्तूबर और जनवरी के माह के बीच होता है। बीस वर्ष पहले तक स्वाँगी नाटक करने के लिए एक गाँव से दूसरे गाँव जाते थे। लोग उन्हें पारिश्रमिक के रूप में पैसे, कपड़े आदि देते थे।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	स्वाँगी
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	खराब

संरक्षणकी स्थिति:

संरक्षणात्मकउपाय:वीडियोग्राफी - फोटोग्राफी और रिकॉर्डिंग

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: समन्वयक: वीरेंद्र बांगड़ू

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	देव गाथा
	अंग्रेजीसमतुल्य	Songs of God and Goddesses
उत्पत्ति	क्षेत्र	उत्तर भारत
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	कुल्लू, मंडी, शिमला और किम्माउ
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	किम्माउ की जनजातियाँ
	अन्य	देवता के गुर
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	धार्मिक, देवता के साथ।

विवरण:

मार्च और फरवरी के माह में कुल्लू, शिमला, मंडी और किम्माउ जिले के देवता और देवियाँ देवताओं के राजा इन्द्र के दरबार से वापस घर आते थे और उनके घर आने पर देवता का गुर (चेला) देवता का इतिहास सुनाता है।

वह अपनी कहानी में उसका भी उल्लेख करता है जिसे 'भर्थ' कहा जाता है अर्थात उस गाँव में उसकी पहली उपस्थिति और वह कहाँ से आया है। आज-कल भर्थ दिन प्रति दिन समाप्त होते जा रहे हैं। इसलिए इन भर्थों का संरक्षण करने की अत्यधिक आवश्यकता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	देवता का गुर
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	सामान्य

संरक्षणकी स्थिति:वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी और रिकॉर्डिंग, लिखित दस्तावेज़।

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: समन्वयक: डॉ. सूरत ठाकुर और वीरेंद्र बांगड़ू

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	करई कनोइबोई
	अंग्रेजीसमतुल्य	Death Ritual
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मणिपुर
	जिला/तहसील	तामेंगलोंग जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	कचा नागा
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	यह एक पारंपरिक धार्मिक संस्कार होता है जिसे मृतक के वंश के सदस्य द्वारा किया जाता है।

विवरण:

यह एक प्रकार से मृतक को विदाई देने का संस्कार होता है, जो एक मुर्गे (कसीरूई) की बलि से शुरू होता है। बाद में इस मुर्गे को जंगल में फेंक दिया जाता है। इस संस्कार के दौरान मातम मनाने वाले विलाप के गीत गाते हैं। गाय, भैंस और मिथुन जैसे पशुओं की बलि दी जाती है और इनके मांस को विलाप करने वालों में बांटा जाता है। मृतक के शरीर को एक ताबूत में कब्र के अंदर रखा जाता है और दफनाया जाता है। मृतक के शरीर को उसकी व्यक्तिगत वस्तुओं के साथ दफनाया जाता है जैसे दाओ (काटने का औज़ार), ढाल, पका हुआ मांस, चावल की बीयर, कपड़े आदि। कब्र को बांस के एक फ्रेम में बंद किया जाता है। चकोक संस्कार तक मृतक को प्रति दिन खाना दिया जाता है। और इसके बाद परिवार की शुद्धि होती है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	कथा नागा के सभी वर्ग समूह
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस संस्कार का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:ईसाई धर्म में धर्मांतरण के कारण यह रिवाज धीरे-धीरे समाप्त होने के कगार पर है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	तुलानी बिया/शांति बिया
	अंग्रेजीसमतुल्य	Puberty ritual
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	कार्बी को छोड़ कर असम के सभी जिले
जातीयसमूह	जाति	सभी हिन्दू जातियाँ
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	महिला
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	यह पारंपरिक प्रथाओं का रिवाज है। यह पूरी तरह से धार्मिक नहीं है।

विवरण: यह पारंपरिक रिवाज युवा लड़कियों के प्रथम मासिक चक्र के साथ शुरू होता है। उस लड़की को एक सप्ताह तक एक कमरे में बंद कर दिया जाता है और कोई पुरुष उस कमरे में नहीं जा सकता। एक सप्ताह के बाद महिलाओं द्वारा उस लड़की के चेहरे और शरीर पर हल्दी और लिंटेड ('माटी-माह') का पेस्ट लगा कर उसे रिवाज के अनुसार नहलाया जाता है और इस रिवाज के साथ ऐसे अवसर के लिए बनाए गए लोक गीत गाए जाते हैं। उसके बाद उसे 'खाड़ी' (केले के पेड़ों से बनाई गई संरचना) के चारों ओर चक्कर लगाने का निर्देश दिया जाता है जिसे पहले उसकी माता लगाती है और उसके बाद अन्य सदस्य और रिश्तेदार लगाते हैं। उसके बाद वह लड़की सबसे अच्छे सिल्क के कपड़े, पारंपरिक आभूषण जैसे सोने की "चिटीपटी" (हैड लेंड), "मुथिखरू" अथवा "गमखरू" (सोने का कंगन), विभिन्न प्रकार के हार, उंगली की अंगूठियाँ आदि पहनती है और उसे एक दुल्हन की तरह विशेष रूप से सजाए गए स्थान पर बैठाया जाता है जहां उसे संबंधियों तथा सहेलियों द्वारा उपहार तथा आशीर्वाद दिया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	असमिया हिन्दू जातियाँ
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	ये अधिकतर किसान होते हैं। लड़की विवाह की आयु की हो गई है, इसे छोड़ कर इसका कोई आर्थिक महत्व नहीं होता।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:अब तक कुछ नहीं। यहाँ तक कि शहरी क्षेत्रों में अब इसे गुप्त रखा जाता है कि लड़की यौवन में प्रवेश कर चुकी है।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास		
सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	बियाखा
	अंग्रेजीसमतुल्य	Marriage ritual
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मेघालय
	जिला/तहसील	गारो हिल्स
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गारो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक सामाजिक आयोजन है।

विवरण:

पारंपरिक गारो विवाह एक लड़की द्वारा लड़का चुने जाने के साथ शुरू होता है। इसके बाद दूल्हे को दुल्हन के संबंधियों द्वारा पकड़ कर रखे जाने की प्रथा पूरी की जाती है। यह तीन बार किया जाता है। यदि लड़का चौथी बार भी भाग जाता है - तो यह उसकी अनिच्छा दर्शाता है। लड़के के तीसरी बार प्रथागत रूप से भागने के बाद - विवाह सामाजिक रीति-रिवाजों के अनुसार किया जाता है। यहाँ किए जाने वाला एक रिवाज एपिस्कोपोलोजी का एक विशिष्ट उदाहरण है। इस रिवाज में एक पुजारी दो मुर्गों के सिर काटता है और जमीन पर फेंकता है। यदि दोनों सिर एक दूसरे के सामने आते हैं तो इसे शुभ संकेत माना जाता है। इसके बाद समृद्धि तथा तरक्की के लिए रिवाज के अंतर्गत जलाई गई आग में तेल डाला जाता है और सूर्य, चंद्रमा, अग्नि और सृजनकर्ता की पूजा की जाती है। अंत में भोज का आयोजन किया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	मेघालय की गारो जनजाति - विशेष रूप से गैर-ईसाई गारो।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इसका अप्रत्यक्ष आर्थिक महत्व है।
संरक्षणकी स्थिति:यह परंपरा लगभग समाप्त हो चुकी है।	
संरक्षणात्मकउपाय:कुछ नहीं	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास	

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	का जियांग पुइखा
	अंग्रेजी समतुल्य	Traditional Marriage
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	मेघालय
	जिला तहसील/	खासी जयंतिया हिल्स
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	खासी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक प्रथागत रिवाज है।

विवरण:खासी समुदाय में तीन प्रकार के विवाह प्रचलित हैं - 1) "पिनहेयर सिंजत" 2) "लामदोह", 3) "लिंगम"। आम तौर पर पहले तरीके से विवाह किया जाता है। जो लोग पैसा खर्च नहीं करना चाहते वे अन्य दो तरीकों से विवाह करते हैं। विवाह की पहली पद्धति में दूल्हे के संबंधियों को तीन बार दुल्हन के घर जाना होता है। तीसरी बार जाने पर वे विवाह की तारीख, स्थान और अन्य आवश्यक चीजों को अंतिम रूप देते हैं। विवाह के दिन दूल्हा पारंपरिक पोशाक - "दागरी" (हैड-गेयर), "धोती" (कमर के नीचे का परिधान) और आभूषण पहनता है और दुल्हन के घर जाता है और अपने विशेष आसन पर बैठता है और दुल्हन उसके बाईं ओर बैठती है। इस समय संबंधित परिवारों के बीच आशीर्वाद स्वरूप उपहारों, काकियत (स्थानीय शराब) का आदान-प्रदान होता है। इसके बाद, दूल्हा दुल्हन को सोने की अंगूठी पहनाता है और दुल्हन भी दूल्हे को अंगूठी पहनाती है। इसके बाद चावल के थैलों का आदान-प्रदान किया जाता है। इस समय लिंगदोह (पुजारी) आता है और चावल के थैलों पर शराब उड़ेलता है और तीन सूखी मछलियाँ वहाँ रखता है। उसके बाद लिंगदोह देवताओं और देवियों का आह्वान करता है और लड़का तथा लड़की को पति और पत्नी घोषित करता है। इसके बाद पुजारी तीन बार शराब उड़ेलता है और 'है-हो' बोलता है। इसके बाद चावल की जांच की जाती है और इस अवसर पर सभी को शराब परोसी जाती है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	गैर-ईसाई खासी
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	इसका कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है। ईसाई धर्म के कारण लगभग चलन से बाहर हो चुकी है।

संरक्षणात्मक उपाय :अब तक कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि) :

सूचना का स्रोत :डॉ. ए. के. दास

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	यू-थ्लेन
	अंग्रेजी समतुल्य	Snake worship
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	मेघालय
	जिला तहसील/	खासी और जयंतिया हिल्स
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	खासी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह समृद्धि पाने के लिए किया जाने वाला एक जादू संबंधी रिवाज है।
विवरण:यह जादुई प्रथा केवल यू-थ्लेन पूजा में विश्वास करने वाले 'वंशों' के बीच प्रचालित है। यह पूजा मनुष्य का रक्त चढ़ा कर की जाती है। हाल ही के समय में गुप्त रूप से बच्चों की नाक में से खून निकाला जाता था और साँपों को चढ़ाया जाता था। इस पूजा में मानव के रक्त के स्थान पर मनुष्य के बालों, नाखून और यहाँ तक कि कपड़े के टुकड़े का भी प्रयोग किया जाता है। जो लोग रक्त निकालने का काम करते हैं उन्हें "नोन्सेमोई" के नाम से जाना जाता है। यह पूजा पुजारिनों द्वारा की जाती है। यह माना जाता है कि जिस व्यक्ति का खून लिया जाता है इस जादुई संस्कार के बाद उसकी मृत्यु हो जाती है।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	कुछ विशेष वंश समूह इस प्रथा से जुड़े हैं। सामान्य तौर पर गैर-ईसाई ख़ासी इन संस्कारों में सम्मिलित होते हैं।	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	यह संस्कार व्यक्ति की समृद्धि बढ़ाने के लिए किया जाता है।	
संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।		
संरक्षणात्मक उपाय :कुछ खास नहीं		
उदाहरण (फोटो आदि) :		
सूचना का स्रोत :डॉ. ए. के. दास		

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	धुतिमिलोई
	अंग्रेजी समतुल्य	Puberty ritual
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला तहसील/	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	हरम
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	यह जीवन-चक्र से संबंधित एक धार्मिक प्रथा है।
विवरण:युवकों के यौवन की आयु में पहुँचने पर धुतिमिलोई संस्कार किया जाता है अर्थात लगभग 10-12 वर्ष की आयु में। इस संस्कार के दौरान लड़कों को अपने जननांगों को ढकने के लिए केवल एक छोटी लंगौटी (लांगटा) पहनने की अनुमति होती है और उसे प्रदूषण की अवधि से गुजरना होता है। इसके बाद अचाई (पुजारी) द्वारा शुद्धीकरण संस्कार किया जाता है और लड़कों को समाज के सदस्य के रूप में स्वीकार किया जाता है।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	हलम के सभी वंश समूह	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	कुछ विशेष नहीं	
संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है। शहरी क्षेत्रों में इसे बहुत कम माना जाता है।		
संरक्षणात्मक उपाय :कुछ खास नहीं		
उदाहरण (फोटो आदि) :		
सूचना का स्रोत :डॉ. ए. के. दास		

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	पौताखुतुनी
	अंग्रेजी समतुल्य	Sacred thread ceremony
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला तहसील/	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	जमातिया
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	यह पुरुष के जीवन-चक्र को चिह्नित करने वाला एक धार्मिक संस्कार है।

विवरण:

यह संस्कार लड़के के 10 से 12 वर्ष की आयु का होने पर किया जाता है। यह एक यौवन से संबंधित संस्कार नहीं है बल्कि यह हिन्दू ब्राह्मण रिवाज के जनेऊ (पवित्र धागा) संस्कार जैसा है, इसमें गर्दन के चारों ओर धागा डालने से पहले शुद्धीकरण किया जाता है। यह बच्चे को समाज में स्वीकार करने के लिए एक सांकेतिक संस्कार है।

परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	इस संस्कार का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	यह आर्थिक स्थिति को नहीं दर्शाता।

संरक्षण की स्थिति :हिन्दू संस्कृति के प्रभाव के कारण एक समाप्त हो रही परंपरा है।

संरक्षणात्मक उपाय :कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि) :

सूचना का स्रोत :डॉ. ए. के. दास

सामान्य स्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपरा का नाम	स्थानीय	धुतिमिलोई
	अंग्रेजी समतुल्य	Puberty ritual
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला तहसील/	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीय समूह	जाति	
	जनजाति	हलम
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक सांस्कृतिक महत्व-	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	यह जीवन-चक्र से संबंधित एक धार्मिक प्रथा है।
विवरण:युवकों के यौवन की आयु में पहुँचने पर धुतिमिलोई संस्कार किया जाता है अर्थात लगभग 10-12 वर्ष की आयु में। इस संस्कार के दौरान लड़कों को अपने जननांगों को ढकने के लिए केवल एक छोटी लंगौटी (लांगटा) पहनने की अनुमति होती है और उसे प्रदूषण की अवधि से गुजरना होता है। इसके बाद अचाई (पुजारी) द्वारा शुद्धीकरण संस्कार किया जाता है और लड़कों को समाज के सदस्य के रूप में स्वीकार किया जाता है।		
परंपरा से संबंधित व्यक्ति समूह का विवरण/	हलम के सभी वंश समूह	
आर्थिक स्थिति (व्यक्ति/समूह)	कुछ विशेष नहीं	
संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है। शहरी क्षेत्रों में इसे बहुत कम माना जाता है।		
संरक्षणात्मक उपाय :कुछ खास नहीं		
उदाहरण (फोटो आदि) :		
सूचना का स्रोत :डॉ. ए. के. दास		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	लंपरा
	अंग्रेजीसमतुल्य	Ritual of Lampra
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	उत्तरी त्रिपुरा जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	उचई
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	यह बुरी आत्मा को दूर भगाने का संस्कार है।
विवरण:उचई लोग स्थानीय ग्राम देवता लंपरा को प्रकट करने के लिए यह संस्कार करते हैं। मुर्गे की बलि दी जाती है और स्थानीय पुजारी द्वारा इसे देवता को चढ़ाया जाता है। यह मान्यता है कि यदि लंपरा प्रकट होते हैं तो वे बुरी आत्माओं को गाँव से दूर भगा देते हैं।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	यह संस्कार समुदाय द्वारा बीमारी और मृत्यु के दौरान किया जाता है।	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस संस्कार का कोई आर्थिक महत्व नहीं है।	
संरक्षणकी स्थिति: एक समाप्त हो रही परंपरा है।		
संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	कृष्य पद्धतियाँ और रिवाज
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	दक्षिण कन्नड़ का तटीय क्षेत्र
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:आधुनिकीकरण के कारण कृषि के विभिन्न चरणों से संबंधित बहुत सी पारंपरिक प्रथाएँ समाप्त होने की कगार पर हैं। ये प्रथाएँ मान्यताओं, सांस्कृतिक मूल्यों, सामाजिक पैटर्न, कृषि पद्धतियों की जानकारी और प्रकृति तथा पर्यावरण के साथ एक भावनात्मक तथा आध्यात्मिक जुड़ाव से काफी करीब से जुड़ी हुई हैं। पारंपरिक कृष्य पद्धतियों की जानकारी को संरक्षित करना आवश्यक है क्योंकि ये प्रकृति की शक्तियों को प्रकृति तथा मनुष्य दोनों के लाभ के लिए प्रयोग करने में देशी जानकारी को दर्शाता हैं।

त्योहार और रिवाज:

विशु (मकान मालिकों और किराएदारों के बीच पारंपरिक संबंध को दर्शाता है),*केड्डासो* (एक संस्कार जिसमें धरती माता को रजोधर्म वाली एक स्त्री माना जाता है);

पग्गु माह का अठारहवाँ दिन: परिवार के देवता की औपचारिक प्रार्थना करने के बाद बीज बोने की शुरुआत करना

अति माह की अमावस्या के दिन सूखे पेड़ की छाल के रस को निगलना (निरोधक उपचार), खेतों की सुरक्षा

अति कलेंजा, सोनादा जोगी मान्यताओं के अनुसार निरोधक उपाय

कटाई उत्सव - नई फसल को उत्सव मना कर घर लाना

दीपावली, बाली की पूजा, पशु की पूजा

दूसरी/तीसरी फसल *सुग्गी* और *कोलके* से संबंधित संस्कार

प्रदर्शन, खेल, अन्य शौक

क) *केड्डासो* के दौरान शिकार

ख) *अति कलेंजा, सोनादा जोगी* (रिवाज से संबंधित)

ग) फसल कटाई के गीत गाना

घ) *कंबला*

ड.) मुर्गों की लड़ाई

च) खेल छ) *भूटा* प्रदर्शन भोज, विशेष व्यंजन आदि।	
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत:प्रो. सेत्तार	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	देवरा काडू
	अंग्रेजीसमतुल्य	Sacred Grove/forest
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	कोडागू
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:कर्नाटक के कोडागू जिले के प्रत्येक गाँव में लगभग दो से तीन एकड़ का एक पवित्र स्थान होता है। इसे *देवरा काडू* अथवा पवित्र स्थान कहा जाता है। ऐसे सभी पवित्र स्थानों का रखरखाव लोगों द्वारा किया जाता है और इन्हें *देवरा काडू* के रूप में पंजीकृत किया जाता है। प्रत्येक क्षेत्र एक विशेष देवता के लिए आरक्षित होता है। इस भूमि पर किसी प्रकार की खेती की अनुमति नहीं होती। इस क्षेत्र में पेड़ों की छंटाई, इन्हें जलाना, हटाना, गिराना भी निषिद्ध होता है। कोडागु क्षेत्र में 1,214 देवरा काडू हैं जो 2550 हेक्टेयर भूमि में स्थित हैं। इनमें से अधिकतर तीन से पाँच एकड़ के क्षेत्र में हैं। केवल पाँच देवरा काडू 100 एकड़ से अधिक क्षेत्र में स्थित हैं अर्थात इग्गुथप्पा देवरा काडू (358 एकड़), काटकेरी एषवारु अप्पन्द्रियप्पा देवरा काडू (323 एकड़), वलरूर थ्याथुर बसवेश्वरा देवरा काडू (304 एकड़), महाविष्णु देवरा काडू (208 एकड़) और अय्यप्पा देवरा काडू (141 एकड़)। इनमें से अधिकतर पवित्र वन देवताओं जैसे अय्यप्पा, भगवती, भद्रकाली, महादेव, चामुंडी, हरिजन देव, विष्णुमूर्ति, बसवेश्वर, दूर्गी और मरम्मा के लिए आरक्षित हैं। चूंकि इससे संबंधित यह रिवाज अब तक दुनिया से छुपा हुआ रहा है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:प्रो. सेत्तार

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	जनजातीय जीवन शैलियाँ
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	पश्चिमी घाट
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	उत्तर कन्नड़, दक्षिण कन्नड़, शिमोगा और कूर्ग
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

कर्नाटक में लगभग 50 जनजातीय समुदाय हैं। इन्हें मोटे तौर पर दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है - जिप्सी और अधिवासी। जिप्सी समुदाय के लोग उत्तरी कर्नाटक के मैदानों में फैले हुए हैं। अधिवासी उत्तर कन्नड़, दक्षिण कन्नड़, शिवमोगा, चिकमंगलूर और कूर्ग जिलों में स्थित पश्चिम घाट के वनों में रहते हैं। पश्चिम घाट को विश्व में जैव-विविधता के संबंध में एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। आज भी इस क्षेत्र में विभिन्न जनजातियों को खाना एकत्रित करने, शिकार, झूम कृषि का कार्य करते हुए और कृष्य श्रमिकों के रूप में काम करते हुए देखा जा सकता है। इनका लोक साहित्य, कला, विचार और जीवन जीने की शैली बहुत रोचक है।

सहयाद्रि श्रेणी की पर्वतीय जनजातियों के संबंध में पर्याप्त सूचना प्रलेखित नहीं की गई है। कूडिया की कोडावा भाषा, मालेकुड़िया की तुलु, यरवा की यरवा, मरेमन की जातीय भाषाएँ बोलने वाले लोग वे लोग हैं जो तुलु, कोरगा की कोरगा, कुनिबी की कोंकणी मिश्रित मराठी, गौलिगा की मराठी का प्रयोग करते हैं और कन्नड़ का प्रयोग करने वाले कम हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत:प्रो. सेत्तार	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	कोडलकोड़ाई - समुद्री न्यायालय - कासरगोड
	अंग्रेजीसमतुल्य	Rituals associated with the sea.
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	केरल
	जिला/तहसील	कासरगोड जिला: कोट्टिकुलम, किझुर, कुंबला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

यह उत्तरी केरल के मुक्कुवा लोगों (मछुआरे) में प्रचलित एक पारंपरिक प्रथा है। यह धार्मिक मंजूरी वाली एक अर्द्ध-न्यायिक प्रणाली है। जब कोई सदस्य कुछ गलत करता है तो उसे एक पूर्व-निर्धारित समय पर धार्मिक स्थान (मंदिर) पर बुलाया जाता है और उसके विरुद्ध आरोप पढ़े जाते हैं और उसे सफाई देने के लिए कहा जाता है। आरोपी के पास शिकायतकर्ता के मामले को गलत साबित करने का आधिकार होता है। यदि शिकायत की साक्ष्य से पुष्टि हो जाती है तो मंदिर के प्रमुख (देववाणी) निर्णय सुनाते हैं। दंड सामान्यत: जुर्माने, मंदिर में चढ़ावे, अलगाव तथा समुदाय से बहिष्कृत किए जाने के रूप में होता है। अभी भी यह प्रणाली कोट्टिकुलम, किझुर, कुंबला आदि के मछुआरों के बीच प्रचलित है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत:प्रो. सेत्तार	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	कन्नल कलमपट्टु
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	केरल
	जिला/तहसील	कन्नूर जिला और तटीय क्षेत्र जैसे मत्तूल पंचायत, नरथ, पयंगड़ी, वलपट्टनम आदि
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

यह केरल के कन्नूर जिले में प्रचलित एक बहुत कम देखा जाने वाला जादू है। यह पुलजा समुदाय (अनुसूचित जाति) की महिलाओं के शरीर में प्रवेश करने वाली बुरी आत्मा को दूर भगाने के लिए किया जाता है और ऐसा माना जाता है कि इससे बांझपन होता है। इस दौरान *चिम्मनक्कली* नामक एक नृत्य नाटक किया जाता है। यह एक प्रकार का मनोरंजन भी होता है। यह बच्चे के सुगम जन्म के लिए भी किया जाता है।

घर के सामने एक *कलम* (फर्श पर बनाया गया चित्र) बनाई जाती है और प्रभावित महिला को उस पर बैठाया जाता है। कलाकार वाद्य यंत्रों के साथ गाना शुरू करते हैं। यह संध्या के समय शुरू होता है और अगली सुबह समाप्त होता है। इन्हीं बुरी आत्माओं के बहुत से प्रदर्शन भी होते हैं जो वातावरण को डरावना बनाते हैं। वह महिला समाधि में चली जाती है और *कलम* को अपने सिर अथवा शरीर के साथ मलती है। यह माना जाता है कि इसके बाद वह एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दे पाएगी।

यह परंपरा विलुप्त होने के कगार पर है, चूंकि वर्तमान में बच्चे के जन्म के समय कोई भी जादू का प्रयोग करना पसंद नहीं करता। अब इन रिवाजों को करने के लिए बहुत कम कलाकार बचे हैं।

इसका मुख्य उद्देश्य इन जादूई कलाओं का एक वैज्ञानिक तरीके से प्रलेखन करने हेतु अध्ययन अथवा अनुसंधान करना है। इस उपचार के पीछे के विज्ञान को समझने के लिए गानों तथा दृश्यों की रिकॉर्डिंग भी आवश्यक है। *चिम्मनक्कली* का प्रदर्शन कन्नल्कलंपट्टु के संबंध में भी किया जाता है। यह एक कहानी का वर्णन करने वाला एक ग्रामीण नाटक होता है। यदि इसका उचित ढंग से प्रलेखन किया जाए तो नाटक के इतिहास पर और अध्ययन करना भी संभव है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:
संरक्षणात्मकउपाय:
उदाहरण (फोटो आदि):
सूचनाका स्रोत:प्रो. सेत्तार

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	पेरमतल्लु की संस्कृति
	अंग्रेजीसमतुल्य	'Women deities and Deification of women'
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	आंध्र प्रदेश
	जिला/तहसील	हैदराबाद, गुंटूर जिला, कृष्णा जिला, गोदावरी जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

महिला की देवी माँ के रूप में पूजा एक सदियों पुरानी परंपरा है। महिला को प्रजनन का मूर्त स्वरूप माना जाता है और मनुष्यों के जीवन का संरक्षक माना जाता है। पारंपरिक प्रथा में दो प्रकार की देवियाँ हैं: *योनिजा* और *अयोनिजा*। परंपरा दर्शाती है कि महिलाओं को उनकी मृत्यु के बाद ही देवी-सदृश माना जाता था। पेरमतुल्ला विधवा महिलाएं होती हैं जिन्होंने किसी महान कार्य के लिए अपना जीवन कुर्बान कर दिया। इस परियोजना का उद्देश्य विभिन्न स्थानिक क्षेत्रों (घर, समुदाय तथा भूभाग) और उनके संस्कृति केन्द्रों में पेरमतुल्ला महिलाओं की पहचान करना और मौखिक परंपरा, साहित्य आदि का एकत्रण तथा प्रलेखन करना है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:प्रो. सेत्तार

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	*पानराता*
	अंग्रेजीसमतुल्य	Rituals in Coastal Karnataka
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	तटीय कर्नाटक, कुंडपुरा, उडुपी
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

पानारा वैद्य समुदाय के होते हैं। एक डोड्डामाने में एक वर्ष में एक बार चढ़ावा चढ़ाया जाता है और संस्कार किए जाते हैं और इन्हें *मंडल सेवा/ मंडल भोग/ डाक्केबली* कहा जाता है। इनमें दो प्रकार के रिवाज किए जाते हैं;

1. तुलुनाडु की कोला परंपरा के समान,
2. नागमंडल परंपरा के समान। ये संस्कार प्रदर्शन से संबंधित होते हैं और इनके साथ संगीत वाद्य यंत्र बजाए जाते हैं। प्रदर्शन, जिसमें देवी की स्तुति की जाती है, के दौरान कलाकार विभिन्न पोशाकें पहनता है जैसे *अर्धनारी* और अन्य। इसके साथ गाए जाने वाले गाने भी अनोखे होते हैं और प्रलेखन करने योग्य हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत:प्रो. सेत्तार	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	हरिवन सेवा
	अंग्रेजीसमतुल्य	The Dvaita-Vaisnava tradition
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	उडुपी, सोसले, बैंगलोर, मंत्रालय, सोंदे और कर्नाटक के कुछ अन्य स्थान
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

कर्नाटक के हरिदास द्वारा कठोर *द्वैत* दर्शन को सरलीकृत किया गया है। हरिभजन *पद्धति*, जो कि माध्वसिद्धान्त के दार्शनिक सिद्धांतों को गाने की एक परंपरा है। यह पीतल के झांझ और भक्तों की तालियों की ताल पर समूह में गाया जाता है। इन रचनाओं के लिए साहित्य भागवत पुराण से लिया गया है। 13वीं शताब्दी में माध्वाचार्य द्वारा शुरू किए गए भक्ति आंदोलन को उनके शिष्यों जयतीर्थ और व्यासराय द्वारा आगे बढ़ाया गया। 16वीं शताब्दी में व्यासराय ने भक्ति आंदोलन को आगे बढ़ाया जिसे *'दास-कूट'* के नाम से जाना जाता है और इसमें संतों का एक बड़ा समूह था। इनमें प्रमुख थे पुरंदरदास और कनकदास, गोपालदास, विजयदास और अन्य जिनके गीतों ने माधव परंपरा की भक्ति संस्कृति को लोकप्रिय बनाया। कर्नाटक के माधव समुदाय की मठवासी परंपरा में यह अद्वितीय हरि भजन परंपरा विशिष्ट है।

हरिवन *सेवा* भजन पद्धति में चरम बिन्दु है। यह पूर्व में अधिकतर मठों में बहुत नियमित रूप से होता था। परंतु आजकल गायन तथा नृत्य की यह संस्कृति बहुत कम देखने को मिलती है। यह संस्कार एकादशी की रात को किया जाता है (माधव संप्रदाय के लोगों द्वारा 15 दिन में एक बार उपवास किया जाता है जिसमें वे दिन में केवल एक चम्मच पवित्र जल पीते हैं)। मठ के स्वामीजी को भी भजन में भाग लेना होता है। यह शाम से अर्द्ध-रात्रि तक चलता है। स्वामीजी ध्यान में चले जाते हैं और अपने सिर पर एक पीतल की बड़ी प्लेट में *तुलसी* के पत्ते रख कर लय-ताल के साथ हिलना और कदम रखना शुरू कर देते हैं। इस परंपरा की शुद्धता को कुछ मठों में सुरक्षित रखा गया है।

यह संस्कार सामान्यत: *चतुर्मास* पूजा के दौरान किया जाता है। इस अवधि के दौरान पुजारी अपने मठ से बाहर किसी पवित्र स्थान पर जाते हैं और एकादशी को वे हरिवन सेवा करते हैं। इसकी अवधि प्रलेखन के लिए लगभग चार माह और रिपोर्ट लिखने के लिए दो माह हो सकती है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	

आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत:प्रो. सेत्तार	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	Surya Darshan
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	पश्चिम त्रिपुरा जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	त्रिपुरी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह जन्म वर्जना को समाप्त करने के लिए आयोजित किया जाने वाला एक धार्मिक समारोह है।

विवरण:

यह संस्कार शहरी क्षेत्र में लड़के के जन्म के 21वें दिन और लड़की के जन्म के 30वें दिन किया जाता है। इस संस्कार में बच्चे को पहली बार नए कपड़े में लपेट कर आँगन में लाया जाता है। एक महिला बच्चे के ऊपर छाता पकड़ती है। बच्चे को ओवाथप देवता के दर्शन कराए जाते हैं। बच्चे को पकड़े हुए महिलाएं दरवाजे पर पहुँचती हैं और इस समय बच्चे की माँ उन महिलाओं के पैर धोती है और उसे बच्चे के साथ चट्टाई पर बैठाती है। उसके बाद ओचई (पुजारी) कीचड़, धान की घास और कपास लिए हुए बच्चे को चलाता है। वह एक अंडा भी लेता है और इन सभी चीजों को बच्चे के सिर से स्पर्श किया जाता है। उसके बाद वह आग पर अपने हाथ गरम करता है और बच्चे के चेहरे को स्पर्श करता है। अंत में ओचई बच्चे को आशीर्वाद देता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	यह शुद्धीकरण और प्रदूषण समाप्त करने के लिए मनाया जाने वाला एक धार्मिक समारोह है।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इसका कोई आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	प्रि-जेर
	अंग्रेजीसमतुल्य	Naming Ceremony
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मेघालय
	जिला/तहसील	खासी और जयंतिया हिल्स
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	खासी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह नवजात बच्चे के कल्याण के लिए मनाया जाने वाला एक प्रकार का धार्मिक समारोह है।

विवरण:

नामकरण संस्कार बच्चे के जन्म के अगले दिन प्रात: काल में किया जाता है। जैसे ही दिन निकलता है पानी में भिगोए गए चावल उड़ेले जाते हैं और नामकरण संस्कार पूरा किए जाने के बाद रिशतेदारों के बीच वितरित किए जाते हैं।

अविश्वसनीय भगवान की पुजा के बाद उपकरणों तथा शस्त्रों की प्रतिकृतियाँ विशेष रूप से लड़कों के लिए धनुष तथा तीरों की और लड़कियों के लिए दास की प्रतिकृतियाँ बनाई जाती हैं। एक कोमल पत्ती, सूखी मछली, हल्दी पाउडर और चावल की शराब वाला एक मिट्टी का बर्तन अंगीठी के पास रखा जाता है। पुजारी वस्तुएँ लेता है (रशम) और चावल की शराब तथा अन्य वस्तुओं पर पानी डालता है और संस्कार देखने के लिए भगवान तथा पूर्वजों का आह्वान करता है। इनके नाम रिशतेदारों द्वारा एक-एक करके सुझाए जाते हैं और पुजारी स्थान निर्धारित करके पानी डालता है। केवल उसी नाम को चुना जाता है जिस पर बीयर की एक बूंद जार के मुंह पर चिपक जाती है और उसके बाद आशीर्वाद लेने के लिए पुन: आह्वान किया जाता है। रशम मिश्रित किए जाते हैं और नए बूम में रखे जाते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	मेघालय की खासी जनजाति (गैर-ईसाई)
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं

संरक्षणकी स्थिति: लगभग विलुप्त हो चुकी है

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	चिरंबा
	अंग्रेजीसमतुल्य	Festival Sanamahi (presiding D.)
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मणिपुर
	जिला/तहसील	इम्फाल घाटी
जातीयसमूह	जाति	मैते
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक प्रकार का धार्मिक त्योहार है।

विवरण:

यह त्योहार लमदा (अप्रैल मध्य) माह में मनाया जाता है। यह त्योहार पूर्व-हिन्दू पीठासीन देवता - 'सनमही' को प्रसन्न करने के लिए होता है। इस शुभ दिन लोग अपने घरों की सफाई करते हैं, मिट्टी के सभी बर्तन हटाते हैं, नए कपड़े पहनते हैं और घर में अकेले खाते हैं। यह त्योहार असमिया नव वर्ष रोंगाली बिहु के साथ आता है और इन दोनों में समानताएँ हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	मैते समुदाय के सभी वंश
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं

संरक्षणकी स्थिति: हाल ही के समय में हिन्दू प्रभाव के कारण इसमें गिरावट देखी गई है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	रिशशरोइनोंव्ङ्ग
	अंग्रेजीसमतुल्य	Puberty ritual
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	दक्षिण त्रिपुरा जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	जमातिया
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह महिलाओं द्वारा किया जाने वाला एक धार्मिक संस्कार है।

विवरण:

यह संस्कार लड़की की प्रथम माहवारी के समय अर्थात लगभग 11-13 वर्ष की आयु में किया जाता है। लड़की अपवित्रीकरण तथा वर्जना की अवधि से गुजरती है जिसके बाद शुद्धीकरण का संस्कार होता है। उसके बाद लड़की को पहली बार छाती को ढकने के लिए एक रिशा (छाती पर पहना जाने वाला कपड़ा) दिया जाता है। यह संस्कार ओचई (पुजारी) द्वारा किया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	इस जीवन-चक्र संस्कार का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं होता।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह किसी समूह की आर्थिक स्थिति को नहीं दर्शाता।

संरक्षणकी स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	लाई हरोबा
	अंग्रेजीसमतुल्य	Rejoicing of the Gods
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मणिपुर
	जिला/तहसील	इम्फाल
जातीयसमूह	जाति	मैते
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह स्थानीय देवताओं को प्रसन्न करने के लिए विशुद्ध रूप से एक धार्मिक समारोह है।

विवरण:

इस संस्कार में 20 दिन तक नृत्य तथा गायन के साथ त्योहार मनाया जाता है। यह कुछ पारंपरिक संस्कार संबंधी पद्धतियों से भी संबंधित है। यह पवित्र विशेषज्ञों (माइका) द्वारा नियंत्रित एक पूर्व-हिन्दू जादुई-धार्मिक पद्धति है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सभी मैते वर्ग समूह
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस संस्कार का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति: इसमें धीरे-धीरे गिरावट देखी जा रही है।

संरक्षणात्मकउपाय:यह कला केवल समुदाय के प्रयासों से जारी है।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	बकोहा काम
	अंग्रेजीसमतुल्य	Ear Piercing ritual
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	उत्तरी त्रिपुरा जिले
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	उचई
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	यह एक बच्चे के कान छिदवाने से संबंधित एक सरल संस्कार है।
विवरण: बकचाकम संस्कार तब किया जाता है जब बच्चा पाँच माह का होता है। बच्चे का कान एक विशेषज्ञ द्वारा संस्कार के साथ छेदा जाता है। लड़की को इस अवसर पर मनकों की एक माला दी जाती है।		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	यह व्यक्तियों द्वारा अपने घर पर किए जाने वाला संस्कार है।	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इसका कोई आर्थिक महत्व नहीं है।	
संरक्षणकी स्थिति: यह समाप्त होती परंपरा है।		
संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास	समन्वयक:	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	रिससरोमानी
	अंग्रेजीसमतुल्य	Puberty ritual
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	दक्षिण त्रिपुरा जिले
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	नोआतिया
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	महिला
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	यह महिलाओं द्वारा किया जाने वाला एक संक्षिप्त संस्कार है।

विवरण:

रिससरोमानी लड़की की पहली माहवारी के बाद किया जाने वाला एक संक्षिप्त यौवन अवस्था संस्कार है। लड़की को कुछ दिन तक बंद स्थान पर रखा जाता है - जिसके बाद संस्कार के अंतर्गत शुद्धीकरण किया जाता है। उसके बाद उसे पहली बार पहनने के लिए एक रिसा (छाती पर पहना जाने वाला कपड़ा) दिया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	यह संस्कार महिलाओं द्वारा किया जाता है जो अधिकतर रिश्तेदार तथा सहेलियाँ होती हैं।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस संस्कार का कोई आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति: यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	शोलापुर
	राज्य	महाराष्ट्र
	जिला/तहसील	पंढरपुर
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गोंडल
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: कालीदास गणेश पुराण		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):वीडियो		
सूचनाका स्रोत:घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी		

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	केर पूजा
	अंग्रेजीसमतुल्य	Worship of God
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	त्रिपुरा
	जिला/तहसील	उत्तर त्रिपुरा जिला
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	उचई
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	यह एक महत्वपूर्ण संस्कार है। यह एक सामुदायिक त्योहार भी है।

विवरण:

उचई (और आस-पास की अन्य जनजातियों) के बीच केर पूजा एक महत्वपूर्ण धार्मिक प्रदर्शन है। इस प्रदर्शन के दौरान बाहरी लोगों को गाँव में प्रवेश की अनुमति नहीं होती। यह बाहरी लोगों के लिए सख्ती से वर्जित होता है - इस नियम को तोड़ने पर प्रतिशोध किया जाता है। यह अचई (पुजारी) द्वारा किया जाता है और समुदाय इसे एक प्रमुख त्योहार के रूप में मनाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	अभी भी अंदर के गांवों में गैर-ईसाई उचई लोगों द्वारा इसका प्रदर्शन किया जाता है।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस संस्कार का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति: उचई समुदाय में यह एक समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:अभी तक कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत:डॉ. ए. के. दास

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	हॉर्न लोक नाट्य
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	उत्तर भारत
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	कुल्लू और चंबा
जातीयसमूह	जाति	स्वाँगी
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	धार्मिक और लौकिक

विवरण:

हॉर्न लोक नाटक हिमाचल प्रदेश के कुल्लू और चंबा जिलों में स्वांगियों द्वारा किया जाता है। नाटक का यह लोक स्वरूप कुल्लू और चंबा के दूरस्थ गांवों में अक्तूबर और जनवरी के माह के बीच होता है। बीस वर्ष पहले तक स्वाँगी नाटक करने के लिए एक गाँव से दूसरे गाँव जाते थे। लोग उन्हें पारिश्रमिक के रूप में पैसे, कपड़े आदि देते थे।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	स्वाँगी
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	खराब

संरक्षणकी स्थिति:

संरक्षणात्मकउपाय:वीडियोग्राफी - फोटोग्राफी और रिकॉर्डिंग

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: समन्वयक: वीरेंद्र बाँगड़ू

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	देव गाथा
	अंग्रेजीसमतुल्य	Songs of God and Goddesses
उत्पत्ति	क्षेत्र	उत्तर भारत
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	कुल्लू, मंडी, शिमला और किम्माउ
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	किम्माउ की जनजातियाँ
	अन्य	देवता के गुर
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	धार्मिक, देवता के साथ।

विवरण:

मार्च और फरवरी के माह में कुल्लू, शिमला, मंडी और किम्माउ जिले के देवता और देवियाँ देवताओं के राजा इन्द्र के दरबार से वापस घर आते थे और उनके घर आने पर देवता का गुर (चेला) देवता का इतिहास सुनाता है।

वह अपनी कहानी में उसका भी उल्लेख करता है जिसे 'भर्थ' कहा जाता है अर्थात उस गाँव में उसकी पहली उपस्थिति और वह कहाँ से आया है। आज-कल भर्थ दिन प्रति दिन समाप्त होते जा रहे हैं। इसलिए इन भर्थों का संरक्षण करने की अत्यधिक आवश्यकता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	देवता का गुर
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	सामान्य

संरक्षणकी स्थिति:वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी और रिकॉर्डिंग, लिखित दस्तावेज़।

संरक्षणात्मकउपाय:

उदाहरण (फोटो आदि): समन्वयक: डॉ. सूरत ठाकुर और वीरेंद्र बाँगड़ू

सूचनाका स्रोत:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	राली विवाह
	अंग्रेजीसमतुल्य	Marriage celebration of god and goddess Siva and Parvati
उत्पत्ति	क्षेत्र	शिवालिक पहाड़ियाँ
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	बिलासपुर, हमीरपुर, कांगड़ा, ऊना
जातीयसमूह	जाति	अनुसूचित जाति के लोगों को छोड़ कर अधिकतर सभी अन्य जातियों के लोग।
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	धार्मिक

विवरण:

राली विवाह का त्योहार पौराणिक कहानियों पर आधारित है। यह माना जाता है कि इस दिन शिव ने अपनी सहचारी पार्वती से विवाह किया था। यह त्योहार हिन्दी माह वैशाख में संक्रांति पर मनाया जाता है। यह त्योहार सभी जातियों तथा वर्गों के लोगों द्वारा अत्यधिक धूमधाम से मनाया जाता है। तथापि इस्लाम में विश्वास रखने वाले तथा हरिजन इसमें सक्रिय रूप से भाग नहीं लेते। शिव और पार्वती के महान विवाह का यह त्योहार सनातनी परंपरा के अनुसार मनाया जाता है। अविवाहित लड़कियां और महिलाएं पूरे दिन उपवास रखती हैं और वे केवल रात में खाना खाती हैं। रिवाज संबंधी और मांगलिक गीत गाए जाते हैं। लोग रात में भजन और कीर्तन के रूप में धार्मिक गीत गाते हैं और अगली सुबह वे पास की नदी तथा तालाब में पूजा करने के लिए जाते हैं। शिव और पार्वती की मिट्टी की मूर्तियाँ पानी में विसर्जित की जाती हैं। स्थानीय मान्यता के अनुसार यदि कोई अविवाहित कन्या उपवास करती है और शिव तथा पार्वती की पूजा तथा अनुष्ठान करती है तो उसे उसकी पसंद का योग्य वर मिलता है। तथापि इस त्योहार का स्वरूप दिन प्रति दिन बदलता जा रहा है और बदलती स्थितियों में बहुत कम महिलाएं और पुरुष इस त्योहार के रिवाज संबंधी प्रदर्शन का विवरण जानते हैं। इसलिए इस त्योहार के मूल तत्व को शीघ्रातिशीघ्र संरक्षित करना अनिवार्य है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को छोड़ कर शिवालिक पहाड़ियों के सभी जातियों के लोग इसमें भाग लेते हैं।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	खराब

संरक्षणकी स्थिति:
संरक्षणात्मकउपाय:इस त्योहार के दौरान गाए तथा प्रदर्शित किए जाने वाले गानों एवं संगीत हेतु आदर्श स्थितियाँ देने के लिए इन्हें ऑडियो तथा वीडियो के रूप में संरक्षित किया जा रहा है ताकि लोग बदलते समय में बदलाव की धारा को देख सकें।
उदाहरण (फोटो आदि): चित्र
सूचनाका स्रोत:राम मोहन शर्मा समन्वयक: वीरेंद्र बाँगड़ू

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/**रिवाज**/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	जलदेव पूजन (काली ईटा)
	अंग्रेजीसमतुल्य	Worship of god of rain
उत्पत्ति	क्षेत्र	बिलासपुर, हमीरपुर, ऊना, निचला सोलन जिला
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	बिलासपुर, हमीरपुर, ऊना, निचला सोलन जिला
जातीयसमूह	जाति	समाज की सभी जातियाँ
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	धार्मिक

विवरण:

एक समाज, जहां बहुत सारे देवताओं की पूजा की जाती है वहाँ प्रत्येक देवता को विशेष रूप से याद किया जाता है और विशेष समय में संस्कार किए जाते हैं। उदाहरण के लिए अग्नि देव (आग के देवता), अन्न देव (अनाज अथवा खाद्य आपूर्ति के देवता), पवन देव (वायु के देवता) आदि की पूजा करने के लिए अलग-अलग समय है। परंपरा की इस श्रेणी में जलदेव इन्द्र आते हैं जिन्हें स्थानीय रूप से खवाजा के नाम से याद किया जाता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि ये जल अथवा वर्षा के देवता हैं। मई और जून के माह के दौरान लोग अत्यधिक गर्मी का सामना करते हैं और उन्हें आसमान में पानी का कोई संकेत अथवा बादल नजर नहीं आते। संस्कार के अंतर्गत प्रदर्शन करके इन देवता की पूजा की जाती है और यह माना जाता है कि लोगों द्वारा की गई भक्ति और संस्कार संबंधी प्रदर्शन से प्रसन्न हो कर वे लोगों का जीवन बचाने के लिए बादल और पानी बनाते हैं और उन्हें पानी का सुख तथा आरामदायक वातावरण देते हैं। इस संस्कार के दौरान आस-पास के गाँव के कुछ युवक और कुछ बुजुर्ग व्यक्ति अपने चेहरे पर कोयला अथवा कोई काली सामग्री मलते हैं और अपने शरीर पर गाय का गोबर मलते हैं। उसके बाद वे अपने हाथ में एक टोकरी रख कर बदले हुए भेष में प्रत्येक घर में जाते हैं और चीनी और कुछ मीठा एकत्रित करते हैं। इस पूरे क्रियाकलाप के दौरान वे समूह में संस्कार से संबंधित गीत गाते रहते हैं। इस गीत का अर्थ है

“ओह प्रिय जलदेव (जल के देवता)!
हम सहायता के लिए किसे याद करें?

कौन हमारी सहायता करेगा
सभी हल चलाने वाले भूखे हैं

बैल प्यासे हैं
कृपया हमें वर्षा के रूप में पानी दो!
कृपया हमें वर्षा के रूप में पानी दो!

इस गीत के बाद एक आदमी को कुंड में डाला जाता है और इस कुंड को उसकी गर्दन तक कीचड़ से भरा जाता है। इसे महान तपस्या (साधना) माना जाता है। और यह माना जाता है कि जल देव अंत में लोगों के आह्वान का उत्तर देते हैं। अंत में एकत्रित चीनी, गुड़, आटे आदि से बड़ी तथा पड़ोसी नदियों तथा जल स्रोतों के किनारे पर मीठी रोटियाँ बनाई जाती हैं। अब जो युवक कुंड के अंदर है उसे बाहर निकाला जाता है और उसे खाने के लिए मीठी रोटी दी जाती है और पीने के लिए पानी दिया जाता है। यह मीठी रोटी लोगों के बीच प्रसाद के रूप में वितरित की जाती है। यह परंपरा समाप्त होती परंपरा है जिसके संरक्षण तथा जारी रखने के लिए तुरंत हस्तक्षेप किए जाने की आवश्यकता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	समाज के युवा तथा परिपक्व लोग इस आयोजन में भाग लेते हैं। विशेष रूप से युवक।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:यह परंपरा एक समाप्त होती परंपरा है जिसके संरक्षण तथा जारी रखने के लिए तुरंत हस्तक्षेप किए जाने की आवश्यकता है।	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि): चित्र	
सूचनाका स्रोत: रामकृष्ण शर्मा	समन्वयक: डॉ. सूरत ठाकुर और वीरेंद्र बॉगड़ू

त्योहार

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/**त्योहार**/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	पुतला बिया
	अंग्रेजीसमतुल्य	Doll's marriage
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	कामरूप
जातीयसमूह	जाति	असमिया हिन्दू जातियाँ
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	महिला
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह लोगों के कल्याण के लिए किया जाने वाला एक सामाजिक रिवाज है।

विवरण:

यह उत्सव महिलाओं द्वारा बोहाग (अप्रैल-मई) के 6ठे दिन शाम को मनाया जाता है। गाँव की सभी महिलाएं एक चयनित घर में एकत्रित होती हैं। वे बाजार से काला और लाल धागा खरीदती हैं। एक प्रकार के फूस से गुड्डियाँ बनाई जाती हैं, जिन्हें रंगीन धागा चारों ओर लपेट कर ढका जाता है। दूल्हा बनाए गए गुड्डे के चारों ओर लाल धागे लपेटे जाते हैं और दुल्हन बनाई गई गुड्डियों के चारों ओर पीले धागे लपेटे जाते हैं। विवाह से संबंधित अन्य रिवाज वही होते हैं जो हिन्दू असमिया समाज में होते हैं। उत्सव पूरा होने के बाद गुड्डों को केले के एक बेड़े पर रखा जाता है और नदी की धारा पर छोड़ दिया जाता है। यह बेड़ा छोटा होता है और केले का बना होता है और इसे सिंदूर से सजाया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	असमिया हिन्दू जातियाँ।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह विवाह उत्सव भविष्य की पीढ़ी के कल्याण के लिए मनाया जाता है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/**त्योहार**/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	कति बिहु अथवा कंगली बिहु
	अंग्रेजीसमतुल्य	Festival of Autumn
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	कचिर, कार्बी और हिन्दू जातियों और गोलपारा को छोड़ कर सभी जिले।
जातीयसमूह	जाति	कुछ मैदानी जनजातियाँ
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह एक धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष प्रदर्शन तथा उत्सव है।

विवरण: कति बिहु का प्रदर्शन कार्तिक माह (सितंबर-अक्तूबर) के पहले दिन असमिया हिन्दू जातियों द्वारा किया जाता है। इस त्योहार में प्रत्येक घर - विशेष रूप से युवक और युवतियाँ - प्रत्येक घर के आँगन में तुलसी का पौधा लगाते हैं और मिट्टी की एक विशेष वेदी बनाई जाती है। शाम को तुलसी पर नारियल और चीनी का प्रसाद चढ़ाया जाता है, और युवक तथा युवतियाँ तुलसी के सामने बैठ कर लोक-गीत (भजन) गाते हैं। इस बिहु उत्सव में खाना, नृत्य, अभिवादन बहुत कम किया जाता है चूंकि यह कम वर्षा वाला मौसम होता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	असमिया हिन्दू जातियाँ और कुछ मैदानी जनजातियाँ।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	किसानों का उत्सव। यह उत्सव फसल कटाई से पहले मनाया जाता है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/**त्योहार**/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	गरु बिहु
	अंग्रेजीसमतुल्य	Festival of cow
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	ऊपरी असम के सभी जिले।
जातीयसमूह	जाति	सभी हिन्दू जातियाँ
	जनजाति	कुछ मैदानी जनजातियाँ
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला/दोनों
	समुदाय	महिला
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह वार्षिक कृषि चक्र से संबंधित एक उत्सव है।

विवरण:

असमिया कैलेंडर वर्ष का अंतिम दिन, जिसे संक्रांति कहा जाता है, अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार 13 अप्रैल के आस-पास आता है। इस दिन असम के लोग बिहु त्योहार का पहला दिन मनाते हैं। इस अवसर पर प्रात: काल में लोग अपने पशुओं को संस्कार के अंतर्गत स्नान करवाने के लिए समीप की नदी अथवा जल निकाय में ले जाते हैं। इस स्नान के बाद छोटे बच्चे काटी हुई सब्जियाँ जैसे लौकी, बैंगन आदि पशु पर फेंकते हैं और निम्नलिखित पंक्तियाँ बोलते हैं - "लाओ खा बेगना खा, बसरे बसरे बरही जा, मर खरू, बपिर खरू तई नबी बर गरु।" इसके बाद पशुओं को मैदान में चरने दिया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	गांवों में असमिया हिन्दू जाति समूह।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	किसान

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:असम के विभिन्न जिलों में बनाई गई बिहु समितियों द्वारा इस परंपरा को संरक्षित करने के लिए प्रयास किया जा रहा है।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/**त्योहार**/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	मिमकुट
	अंग्रेजीसमतुल्य	Festival of the dead
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले।
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह एक आंशिक रूप से धार्मिक त्योहार है जिसमें मृत पूर्वजों को खाने का सामान चढ़ाया जाता है।

विवरण:

यह त्योहार नई फसल की कटाई के समय मनाया जाता है। फसलों जैसे मक्का, खीरा, तरबूज आदि का एक हिस्सा मृत पूर्वजों के लिए खेत में छोड़ दिया जाता है। तीन दिन के लिए चढ़ावा चढ़ाने का संस्कार गाने के साथ चलता है। इस समय पूर्वजों की आत्मा आती है और चढ़ावा ग्रहण करती है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सभी मिज़ो वंश समूह।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस परंपरा का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/**त्योहार**/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	चपचार कुट
	अंग्रेजीसमतुल्य	Agriculture festival
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले।
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह एक पूर्णतया धर्मनिरपेक्ष आयोजन है।

विवरण:

यह त्योहार कृषि चक्र शुरू होने से संबंधित है - इसे सबसे अधिक आनंददायी त्योहार माना जाता है। झूम खेती (शिफ्टिंग खेती) के लिए जंगल को साफ करने के कठोर परिश्रम के बाद गाँव के लोग नाच तथा गाने का त्योहार मनाते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	मिज़ो के सभी वंश समूह।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस परंपरा का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/**त्योहार**/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	क्लूखमी
	अंग्रेजीसमतुल्य	Festival of goddess of rice
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	मेघालय
	जिला/तहसील	भोई क्षेत्र
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	खासी (भोई)
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	महिला
	समुदाय	महिला
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह अच्छी फसल के लिए मनाया जाने वाला एक धार्मिक त्योहार है।

विवरण:

यह त्योहार बुवाई के मौसम से पहले मार्च के माह में और फसल की कटाई के बाद मनाया जाता है। इस त्योहार में यह संस्कार करके चावल तथा कृषि की देवी को खुश किया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	भोई क्षेत्र का खासी वंश।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस त्योहार का लोगों के आर्थिक अर्जन में कुछ महत्व है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/**त्योहार**/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	का रोंगखिली
	अंग्रेजीसमतुल्य	Tiger Festival
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	मेघालय
	जिला/तहसील	जयंतिया हिल्स
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	युद्ध खासी (जयंतिया)
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह एक धार्मिक त्योहार है जो तब मनाया जाता है जब देवता का आह्वान करने के लिए एक बाघ को मारा जाता है।

विवरण:

यह त्योहार जनवरी-फरवरी के माह में मनाया जाता है। इस त्योहार में स्थानीय देवता की पूजा की जाती है और उन्हें खाना तथा पेय चढ़ा कर खुश किया जाता है। देवता का आह्वान पुजारी द्वारा किया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	मेघालय की युद्ध खासी अथवा जयंतिया जनजाति।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इस परंपरा का कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/**त्योहार**/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	तीर
	अंग्रेजीसमतुल्य	Archery
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	मेघालय
	जिला/तहसील	खासी और जयंतिया हिल्स
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	खासी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह खासी लोगों का एक प्रकार का खेल होता है।

विवरण:

केले के पेड़ के तने को एक आकार में काट कर निशानेबाजी के मैदान में लक्ष्य के रूप में एक कोने में रखा जाता है। तीरंदाजों का एक समूह लक्ष्य पर तीर चलाता है। जिस तीरंदाज के सबसे अधिक तीर लक्ष्य पर लगते हैं उसे विजेता माना जाता है। यह खेल हाल ही के समय में जुए में बदल गया है। प्रत्येक तीरंदाज को दस तीर चलाने की अनुमति होती है। लक्ष्य पर लगने वाले तीरों की कुल संख्या को उस दिन तीरंदाजी से पहले लगने वाले जुए में शुभ संख्या माना जाता है। आज-कल तीरंदाजों को प्रभावित करके तथा रिश्वत दे कर सट्टेबाज द्वारा बॉल फिक्सिंग की जाती है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	खासी हिल्स जिले के कई समूह इस खेल को खेलते हैं
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	शिलोंग और अन्य मैदानी क्षेत्रों में यह एक सट्टे का खेल बन गया है और इसलिए इस खेल का आर्थिक महत्व है।

संरक्षणकी स्थिति:समाज पर प्रतिकूल प्रभाव के कारण धीरे-धीरे यह खेल समाप्त होता जा रहा है।

संरक्षणात्मकउपाय:स्थानीय सरकार लोगों को इस खेल में सट्टा लगाने से हतोत्साहित करती है।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/**त्योहार**/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	पावल कट
	अंग्रेजीसमतुल्य	Harvest Festival
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर एशिया
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	यह बच्चों का एक धर्म से असंबंधित त्योहार है।

विवरण:

यह वास्तव में फसल की कटाई के समय मनाया जाने वाला फसल कटाई त्योहार है और विशेष रूप से बच्चों के लिए होता है। इस त्योहार में खाना, पीना किया जाता है और आनंद मनाया जाता है। इस उत्सव के साथ पूरा गाँव जीवंत और खुश हो जाता है। इसमें बताया जाता है कि पति और पत्नी के बीच कोई झगड़ा नहीं होना चाहिए। इसमें सभी लोग भाग लेते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	मिज़ो के सभी वंश समूह।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इसका अप्रत्यक्ष आर्थिक महत्व है।
संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।	
संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास	समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/**त्योहार**/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	धजा
	अंग्रेजीसमतुल्य	Worship of king Bali
उत्पत्ति	क्षेत्र	शिवालिक पहाड़ियाँ
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	बिलासपुर, हमीरपुर
जातीयसमूह	जाति	अनुसूचित जातियाँ
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	धार्मिक, जादुई

विवरण:

धजा समाज के लोगों के एक विशिष्ट समुदाय से संबंधित एक धार्मिक त्योहार है। इस त्योहार के प्रमुख देवता राजा बाली हैं जिनका वर्णन कुरान में धरती के नीचे की पौराणिक दुनिया (पाताल) के राजा के रूप में किया गया है। ये इस जिले के हरिजन समुदाय के प्रमुख देवता हैं। बुरे समय के दौरान इस देवता को प्रसन्न करने के लिए लोग इनकी पूजा करते हैं। इसे पूरी रात जागरण के रूप में मनाया जाता है। इसे संस्कृत अथवा हिन्दी कैलेंडर की किसी गणना के बिना किसी भी दिन अथवा किसी भी तिथि को मनाया जा सकता है। यह उत्सव लोक मनोरंजन से भी संबंधित है। राजा बाली के वीरतापूर्ण कार्यों को गाथागीत के रूप में गाया जाता है और इसका बखान किया जाता है। इस संस्कार के दौरान काला जादू और अन्य संबंधित चीजों तथा बीमारियों का इलाज किया जाता है। यह रचनात्मक कला भी समाज में तेजी से समाप्त हो रही है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	केवल अनुसूचित जाति के लोग राजा बाली के लिए यह रिवाज की प्रार्थना करते हैं।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।	
संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं	
उदाहरण (फोटो आदि):	

चित्र	
सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास	समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/**त्योहार**/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	ढोलारू मास
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	शिवालिक पहाड़ियाँ
	राज्य	हिमाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	बिलासपुर, हमीरपुर, ऊना, सोलन
जातीयसमूह	जाति	अनुसूचित जाति (सनही)
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	दोनों
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	धार्मिक

विवरण:

शिव विवाह त्योहार के अतिरिक्त लोग संक्रांति के चौमासे से मशांत तक ढोलारू मास मनाते हैं। अनुसूचित जाति के लोग प्रत्येक घर में जाते हैं और शहनाई बजाते हैं। इस समुदाय को शहनाई जाट कहते हैं। इसमें मुख्य रूप से बच्चे और बूढ़ी औरतें कुछ संगीत वाद्य यंत्र टाँगते हैं और संगीत वाद्य यंत्र बजा कर और ड्रम बजा कर और गाने गा कर इसका आयोजन करते हैं। ये लोगों के कल्याण के लिए शिव को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं। इसके बदले में लोग उन्हें अनाज, खाने-पीने की चीजें, नकद आदि देते हैं। यह अब अपनी मूल विशेषता खोता जा रहा है और इसे तुरंत संरक्षित किए जाने की आवश्यकता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	केवल अनुसूचित जाति (सनही) के लोग इस त्योहार में भाग लेते हैं।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	खराब
संरक्षणकी स्थिति:यह परंपरा अभी भी जिंदा है।	
संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं	
उदाहरण (फोटो आदि): चित्र	

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास	समन्वयक:

अन्य

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य **अन्य**	
परंपराका नाम	स्थानीय	मुन/बोंगथिंग
	अंग्रेजीसमतुल्य	Shaman
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	सिक्किम
	जिला/तहसील	उत्तरी, पूर्वी, दक्षिण तथा पश्चिम जिले
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	लेपचे
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष/महिला (पुरुष केवल बोंगथिंग हो सकते हैं)
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक अंश कालिक व्यवसाय है। इसके साथ कुछ आर्थिक महत्व जोड़ा जा सकता है। यह एक पैतृक व्यवसाय है।

विवरण:

मुन विशेषज्ञ होते हैं जो मनुष्य और भगवान के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं। ये शक्तिशाली जादूगर भी होते हैं। ये भगवान के परोपकारी व्यक्तियों के रूप में होते हैं और मल्वोलिनी मुन के रूप में भी होते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह विशेष अवसरों पर किया जाता है।

संरक्षणकी स्थिति:यह परंपरा धीरे-धीरे समाप्त हो रही है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्यप्रदर्शन**	
परंपराका नाम	स्थानीय	मुख
	अंग्रेजीसमतुल्य	Mask
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	असम
	जिला/तहसील	नौगांव/जोरहाट/लखीमपुर
जातीयसमूह	जाति	असमिया हिन्दू जाति
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	इसे वैष्णव सत्व (मठ) में भावना प्रदर्शन में प्रयोग किया जाता है।

विवरण:

देवताओं और देवियों, विदूषकों, हनुमान, रावण और अन्य महाकाव्यों के पात्रों आदि का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न प्रकार के मुखौटे लकड़ी, कुट्टी, बांस के खांचे में कपड़े से कलात्मक तरीके से बनाए जाते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह कलाकार का एक अंश कालिक व्यवसाय है।
संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत:	समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपराका नाम	स्थानीय	औटोन्थिबा
	अंग्रेजीसमतुल्य	Merit Feast
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	मणिपुर
	जिला/तहसील	माओ
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	कोइराओ
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह गाँव में आयोजित किए जाने वाला एक धर्म से असंबंधित कार्यक्रम होता है। एक समृद्ध व्यक्ति ग्रामीणों को उसे प्रोत्साहित करने के लिए समृद्धि की दावत देता है।

विवरण:

यह गाँव में होने वाला एक धर्म से असंबंधित आयोजन है जो तब दिया जाता है जब कोई व्यक्ति जीवन के खतरों का सामना करने हेतु सक्षम रहने और एक सम्मानीय व्यक्ति बनने के लिए मिथुन की बलि दे कर पूरे गाँव को भोज देने के लिए पर्याप्त समृद्धि पा लेता है। यह एक सामाजिक परंपरा है जिसमें कोई धार्मिक घटक सम्मिलित नहीं है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	काइराओ जनजाति के सभी वंश समूह।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह गाँव में व्यक्तियों की आर्थिक उन्नति से संबंधित है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपराका नाम	स्थानीय	नोक्फांते
	अंग्रेजीसमतुल्य	Bachelor's Dormitory
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर
	राज्य	मेघालय
	जिला/तहसील	गारो हिल्स
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	गारो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह गाँव के युवकों की एक धर्म से असंबंधित संस्था है।

विवरण:

नोक्फांते एक विशेष प्रकार का घर होता है जिसमें 5 वर्ष से 16 वर्ष की आयु के बच्चों को रहने की अनुमति होती है। वे विवाह के बाद नोक्फांते करते हैं।

इस संस्था में वे अपने लोक साहित्य और लोक प्रथाओं के बारे में जानते हैं। वे गाँव के लोगों को झूम खेती करने में सहायता करते हैं। ये युवक गाँव के बुजुर्गों की देखभाल करते हैं। नोक्फांते एक सामुदायिक केंद्र के रूप में भी काम करता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	गारो जनजाति के सभी वंश समूह।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	गारो समुदाय में नोक्फांते का अत्यधिक आर्थिक महत्व है।

संरक्षणकी स्थिति:यह लगभग विलुप्त हो चुकी परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ नहीं

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपराका नाम	स्थानीय	अबंग
	अंग्रेजीसमतुल्य	Creation Myth
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	अरुणाचल प्रदेश
	जिला/तहसील	सियांग
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	आदि
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह एक लोक कथा है।

विवरण:

अबंग विशेष अवसर पर असंबद्ध काव्य में उत्पत्ति के विभिन्न आदि मिथकों का वर्णन करने वाले वक्ताओं - मिरि द्वारा सुनाई जाने वाली लोक कथाएँ होती हैं। इसका प्रदर्शन सामान्यत: नोक्फांते (अविवाहित युवकों के छात्रावास) में किया जाता है। ऐसे कुछ व्याख्यान कई सप्ताह तक चलते हैं। इसमें पृथ्वी, सूर्य, चंद्रमा, मनुष्य, मिथुन आदि की उत्पत्ति के बारे में बताया जाता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	इसका प्रदर्शन आदि समूहों द्वारा किया जाता है।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	इसका कोई प्रत्यक्ष आर्थिक महत्व नहीं है।

संरक्षणकी स्थिति:यह समाप्त होती परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं। पचास के दशक में डॉ. बी. एस. सुहा और अन्य द्वारा इसका प्रलेखन किया गया था।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपराका नाम	स्थानीय	जौलबुक
	अंग्रेजीसमतुल्य	Bachelor's Dormitory
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मिजोरम
	जिला/तहसील	सभी जिले
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	मिज़ो
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह अविवाहित युवकों के लिए एक धर्म से असंबंधित संस्था है।

विवरण:

एक जौलबुक प्रत्येक गाँव में विशेष रूप से बनाया गया घर होता है। यह सामान्य रूप से युवकों के लिए एक छात्रावास होता है। यह कृषि प्रणालियाँ, घर-निर्माण, मिथक तथा किवंदतियाँ, बांध तथा गाने आदि सीखने के लिए एक शैक्षणिक केंद्र होता है। यह एक सामुदायिक केंद्र का काम भी करता है जिसमें बुजुर्ग व्यक्ति भाग लेते हैं और अपने अनुभवों के बारे में बताते हैं। वास्तविक जीवन के ये विभिन्न अनुभव युवकों को उनके जीवन को आकार देने में मार्गदर्शन करते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	सभी मिज़ो वंश समूह।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	जहां तक कृषि तथा अन्य क्रियाकलापों का संबंध है इसका समुदाय के आर्थिक कार्यों पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

संरक्षणकी स्थिति:यह लगभग विलुप्त हो चुकी परंपरा है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपराका नाम	स्थानीय	आई अथवा याई
	अंग्रेजीसमतुल्य	Traditional Medicine
उत्पत्ति	क्षेत्र	पूर्वोत्तर भारत
	राज्य	मणिपुर
	जिला/तहसील	मोइरंग
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	चोटे (पुरुम कुकी)
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	पुरुष
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई **लौकिक** त्योहार	यह जातीय दवा की एक धर्म से असंबंधित प्रथा है।

विवरण:

पारंपरिक रूप से चोटे लोगों के पास विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए 12 देशी दवाइयाँ थी जिन्हें आई अथवा याई कहा जाता था। ये दवाइयाँ विशेषज्ञों को ज्ञात स्थानीय औषधीय जड़ी बूटियों और झाड़ियों से तैयार की जाती थी।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	केवल चोटे वंश समूह के विशेषज्ञ।
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	यह विशेषज्ञों का एक अंश कालिक कार्य था।

संरक्षणकी स्थिति:आधुनिक दवाइयाँ प्रचलन में आने के कारण इन देशी दवाइयों का उपयोग बहुत कम किया जाता है।

संरक्षणात्मकउपाय:कुछ खास नहीं।

उदाहरण (फोटो आदि):

सूचनाका स्रोत: डॉ. ए. के. दास समन्वयक:

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	बुडुगा जंगम
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: ग्रामीण मंच नाटक - भिनजनाय युद्ध		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि): वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	बुडुगा जंगम
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण: ग्रामीण मंच नाटक - भिनजनाय युद्ध		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि): वीडियो		
सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला	समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	लाहोर
	राज्य	
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	लहला झट्टी
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	पुरुष
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	**धार्मिक** जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

ये स्वयं को जनजाति समझते हैं क्योंकि ये खराब मौसम की स्थितियों के कारण 6 माह तक दुनिया से कट जाते हैं। ये अपनी भाषा संबंधी परंपराओं तथा पवित्र परंपराओं के बारे में स्पष्टता से बात करते हैं। ये 2 परंपराओं के बारे में बात करते हैं और बताते हैं कि कैसे प्रत्येक 10 किमी. में यहाँ भाषा, देवता, जीवन-शैली, खाना आदि बदलते हैं। ये अपनी मान्यताओं के बारे में भी बात करते हैं जहां वे वर्षा के लिए पूजा करते हैं।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति: लिखित में और मौखिक में

संरक्षणात्मकउपाय:सहायता की आवश्यकता है

उदाहरण (फोटो आदि): वीडियो

सूचनाका स्रोत: घुमंतू और आदिवासी कार्यशाला समन्वयक: डॉ. गौतम चैटर्जी

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपराका नाम	स्थानीय	बेंदेगुंबली
	अंग्रेजीसमतुल्य	Community Complex
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक और आंध्र प्रदेश
	जिला/तहसील	गुलबर्ग और हैदराबाद
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

गुलबर्ग और हैदराबाद के सीमावर्ती क्षेत्र में ये अनोखे सामुदायिक आवास पाए जाते हैं। ये बहुत दुर्लभ समझे जाते हैं और वर्तमान में लगभग पंद्रह गांवों में पाए जाते हैं। इस परियोजना में इनसे संबंधित जीवनशैली और घरेलू आवासों तथा नागरिक वास्तुकला पर ज़ोर दिया जाएगा। यह विघटन के चरण में है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत: प्रो. सेत्तार	

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपराका नाम	स्थानीय	लोकप्रिय पारंपरिक खेल
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

कुछ लोकप्रिय पारंपरिक खेल थे: *पगाडे*, शतरंज, चेकर, *चन्नेमाने*, खेल चार्ट, *गंजीफ़ा*, और धातु की बॉल।

पगाडे (पासों का खेल) की पहचान शकुनी से है, जो कौरवों के मामा थे, और इस खेल में पारंगत थे। इसका बोर्ड सूती कपड़े अथवा सिल्क के कपड़े का बना होता है और इसकी लाइन हस्तशिल्प का एक बेजोड़ उदाहरण होती है। इसके खिलौने लकड़ी, हाथी दाँत अथवा चेन्नापट्टना लाख के बने होते हैं। पासे के दो भाग हमेशा हाथी दाँत के बने होते हैं। दक्षिण भारत के कई भागों में कर्नाटक के *चेन्नेमाने* और *अट्टागुलीमाने* और तमिलनाडु का *पल्लांगुलि* लोकप्रिय हैं। खिलाड़ी बोर्ड के दोनों ओर आमने-सामने बैठते हैं, मनकों को समान मात्रा में बांटते हैं और खेल शुरू करते हैं। बोर्ड के खानों में चार, पाँच, सात अथवा बारह मनके डाले जाने होते हैं और मनके लेने वाला खिलाड़ी प्रत्येक खाने में एक मनका डालता है। जो खिलाड़ी सबसे अधिक मनके एकत्रित करता है वह विजेता होता है। तटीय क्षेत्रों में यह खेल केवल बरसात के मौसम में खेला जाता है।

खेल चार्ट पासे और एक कलात्मक ढंग से बनाए गए सिक्के से खेला जाता है। तीन से अधिक सदस्य इसे खेल सकते हैं। पूरा चार्ट शिवलिंग के रूप में रंगा जाता है और खेल विभिन्न चालों से आगे बढ़ता है। प्रत्येक चाल एक भिन्न जन्म को दर्शाती है जैसे पेड़, पक्षी, बिच्छू, पशु तथा मनुष्य। पासे में दिखाई देने वाली संख्या पर निर्भर करते हुए खिलाड़ी निचले स्तर पर नीचे आ सकता है, अथवा उच्च स्तर पर ऊपर जा सकता है। जब वह पाँचवी पंक्ति को पार कर लेता है तब वह शिव के निवास स्थान शिव सयुज्य के समीप पहुँच जाता है। पंक्ति में प्रत्येक घर की सही तथा गलत की एक व्याख्या होती है। यह खेल शिष्यों के बीच आचरण के एक खेल जैसा होता है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	

संरक्षणकी स्थिति:
संरक्षणात्मकउपाय:
उदाहरण (फोटो आदि):
सूचनाका स्रोत: प्रो. सेत्तार

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/**अन्य**	
परंपराका नाम	स्थानीय	दक्षिण कन्नड़ जिले में लोक खेल
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	कर्नाटक
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	

विवरण:

दक्षिण कन्नड़ जिले में बहुत से पारंपरिक लोक खेल हैं, विशेष रूप से ग्रामीण बच्चों द्वारा खेले जाने वाले। इन लोक खेलों का एक विवरणात्मक अध्ययन पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण तथा अंतरण की प्रक्रिया में सहायक होगा। लोक खेल खेले जाने वाले व्यक्ति के अनुसार अलग-अलग होते हैं अर्थात पुरुषों द्वारा खेले जाने वाले जैसे कंबला (भैंस दौड़), चेंदू (फुटबॉल); महिलाओं द्वारा खेले जाने वाले खेल जैसे चेन्नेमाने (चेन्ने बोर्ड खेल), बच्चों द्वारा खले जाने वाले खेल जैसे हुली-दाना (बाघ और गाय), कागे-गिली (कौआ और तोता), जुबूली (बिल्ले खेल), लगोरी, बलेयता (चूड़ियों का खेल)। इनमें प्रतिस्पर्धा, गानों, व्यवहार पैटर्न, शारीरिक कसरतों तथा संगठनात्मक उपायों के घटकों का आकलन किया जा सकता है। ये घटक ही खेल को इसका स्वरूप देते हैं।

वर्तमान परियोजना का उद्देश्य दक्षिण कन्नड़ जिले के महत्वपूर्ण लोक खेलों का प्रलेखन करना और इनका अध्ययन करना है चूंकि औपचारिक शिक्षा तथा आधुनिकीकरण की आधुनिक प्रणाली के कारण इनका अस्तित्व खतरे में है।

परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण	
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)	
संरक्षणकी स्थिति:	
संरक्षणात्मकउपाय:	
उदाहरण (फोटो आदि):	
सूचनाका स्रोत: प्रो. सेत्तार	

8. विशेषज्ञ

1. प्रो. बी. के. रॉय बर्मन
   सलाहकार,
   इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

2. प्रो. ए. के. दास
   सदस्य-सचिव
   लाल बहादुर नेशनल मेमोरियल ट्रस्ट
   नई दिल्ली

3. डॉ. तोशखानी

4. श्री आशीष के. चक्रवर्ती
   क्यूरेटर/ कार्यकारी सचिव
   गुरुसदाय संग्रहालय
   कोलकाता

5. डॉ. मालविका कपूर
   अतिथि प्राध्यापक
   राष्ट्रीय उच्च शिक्षा संस्थान
   आईआईएससी कैंपस, बैंगलोर- 560012

6. डॉ. चिन्नपा गौड़ा
   लोक साहित्य विभाग, मंगला गोनोत्री,
   कोनाजे
   मैंगलोर विश्वविद्यालय, मैंगलोर

7. डॉ. भक्तवत्सल रेड्डी,
   डीन, जनजातीय तथा लोक कला विभाग,
   तेलुगू विश्वविद्यालय, वारंगल कैंपस,
   हनुमा कोंड, आंध्र प्रदेश - 673635
   मोबाइल: 9440170703

8. प्रो. वी. जी. अंदानी
   प्रधानाचार्य, द आइडियल फाइन आर्ट सोसायटी,
   एम. एम. के. कॉलेज ऑफ विजुअल आर्ट्स,
   कॉर्पोरेशन गार्डन, गुलबर्ग - 585105

9. डॉ. चिगीचरला कृष्णा रेड्डी,
प्रमुख, लोक कला विभाग,
तेलुगू विश्वविद्यालय, पब्लिक गार्डन्स,
हैदराबाद - 01
फोन: 9391029195

10. प्रो. पोंजंदा एस. अप्पइय्या,
#315, फर्स्ट 'ई' क्रॉस, तृतीय ब्लॉक, एचआरबीआर
लेआउट, ज्योति विद्यालय के पास, सेंट थॉमस
टाउन, बैंगलोर - 560084, फोन: 25479451

11. डॉ. राजेन्द्रन सी.
प्राध्यापक, संस्कृत, कालीकट विश्वविद्यालय,
कालीकट विश्वविद्यालय, पोस्ट मालापुरम जिला
केरल - 673635, फोन: 0494-2401144/2400272

12. प्रो. हेरांजे कृष्णा भट,
निदेशक, राष्ट्रकवि गोविंद पाई
समाशोधन केंद्र, एमजीएम कॉलेज,
उडुपी - 576102, फोन: 0820-2521159 (कार्यालय)

13. श्री जयराजन वी.
अध्यक्ष, फोकलैंड अंतर्राष्ट्रीय लोक साहित्य
एवं संस्कृति केंद्र, एलाम्बल्ही
कासरगोड, केरल - 671311

14. डॉ. कनक दुर्गा
व्याख्याता, लोक संस्कृति केंद्र,
प्लॉट नंबर 30/बी, संजीवाइयाह को-ओपरेटिव
हाउसिंग कॉलोनी, सौजन्य कॉलोनी
के पास, बोवेनपल्ली
सिकंदराबाद - 500011, फोन: 04027753194

15. डॉ. एच. सी. बोरलिंगय्या
कन्नड़ विश्वविद्यालय
विद्यारण्य, होसपेट तालुका,
बेल्लारी जिला, हम्पी - 583276

16. डॉ. राघवन पैयानाद,
लोक साहित्य विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय,
मालापुरम जिला, केरल - 673635
मोबाइल: 9847403115

17. सुश्री वी. आर. देविका, चेन्नई

18. डॉ. एस. के. अरुणी
सहायक निदेशक
एसआरसी आईसीएचआर, बैंगलोर

9. डेटा एकत्रण प्रारूप

डेटा शीट

सामान्यस्वरूप:	कला/शिल्प/संगीत/नृत्य/रिवाज/त्योहार/अन्य	
परंपराका नाम	स्थानीय	
	अंग्रेजीसमतुल्य	
उत्पत्ति	क्षेत्र	
	राज्य	
	जिला/तहसील	
जातीयसमूह	जाति	
	जनजाति	
	अन्य	
भागीदारी	व्यक्तिगत	
	समुदाय	
सामाजिक-सांस्कृतिकमहत्व	धार्मिक जादुई लौकिक त्योहार	
विवरण:		
परंपरासे संबंधित व्यक्ति/समूह का विवरण		
आर्थिकस्थिति (समूह/व्यक्ति)		
संरक्षणकी स्थिति:		
संरक्षणात्मकउपाय:		
उदाहरण (फोटो आदि):		
सूचनाका स्रोत:		